Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

Vol II.

EDITED

BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krisna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XIIto XXVIII.
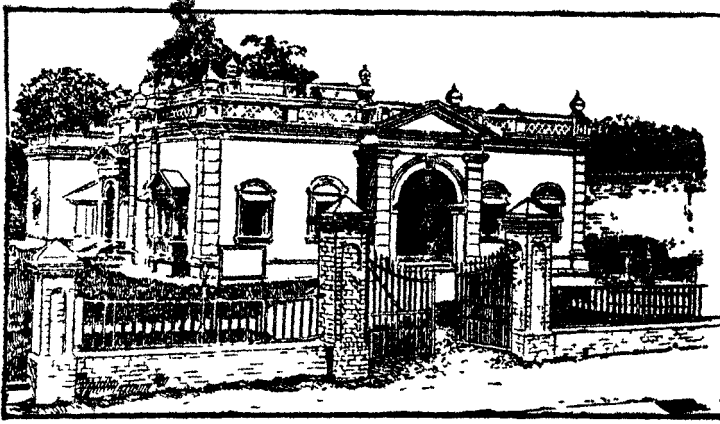
महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

दूसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व १२ से २८ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND MEDICAL HALL
PRESS AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA,
BENARES.

1906.

मूल्य ४)] [*Price Rs. 4.*

सूचीपत्र ।

(१२) भोलाराय समय ।

(पृष्ठ ४४७ से ५१७ तक)

(१३) सलष युद्ध समय।

(पृष्ठ ५१९ से ५४२ तक)

(१४) इंच्छिनी समय।

(पृष्ठ ५४३ से ५६६ तक)

(१५) मुगलयुद्ध प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ५६७ से ५७२ तक)

(१६) पुंडीर दाहिमी विवाह प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ५७३ से ५७६ तक)

(१७) भूमिसुपन प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ५७७ से ५८८ तक)

(१८) दिल्लीदान प्रस्ताव।

(पृष्ठ ५८९ से ६०१ तक)

(१९) माधोभाट कथा ।

(पृष्ठ ६०३ से ६३० तक)

(२१) पृथा व्याह वर्णन।

(पृष्ठ ६४३ से ६७० तक)

(२२) होली कथा प्रस्ताव

(पृष्ठ ६७१ से ६७३ तक)

३ ढुंढा ने काशी में आकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन ढुंढिका भी भाई के पास गई, ढंढा भस्म हो गया तौ भी ढुंढिका बैठी रही, उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते बीता। ६७१

४ तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुंढिका से कहा कि मैं प्रसन्न हूं वर मांग। ६७२

५ ढुंढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकूं। ,,

६ गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिका की बात रहै और वह नर भक्षण न कर सकै। ,,

७ शिव जी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली बकैं, गदहे पर चढ़ैं. तरह तरह के स्वांग बनावैं उनको छोड़ और जिसको पावै वह भक्षण करै। ,,

८ ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते, पागल से बने, गाते बजाते आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया। ६७३

९ इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति को टाला, चैत का महीना आया घर घर आनन्द हो गया। ,,

१० जाड़ा बीतने और बसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुंढिका की स्तुति करते हैं। ,,

(२३) दीपमालिका कथा।

(पृष्ठ ६७५ से ६७९ तक)

१ पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो। ६७५

२ सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे। ,,

३ उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग लगे थे वहां एक वैदिक ब्राह्मण रहता था उसकी स्त्री छल रहित थी। ६७५

४ स्त्री ने पति से कहा कि धन हीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो। ,,

५ सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञानध्यान की ओर चित्त दिया। ६७६

६ सत्यश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है। ,,

७ तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए। ,,

८ सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है। ,,

९ ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है। ६७७

१० ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग। ,,

११ ब्राह्मण ने दीपदान वर मांगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जले। ,,

१२ राजा ने कहा कि तुमने क्या मांगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गांव मांगना था, अस्तु अब घर जाओ। ,,

१३ ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल सवा सेर रुई मंगाई। ,,

(२४) धन कथा।

(पृष्ठ ६८० से ७५८ तक)

प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे। ७३५

१६८ पृथ्वीराज शिकार खेलने खट्टू बन में चले वहां एक पत्थर का शिला लेख कैमास को दिखलाई दिया। ”

१६६ उस शिला लेख को देख कर सब प्रसन्न हुए और आशा बँधी। ७३६

१७० कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा। ”

१७१ उसे पढ़ कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया। ”

१७२ दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे। ”

१७३ चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जग जोति कह गए हैं किए पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर कर के नागौर बन के धन को पावेंगे। ७३७

१७४ राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूं। ”

१७५ चन्द को बुलाया, उस ने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है। ”

१७६ रात को सब सामन्तों को रख कर रखवाली करो। ”

१७७ कुछ सर्दार साथ रहे कुछ सोए। सवेरे वह स्थान खोदा गया वहां एक पुरुष की मूर्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उन को कैमास ने पढ़ा। ”

१७८ उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देख कर तुम न हँसो तो पाषाण को देखो? । ७३८

१७६ सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे। ”

१८० शुभ मुहूर्त आतेही कमान की मूठ में चाली थी वह देखी (?)। ”

१८१ उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे। ७३८

१८२ विक्रम संवत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीराज ने असंख्य धन पाया। ”

१८३ चन्द्र ने मन्त्र से कील कर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे। ”

१८४ चन्द्र की बात मान कर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए। ७३६

१८५ राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काट कर धन निकालो। ”

१८६ शिला काट कर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने मे पृथ्वी कांपने लगी। ”

१८७ शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊंचा खोदा तब खजाने का मुँह खुल गया। ”

१८८ बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला। ७४०

१८६ उस राक्षस ने निकल कर तरह तरह की माया करके लड़ना आरम्भ किया। ”

१६० जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति की कि मा अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले। ७४१

१६१ देवी की स्तुति। ”

१६२ देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का वरदान दिया। ”

१६३ बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारागया। ७४२

१६४ चन्द ने स्तुति कर के इस राक्षस और धन की पूर्व कथा पूछी। ”

१६५ देवी ने कहा जी लगा कर तू उसकी पूर्व कथा सुन। ”

१६६ सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में बीरता प्रधान है।

(२५) शशिव्रता वर्णन प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ७५९ से ८६४ तक)

——:o:——

(२६) देवगिरि समय।

(८६१ से ८८१ तक)

(२७) रेवातट समय।

(पृष्ठ ८८३ से ९१२ तक)

---

(२८) अनंगपाल समय।

(पृष्ठ ९१३ से ९४३)

३२ मंत्री ने अनंगपाल से आकर कहा कि मैं ने तो पहिलेही कहा था, यह दैत्यवंशी चौहान राज्य कभी न लौटावेगा। पृथ्वी तो आप दे चुके अब बात न खोइए। ९२३

३३ अनगपाल ने एक भी न माना और वह सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ आया। पृथ्वीराज नाना की मर्याद को सोचने लगा और उसने कमास को बुला कर पूछा कि मेरी साप छछूंदर की गति हुई है अब क्या करना चाहिए। ”

३४ जो लडाई करता हू तो अपनी मा के पिता (नाना) से लडता हू, और जो छोड देता हू तो अपनी हीनता प्रगट होती है, सो अब क्या न्याय है इस पर तुम अपना मत दो। ६२४

३५ कैमास ने कहा कि न्याय तो यह है कि कलह न कीजिए इन्होंने पृथ्वी दी है इनको आप न दीजिए, जो न मानै यहीं आकर भिडै तो फिर लडना चाहिए। ”

३६ अनगपाल ने धूम धाम मे युद्ध आरम्भ किया। कई दिन तक लडाई हुई अन्त मे अनगपाल की हार हुई। ”

३७ हार कर फिर अनगपाल का बद्रिकाश्रम लौट जाना। ६२५

३८ आधी सेना को वहीं और आधी को अजमेर के पास छोड कर अनगपाल लौट गया। ”

३९ मंत्री सुमन्त की सलाह मे अनगपाल ने माधो भाट को सुलतान शहाबुद्दीन गोरी के पास सहायता के लिये भेजा। ”

४० माधो भाट आकर सुलतान से मिला, वह तुरन्त पृथ्वीराज को जीतने की इच्छा से चढ़ आया। ६२५

४१ नीतीराव खत्री ने अनंगपाल के गोरी के पास दूत भेजने का समाचार पृथ्वीराज को दिया। ६२६

४२ पृथ्वीराज ने अनंगपाल से दूत भेज कर कहलाया कि आपको पृथ्वी देने ही के समय सोच लेना था अब जो हमने हाथ फैला कर ले ली तो फिर क्यों ऐसा करते है? ”

४३ जैसे बादल से बूंद गिर कर हवा मे पेड के पत्ते गिर कर, आकाश से तारे टूट कर फिर उलटे नहीं जा सकते, वैसेही हमे पृथ्वी देकर इस जन्म मे आप उलटी नही पा सकते, आप सुख से बद्रिकाश्रम मे जाकर तपस्या कीजिए। ”

४४ आप सुलतान गोरी के भरमाने मे न आइए उसे तो हमने कई बार बाध बाध कर छोड दिया है। ९२७

४५ हरिद्वार मे आकर दूत अनगपाल से मिला। संदेसा सुनते ही अनगपाल क्रोध से उछल उठा। ”

४६ अनगपाल ने क्रुद्ध होकर पत्र लिख कर दूत को गजनी की ओर भेजा। पत्र मे लिखा कि आप पत्र पाते ही आइए, हम और आप मिल कर दिल्ली को विजय करै ”

४७ दूत ने आकर अनगपाल के राज्यदान करने फिर उसे लौटाना चाहने तथा पृथ्वीराज के अस्वीकार करने अनगपाल के हरिद्वार आने का समाचार सुलतान को सुनाया सुलतान सुनते ही चढ़ चला। ६२८

४८ सुलतान शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई तथा सर्दारों का वर्णन। ”

४९ सिन्धु पार उतरकर बीस हजार सेना साथ देकर सुलतान ने तत्तार खां को अनंगपाल के लाने के लिये हरिद्वार भेजा तातार खां के आने का समाचार सुनकर अनंगपाल बड़े हर्ष से उससे मिला । ६२६

५० अनंगपाल ने बहुत से घोड़े मोल लिए और सेना भरती करके लड़ाई की तैयारी की । ,,

५१ तीन सौ बीर जो अनंगपाल के साथ बैरागी हो गए थे वे भी तलवार बांध कर लड़ने को तय्यार हुए । ,,

५२ तत्तार खां ने रात भर रह कर सवेरे उठते ही अनंगपाल के साथ कूच किया । अनंगपाल को दो योजन पर रोक कर उसने आगे बढ़ कर शाह को समाचार दिया, मुलतान आकर अनंगपाल से मिला, दोनों एक साथ बड़े प्रेम के साथ सलाह करने लगे । ६३०

५३ अनंगपाल ने सब वृत्तांत सुनाया दोनों की सलाह हुई कि जो पृथ्वीराज आप हाजिर हो जावे तो उसे जीवदान करना चाहिए । सुलतान ने दूत के हाथ पृथ्वीराज के पास पत्र भेजा कि तुम बड़ा अनुचित करते हो जो राजा को राज नहीं सौंप देते और जो पृथ्वी न लौटाओ तो आकर युद्ध करो । पृथ्वीराज ने कहा ऐसी कोटि चढ़ाई क्यों न करे अनंगपाल अब राज्य उलटा नहीं पा सकता । ९३०

५४ पृथ्वीराज ने डंके पर चोट लगा कर सब सर्दारों के साथ कूच किया और दो योजन पर डेरा डाला । ६३२

५५ दूत ने आकर पृथ्वीराज के चढ़ने का समाचार सुलतान से कहा । जो सब सरदार विरक्त होगए थे वे भी स्वामिकार्य्य के लिये लड़ने को प्रस्तुत हुए । ६३२

५६ सुलतान ने दूत से समाचार सुनकर चढ़ाई का हुक्म दिया । ,,

५७ पृथ्वीराज के चरों ने सुलतान के कूच का समाचार पृथ्वीराज को दिया जिसे सुनते ही वह भी लड़ाई के लिये चल पड़ा । ,,

५८ धूमधाम के साथ पृथ्वीराज सेना के साथ चला जब दोनों सेनाएँ एक दूसरे से दो कोस पर रह गईं तब पृथ्वीराज ने डंके पर चोट दी । ,,

५९ पृथ्वीराज के पहुंचने का समाचार सुनते ही सुलतान ने अपने सरदारों को भी बढ़ने का हुक्म दिया । ६३३

६० आगे तत्तार खां को रक्खा मारूफ खां को बांई ओर खुरासान खां को दीहिनी ओर और अनंगपाल को बीच में करके पीछे आप हो लिया । ,,

६१ पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना की व्यूह रचना की आगे कैमास को और पीछे चामंडराय को कर दिया । ९३४

६२ अपनी सेना को बीच में रक्खा और आज्ञा दी कि अनंगपाल को कोई मारे नहीं जीते ही पकड़ना चाहिए । ,,

६३ दोनों दलों का साम्हना हुआ कैमास ने युद्ध आरम्भ किया । ,,

६४ दोनों दलो का साम्हना होते ही घमासान युद्ध होने लगा । ,,

६५ कैमास ने शस्त्र सम्हाल कर युद्ध आरम्भ किया । युद्ध का वर्णन । ,,

६६ शहाबुद्दीन को चामुंडराय ने पकड़ लिया पृथ्वीराज की जै हुई सात हजार मुसलमान और पांच सौ हिन्दू मारे गए ।

पृथ्वीराजरासो।

भाग दूसरा।

अथ भोलाराय समय लिख्यते।

(बारहवां समय)

भोलाराय भीमदेव का बल कथन और राजा सलष को संभरि-राज (सोमेश्वर) की सहायता का वर्णन।

कवित्त ॥ छत्तीसा[1] सुक्रवार। चैत पुष सित दुति पारिय ॥
भोराराय भिमंग। सोर शिवपुर प्रज्जारिय ॥
आरज थाइ सलष्प। राज संभरि संभारिय ॥
चाहुआन सामंत। मंत कैमास पुकारिय ॥
घरजान पवारह पट्टना। बोल्ले बंक दुराइ दिल ॥
कैवार कथ्य नथ्यह तनी। षंगे राज किसान पल ॥ छं० ॥ १ ॥

शुकी का शुक से इंच्छनी के विवाह की सविस्तर कथा पूछना।

दूहा ॥ जंपि सुकी सुक पेम करि। आदि अंत जो बत्त ॥
इंच्छिनि पिथ्थह व्याह विधि। सुष्प सुनंते गत्त ॥ छं० ॥ २ ॥

इधर चौहान तपता था उधर आबू का राजा सलष पंवार बड़ा प्रतापी था उसका वर्णन।

कवित्त ॥ तपै तेज चहुआन। भान ढिल्ली इच्छा वर ॥
बीर रूप उप्पज्जौ। पल्ल रष्षै जुगिगनि भर ॥
आबू वै अनभंग। जंग षंगौ षल दाहन ॥
जोग भोग पग मग्ग। नीर[2] पिषी अवधारन ॥

---

(१) मो-चौआलीसा।
(२) को-बीर।

किती अनंत सलषेज भुत्र। भुत्र प्रमान पन रष्षई ॥
चव बरन सरन भुजदंड भर। दल दुज्जन भिर भष्षई ॥ छं० ॥ ३ ॥

सलष को एक बेटा जैत नाम का और मंदोदरी और इंछिनी नाम की दो बेटियां थीं।

दूहा ॥ जैत पुत्र सलषेज लघु। इंछिनि नाम कुमारि ॥
बर मंदोदरी सुंदरि। बियन[1] रूप उनिहार ॥ छं० ॥ ४ ॥

बड़ी मंदोदरी का विवाह भीमदव के साथ होना।

गाथा ॥ सो अप्पी बर भई। हुई बर मान थानयं भेवं ॥
सिद्ध सिद्ध सुपुत्तं। नामं जास भीमयं रायं[2] ॥ छं० ॥ ५ ॥

भोला भीमदेव के बल परामक्र का वर्णन।

कवित्त ॥ अनहलपुर आषंन। राज भोरा भीमंदे ॥
देसां गुज्जर षंड। डंड दरिया से बंदे ॥
सेन सबल चतुरंग। बीर बीरा रस तुंगं ॥
अति उतंग अनभंग। बियन पुज्जै बल जंगं ॥
कलि[3]काल किति मित्ती इतिय। पलटि प्रीति[4] क्रत जुग करन ॥
भोरा नरिंद भीमंग बल। उभै दीन तक्कै सरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

गाथा ॥ तक्कै चालुक रायं। त्रैलोकं चरनयं सरनं ॥
सुरषंडं जं बलयं। सा बलयं भीमयं राजं ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीमदेव के मंत्री अमरसिंह सेवरा का वर्णन।

कवित्त ॥ भीमराज राजिंद। राइ राइन उच्चारन ॥
अति अचंभ बलरूप। द्रुग्गपति सेव सधारन ॥
बावन बट[5] बटवान। तुग तेरह हिंसारं ॥
सिद्ध बटी बटवान। थान थट्टा घर धारं[6] ॥

(१) मो–बिनय। (२) मो–सो भीम नर रायं।
(३) को कृ ए–किल।
(४) मो–रीति।
(५) मो–बट।
(६) मो–प्रति मे "थान थट्टा घर धारं" के स्थान पर "तुंग तेरह हिंसारं" है।

आरब्ब गरव दरब दिल दल । चालुक्कां चित्तां चढ्यौ ॥
मची सुराय[1] जूना जघर । अमरसिंघ सेवर पढ्यौ ॥ छं० ॥ ८ ॥

मंत्र बल से अमर सिंह का अमावस को चन्द्रमा उगाना, ब्राह्मणों का सिर मुंडा देना, दक्षिण और पश्चिम दिशा को जीतना ।

कवित्त ॥ जिन अमरसीघ सेवरा । चंद मावसि उग्गाइय ॥
जिन अमर सीघ सेवरा । बिप्र सब सीस मुडाइय ॥
कचर कूर पाषंड । चंड चारन मिलिवत्तं ॥
दुज दोपंजर षेम । देषि उत्तर घन चित्तं ॥
नर नाग देव छंदां चलै । आकर्ष आवंत कर ॥
बिदरभ्भ देस दष्षिन दिसा । सब जित्तो पच्छिम सुधर ॥ छं० ॥ ९ ॥

इंच्छिनी के रूप की बड़ाई सुन भीम का उसपर आसक्त होना ।

कवित्त ॥ जहोरा पारक्क । सर्व कोढा पञ्जाई ॥
बारी बंगन वास । ठाम ठट्टा छुड्डाई ॥
माची माल्हन हंस । पानि आबू घर लग्गा ॥
चागोंची सलतान । दई मंदोदरि सग्गा ॥
आचंभ रूप इंच्छिनि सुनो । जन जन बत्त बषानियां ॥
भोरा अभंग लग्गयौ रचसि । काम करक्कै प्रानियां ॥ छं० ॥ १० ॥

आबू की ओर से आनेवालों के मुंह से इंच्छिनी की बड़ाई सुन सुन जैन धर्मी भीमदेव भीतर ही भीतर कामातुर हो व्याकुल हुआ ।

कवित्त ॥ द्रव्य दार उद्दार । गरन कज्जे मुष नष्षै ॥
कैवत्ता आबूअ । दिसान जितिचि मुष लष्षै ॥
जेवा तुंग तुरंग । चंग जेवाहन बही ॥
पांवारी कथ झूंठ । तेसु पहिचानी चही ॥

(१) ब-सुराइ ।

श्रोतांन राग लग्गे लिषै[1]। पहनवै पहैसरां॥
जै जैन भ्रंम उग्गाइयां। तेन कूर लग्गौ करां॥ छं०॥ ११॥

देखने सुनने और स्वप्न में मिलने से कामान्ध होकर भीमदेव रात दिन इंछिनी के ध्यान में पागल सा हो गया।

दूहा॥ मादक उनमादक नयन। सोषन द्रप्पन बान॥
इक सुपनंतर राग सुनि। इक दिष्टान विनान॥ छं०॥ १२॥

कवित्त॥ मादक उनमादक। समीप[2] सोषन अरु द्रप्पन॥
विय असोक अरबिंद॥ चंद चंदन उर जप्पन॥
विमल तान उचान। सुवनि नामे इंछिनि सज॥
पहनवै पहयौ। लाज भग्गी[3] वर अग्रज॥
सपनानुराग बढ्यौ न्रपति। अरु श्रोतानन राग भय॥
पंमार मोहि टारै सलष। अनष एन आबू सुलय॥ छं०॥ १३॥

गाथा॥ दिष्टानं श्रोतानं। सुपनानं रागयं हुती॥
तीनं राग प्रमानं। चालुकं रोग लग्गियं तीनं॥ छं०॥ १४॥ रू०॥ १४॥

गाथा॥ रोगंता मनमंथं। विह्वलं चंपि अंग अंगाइं॥
सुनि इंछिनीय नामं। भुट्टं सचेव लप्प अप्पाइं॥ छं०॥ १५॥
लष्षं लष्प लषिज्जै। इंछिनिय नामाइं भुट्ट सचाइं॥
चाउ दिसा विभूति। चतुरंगं सुक्कियं भीमं॥ छं०॥ १६॥

भीमदेव का राजा सलष के पास अपने प्रधान को पत्र देकर भेजना कि इंछिनी का विवाह मेरे साथ करदो और जो पूर्व वाग्दान के अनुसार चौहान को दोगे तो तुम्हारा भला न होगा॥

कवित्त॥ तिन प्रधान पट्ठाइय। लिष्षि आबू दिसि रायं॥
तुम बड्डे घर बड्डे। बानि बड्डे चित चायं॥

(१) मो-लषै।
(२) मो-सुदृष्टि।
(३) मो-भज्जी।

सैंध सगप्पन सध्यौ । चुरि चालुक्क परिचारां ॥
पज्जाई दो बार । बाल बांह डकारां ॥
नग हेम मुत्ति मानिक्क घन । कहि न जाइ लष्षा लिषां ॥
इंच्छिनि सुचित्त चहुआन बर । तौ आबू गिरि सर[1] भषां ॥छं०॥१७॥

सलष के बेटे जैतसी की वीरता का वर्णन, भीमदेव के दूत का आबू पहुंच कर राजा सलष से मिलना ।

छंद पद्धरी ॥ सज्जी सुभीम चतुरंग लच्छ । पट्टाय सलष पावार पच्छ ॥
तस पुत्र नाम जैतसी वीर । जित्तिया सिंघ बहो सधीर ॥ छं० १८ ॥
रावन सुमेघनद्दच[2] समान । भंजई इन्द्र आरूढ थान ॥
इन भिरवि बक्कि बघेल सच्च । रषि आस रंन पंमार अच्च ॥ छं० ॥१९ ॥
तिन बंधु भीम चम्मीरसेन । मेवाति भंजि ढिल्ली बलेन ॥
दैवत्त बांच द्रिग कमलरूप । अनपुच्छ लोइ जानियै भूप ॥ छं० ॥२०॥
दिग धरनि धरनि सलषेज वीर । भंजए जाइ धवलच सधीर ॥
बंभन सुवास पट्टन प्रजारि । ता समय भीम मंडन सुरारि[3] ॥ छं० ॥ २१ ॥
तिची दूत आय परनाम कीन । परमार चथ्य कग्गद सुदीन[4] ॥ छं ॥ २२ ॥

पंवार सलष की प्रशंसा ।

अरिल्ल ॥ पांवारी परिगिच प्रनिक्कीनौ । बल कीनैं बज्जी रस भीनौ ॥
जिन भ्रम धरा भारथ धर लीनी । तीनों पन कित्ती रसभीनी ॥ छं० ॥ २३ ॥
गाथा ॥ कित्ती कित्ति गनिज्जै । जानिज्ज सलषयं देवं ॥
सैसव वै पौगंडं । किसोरं ब्रद्धयौ जसयं[5] ॥ छं० ॥ २४ ॥
गाथा ॥ पची पंच गनिज्जै ।·मानिज्जै[6] कित्तयौ गुनयं ॥
सौयं दून प्रमानं । साचसं तेव सलषयो राजं ॥ छं० ॥ २५ ॥

पंवार सलष पर चालुक्य भीमदेव का जंपना और पत्र

(१) को ए क्ट सादर ।
(२) को क्ट ए-सद्दह ।
(३) मो-मदन ढरारि ।
(४) मो० में यह पद नहीं है ।
(५) मो-सजयं ।
(६) को क्ट ए-मद्दिज्जै ।

में लिखना कि मन्दोदरी दिया है अब इंच्छिनी को भी देओ नहीं तो आबू की गद्दी से हाथ धोओगे।

कवित्त ॥ पतिपवार भोरा सु। बीर जंप्यौ चालुक्कं ॥
रंक अजुह पमार। भीर जानी भरतक्कं ॥
अति उतंग भारथ सु। चंग पथ पार्थे न मानिय ॥
बेनतेय सुत इंद्र। करन किती जिन ठानिय ॥
लच्छन उतंग इंच्छिनि सुनिय। तिन चालुक्क न वीसरिय ॥
मंदोद मंद मंदोदरिय। कै कग्गर फिर दूसरिय ॥ छं॰ ॥ २६ ॥

दूहा ॥ कै इंच्छिनि परनाय मुहि। रष्षि सगप्पन संधि ॥
जौ चित्तै चहुआन कों। गढ़ तें नष्षौं बंधि ॥ छं॰ ॥ २७ ॥

भीमदेव के प्रधान को पांच दिन तक आदर के साथ राजा सलष का रखना, छठें दिन दरबार में आ उसका पत्र और भेट उपस्थि करना।

कवित्त ॥ तिन प्रधान आवंत। अरघ साँई सलष्ष दिय ॥
दिवस पंच भोजंन। दुजन आदर अदब्ब किय ॥
षट अग्ग संभ्रचसु। पान कग्गर कर अप्पौ ॥
रस रसाल गुज्जरह। नरिंद रायं गन थप्पौ ॥
आरब्ब तेज ताजी तिसल। जर जरीन आभरन बर ॥
देषंत भेष लग्गौ बनै॥ दुअ सुदीन रिझझय सुनर ॥
छं॰ ॥ २८ ॥

सलष की बीरता की प्रशंसा और उसपर चालुक्य भीमदेव के कमर कसने का वर्णन ॥

दूहा ॥ अब्बू वै वै गै समर। समर सप्पन तेज ॥
समर उभै समरंग करि। समर सुपुज्जै वेज ॥ छं॰ ॥ २९ ॥

कुंडलिया ॥ षेमकरन पंगार भर। बर उद्धरन नरिंद ॥
भीमसैन परतापपति। बर पवार बर चंद ॥
बर पवार बर चंद। नरन छपच नाराइन ॥

अब्बू वै द्रुग भान। अब्बु बंध्यौ जिहि पायन॥
ता उप्पर चालुक। बीर बंधी निम भीमह॥
नर न करन करतार। कन्ह कुंभह बर भीमह॥ छं० ॥ ३०॥

राजा सलष और उसके पुत्र जैतसी की गुणग्राहकता और उदारता का वर्णन॥

कबित्त॥ जै अब्बू वै भार। लाज अब्बू गज रथ्यौ॥
मान प्रमान समदान। अंग कवितम कवि[1] सथ्यौ॥
डोलौ लंमन होइ। घाइ बज्जै रस भीरं॥
सलष सुतन पामार। समद लज्जा मुष नीरं॥
मिलि मंत तंत इक्क सु करन। करक कसस सगुनं सुबर[2]॥
संवरन मंत मंतह रवन। भान दान दिष्षे सुबर॥ छं० ॥ ३१॥

चालुक्य को मंदोदरी देकर नाता किया, परंतु भीमदेव ने इंच्छिनी के रूप पर मोहित हो अपने प्रधान को भेजा॥

चौपाई॥ मंदोदरी दीनं पामारं। बर चालुक्क सरप्पन भारं॥
सुनि इंच्छिनी ततरति अवतारं। पठय दिये परधान विचारं॥ ३२॥

सलष ने विचार किया उसे वह प्राण देकर भी न पलटैगा॥

चौपाई॥ अब्बू वै दूजो न विचारै। गढ़ अब्बू किरि उंच करारै॥
जो इंच्छिनि इच्छन बर अप्पै[3]। गहि करि प्रान मान गढ रप्पै[4]॥
छं० ॥ ३३॥

भीमदेव का पत्र पढ़ कर जैतसी का क्रुद्ध होना॥

छंदत्रोटक॥ नर रिझझय देषि रसाल रसं। जिवदेव नरिंद किये बसयं॥
जर पंटन रत्तत अंबरयं। रज रुंमि फिरंगत संमरयं॥ छं० ॥ ३४॥
समरू बन रूव बघन्न दुनं। न फिरै तिन चष्षन षोस षिनं॥
झुकि उंच उतंग तुरंग तुरं। धरि चष्षि गिलंद उडंद षुरं॥ छं० ॥ ३५॥

(१) मो-तन। (२) मो-सुचर।
(३) को० कृ० ह-रष्षे। (४) कृ-नष्षे।

निमिषं जुग जोजनयं विसष । चित चंचल नारि चढ़ै सुरषं ॥
घनसार विचरात आभरनं । अनु आजु निसा दिन सादरनं ॥ छं० ॥ ३६ ॥
उर मंदोदरि सुंदरीयं । तिन पच्छति इंच्छिनि सुंभरयं ॥
इति दष्षिय कग्गर बंचिनियं । तर्हा जैतकुमार उठ्यौ सुनियं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

जैतसिंह का तलवार संभाल कर कहना कि भीमदेव का मन पाषंड से आकर्षण आदि का मंत्र वश में करके बहुत बढ़ गया है पर उत्तर के क्षत्रियों से कभी काम नहीं पड़ा है ॥

कवित्त ॥ तेग झारि पंमार । जैत जग चष्य बत्त क्रिया ॥
मंगै चैल सुगल्ह । तात अविवेक छिति दिय ॥
भोरा भीम नरिंद । बंध पाषंड प्रगट्टे ॥
आकर्षन मोहन मंच । जंच जुग जुग जे घट्टे ॥
धन द्रव्य देस बलि बल करन । जानै ना उत्तर अख्यौ ॥
धाराधि नाथ भारी धरनि । बब्बल बेल नाथह धख्यौ [1] ॥ छं० ॥ ३८ ॥

गाथा ॥ न थांनी घन घत्ती । षग्ग तमस उज्जलौ धरयं ॥
सोयं जैत कुमारं । भारथन थेव नष्ययो धरयं ॥ छं० ॥ ३९ ॥

जैतसी का कहना कि पाषंड से अपना बल बढ़ाकर भीमदेव अपने को अमर समझता है यह उसकी भूल है ॥

कवित्त ॥ तेगझार पामार । । जैत जग चष्य उचारिय ॥
अरे भीम पाषंड । सच डंडह चनि जारिय ॥
चैपुर षग्ग सुभूमि । दान विद्या अधिकारिय ॥
रूपदान रसग्यान । तत्त नच मत्त बिचारिय ॥
भोरे सुमत्ति भूल्ले अमर । बुद्धि समर रुधन सकल ॥
परधान बंध कीजै मतो । रथ जुत्तह षट्टम कल ॥ छं० ॥ ४० ॥

भीमदेव के प्रधान का भीमदेव के बल की बड़ाई करके कहना कि वह पुंगल गढ़, आबू, मंडोवर और अजमेर सब जीत लेगा ॥

(१) मो-हथ्यो ।

कवित्त ॥ बंधि पारि परधान। आन आनंद द्रव संचिय ॥
ता पच्छै छेगै भंडार। अप्पन धर पंचिय ॥
ता पच्छै सामंत। नाथ मिलि एक सुबत्तिय ॥
भोरा राइ दिसान। सैंध सगपन की कथ्थिय ॥
आरब्ब तेज गढ़ उद्धरन। घेमकरन सिंगार सिर ॥
सुरदेस सलष सुन जैतसी। नव सुकोटि नागौर नर ॥ छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ घाट किराडू पारकर। लोद्रा लौ जालोर ॥
पुंगल गढ़ आबू सचित। मंडोवर अजमेर ॥ छं० ॥ ४२ ॥[1]

छंदचोटक ॥ नवकोटि मरुस्थल बीरवरं। दस अट्ठ सुअर्बुद राज घरं ॥
धर नागत रष्षिय कोन वरं। धन धन्नि नरिंद सुलोइ नरं ॥ छं० ॥ ४३

राजा सलष का उत्तर देना कि गोवर्धनधर श्रीकृष्ण हमारी सहायता करेंगे ॥

साटक ॥ जा रष्या षय गर्व प्रोक्षित रिषं, दावा नलं जालयं ॥
सोयं मातुल नंद बंधि सलिता[2], कावेरि नै प्रीतयं[3] ॥
जिं रष्यौ बर पानि प्रब्बत महा, गोवर्द्धनं धारनं ॥
सोयं सा हरि रिष्षि धूवति वरं, जे हड्ड गोकोश्वरं ॥ छं० ॥ ४४ ॥

छंदचोटक ॥ सिय मंति सुमंतिय तत्त गुरं। हरि रष्षिय बालक बिप्पनरं ॥
जम लोकसु आनिय बंध तपं। क्लिनकाल सुगोकुल कालयपं ॥ छं० ॥ ४५
भयकोपमयं दिवनाथवरं। हरि रष्षिय कूट सुअट्ठधरं ॥
धर भ्रार बरष्षिय मेघघनं। जल सुक्कि तुवंत्तत बुंदजनं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कर कोमल पंकज पाइ हरी। करनो क्रन धाइयु देव करी ॥
न्रप राज सुद्रोपद पुत्तवरं। किय कोटि दुकूल कला निकरं ॥ छं० ॥ ४७
रवि पंडव मंडव लष्षि ग्रहं। सलषानिय पत्ति सुनत्त वहं ॥ छं० ॥ ४८

दूहा ॥ जिन रष्षी हरि भक्तिवर। दैहथ्थ षम तेग ॥
दुहुन भंति मंडन मरन। सुर नर रष्षौ बेग ॥ छं० ॥ ४९ ॥

---

(१) यह दोहा मो० प्रति में नहीं है।

(२) मो०—सरिता।

(३) को-कृ-ए—आलयं।

कवित्त ॥ षेमकरन षंगार[1] । मच्छन गोइंद चिलोचन ॥
पंच घात पंची सुबंध । स्वामि संकट रन मोचन ॥
लै संक्या[2] सिर पांन[3] । मनो पंडिवति पंच सम ॥
गोइंद सलष नरिंद । जोति रष्षन भारतभ्रम ॥
उत्तरिय गढ्ढ आबूधनी । रहिय विनग आबू न्टपति ॥
कह्यौ सुभ्भत न्टप नीठ कै । स्वामि ध्रंम रष्षन सुभति ॥ छं० ॥ ५० ॥

ऐसेही वाक्य जैतसी के भी कहने पर प्रधान का यह कह कर-जाना कि सावधान रहना तुम पर हम राजा को लेकर आवेंगे ।

दूहा ॥ हम कहि जैत सुतान सम ॥ गढ वपु रष्षौ सच्छ ॥
हम तुम जाइ सुराज पै । लैआवैं बर पच्छ ॥ छं० ॥ ५१ ॥[4]

राजा सलष का अपने यहां तयारी करना और इंच्छिनी को विवाहने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिखना ॥

कवित्त ॥ गय सलषानी राव । बीर अग्गर गढ रष्षै ॥
बर आबू की लाज । षेम कंमंध सिर भष्षै ॥
बंधो राव धरंनि । बीर पामर सुर सष्षी ॥
प्रजा पुलंत नरेस । ग्राम षट्टू दिसि रष्षी ॥
बर मुक्कि बीर धारह धनीय । हथ्यराज परवान लिषि ॥
सोमेस पुत्त प्रथिराज कों । दे इंछिनि सगपन सुबिषि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ बर उद्धरन नरिंद । षेम कंमंध गढ साहिय ॥
जोग मग्ग लभ्भियन । षग्ग मग्गह मुनि पाइय ॥
बहुन सिद्ध साधन सुमंडि । जोग आरंभ बिचारिय ॥
मुक्कि चिगुन गुन गहै । छिमा सद्धै कामनारिय ॥
हम परत भूमि पंचह सुधर । पच्छिलै मोधर चंपिहै ॥
गोइंद परै बड़ गुज्जरैं । आबू आनि सुजंपिहै ॥ छं० ॥ ५३ ॥

(१) कृ० को० ए०—उद्धरन ।
(२) मो०—सुंष्यो ।
(३) मो—भार ।
(४) मो० प्रति में यह दोहा नहीं है ।

भीम देव का सलष पर चढ़ाई करने के लिये अपने सामंतों से सलाह और उन्हें उत्तेजित करना ॥

कवित्त ॥ आसोंजै रानिंग राव । परबत्त बेंदानै ॥
सो घन गिरि संथान[1] । राव सामंत सिवानैं ॥
चाह बक्कि चालुक्क । राइ भोरा भुवपत्तिय ॥
कढ्ढि अपो पंमार । षंडि छंडो छत पत्तिय ॥
आरह्ढ उधाइ मंडली । गुज्जर राइ गरब्बियो ॥
प्रथिराज राज राजंग गुर । तप्पि तरक्कस तष्पियो ॥ छं० ॥ ५४ ॥

चालुक्य और चोहान से जो विवाह का झगड़ा पड़ा है उसका वर्णन चन्द करता है ॥

दूहा ॥ चालुक्का चहुंआन सों । बंधे तोरन माल ॥
ते कविचंद प्रकासिया । जे हूंदे दल चाल ॥ छं० ॥ ५५ ॥

जैतसि का भीमदेव के संदेसे पर महा क्रोध प्रकाश करके पिता से कहना कि यह कभी न होना चाहिए ।

दूहा ॥ सलष कुंवर जैतह अनुज । मंगे भोरा राइ ॥
आबू तर उप्पर करो । कै हुँच्छिनि परनाइ ॥ छं० ॥ ५६ ॥

कवित्त ॥ तब जरिय जैत पामार । सलष नंदन इह कथ्थिय ॥
भोरा भंगुर राइ । राइ प्रज्जुन[2] मुष सथ्थिय ॥
रा भोजन भुग्ग पत्ति । कुनह कुंडल कलिमंडिय ॥
सस्त्र वस्त्र करि नस्त्र । तिनां दंतन तिन षंडिय ॥
गुज्जरिय ग्रब्ब गो उप्परिय । गेहरि गल नह्यन कहै ॥
चालुक्क भष्ष वध्यहतबो । किम प्रगट्ट हुंच्छनि लहै ॥ छं० ॥ ५७ ॥

दूहा ॥ जिन दीनो जीवन मरन । दई चष्ष चम तेक[3] ॥
और न चिंतन चिंतियै । सो रन रष्षै एक[4] ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) ए० को ०ए०-संधार ।
(२) को-प्रान ।
(३) मो-तेग ।
(४) मो-एग ।

कवित्त॥ तब भीमवत्त सबभान। जैत बंधौ उच्चारिय॥
भूमि तात अप्पनी। रुधिर छूटै गत्त सारिय॥
आदि अवनि व्योहार। धनी धर धार न छंडै।
धन लुट्टन गोआल। परष पुक्कारन छंड॥
देषियै दीन घर घर फिरै। गहअनन चहुअननै॥
निद्रा पियास क्षुध मोह[1] तजि। दुष्ष सुष्ष दुक्क न गनै॥ छं० ॥ ५९॥

दूहा॥ चहुअ घर घर बुल्लियै। कुजस कहै सब कोइ[2]॥
बहु उचार मुष उच्चारै। जुद्ध बिनाइ लषोइ॥ छं०॥ ६०॥

सबकी सलाह का यही होना कि चौहान के पास पत्र भेजा जाय॥

दूहा॥ सकल परिग्गह एक किय। षट दिस पूजा सद्धि॥
कागर दै चहुआन कौं। पठइय दूत समद्धि॥ छं॥ ६१॥

दूत का दिल्ली में जाना और पृथ्वीराज को लड़ाई के लिये प्रचारना॥

छंद वचनाराच॥ परंदि पुत्ति भेदि भेदि ढिल्लि दिल्लि संभरं॥
सलष्ष राज काम साज सुद्ध बत्त विस्तरं॥ छं०॥ ६२॥
सरंन काज चालुकं सबालुकं समत्तियं॥
रषे जु षेमसी करंन राज पत्ति षिचियं[3]॥ छं०॥ ६३॥
चढंत यं गिरा गिरं धरा धरं सुचल्लियं॥
सतं मुषं सुसत्तसूर सच सूर चल्लियं[4]॥ छं०॥ ६४॥
सुतंत मंच मंचियं सुसोम पुच सज्जियं॥
सुसेन सोभ सोभियं सुछित्त छच छज्जियं[5]॥ छं०॥ ६५॥

सलष का पत्र पढ़कर पृथ्वीराज का प्रसन्न होना॥

दूहा॥ सुनि कग्गर न्रपराज प्रथु। भौ आनंद सुभाइ॥
मानौं बल्ली सूक ते। नीरा रस जल पाइ॥ छं०॥ ६६॥

(१) मो-षुध सोह।
(२) मो-सोर।
(३) को-कृ-ए-पचियं।
(४) मो०-सतं मुषं सुसत्त पच सूर पंच संल्लियं।
(५) कृ-को-ए-सज्जियं।

मंत्री को पृथ्वीराज ने पांच हाथी, सौ घोड़े, पांच सौ रुपया आदि दिया और आप सलष की राजधानी की ओर गया, यह सुनकर भीमदेव कुढ़गया ॥

कवित्त ॥ पंच हस्ति सत बाजि । द्रव्य दीनो सत पंचं ॥
धरमत्ती मेवात । दियो हिंसार सुषंचं ॥
तेग एक षुरसानि । एक माला गुन दानं ॥
आदर संजुत बोल । मुक्कि मंत्री अगिवानं ॥
संभाग राज सोमेस सुअ । सलष राम कीनौ गवन ॥
सुनि बात राय भोरंग हिय । मनौ घाव दीनौ लवन ॥ छं० ॥ ६७ ॥

दूहा ॥ करि जुहार भीमंग सौ । चल्यो जैत कुंआर ॥
षेमकरन षंगार कौ । दै सिर उप्पर भार ॥ छं० ॥ ६८ ॥

इंछिनी का पृथ्वीराज से व्याहा जाना सुनकर भीमदेव का सरदारों से सलाह करना ॥

दूहा ॥ गढ साल्यौ सुनि भीम ने । कन्यावर प्रथिराज ॥
बोल्लि मंचि सज्जन कह्यौ । दुहूं बाजएं बाज ॥ छं० ॥ ६९ ॥

भीमदेव का सलष पर क्रोध प्रकाश करना और दिल्ली दूत भेजना की उसे चहुआन शरण न रक्खे ॥

छंद पद्धरी ॥ जं बात सुनिय सलेषज बीर । परि तत्त तेल जनु बूंद नीर ॥
प्रजरंत रोस चालुक्क भान । धर धरिग धरा चल संक मान ॥ छं० ॥ ७० ॥
बंधू समेत पाताल मेत । अमराज पून को करै हेत ॥
इंछिनी पास पीठी मिडाइ । को तिरै समुद बिन हथ्थ पाइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥
को हथ्थ सिंघ पुच्छी जगाइ । को लेइ नाग मनि सीस जाइ ॥
को काल ग्रेह गहै पंचि हथ्थ । घालै जु कौन तन अग्गि वथ्थ ॥ छं० ॥ ७२ ॥
रष्षै सु कौन चालुक्क पूंन । संभर्यौ कौन त्रैलोक हून ॥
मैं सुन्यौ कांन जुग्गिनि पुरेस । परमार रष्षि अप मध्यदेस ॥ छं० ॥ ७३ ॥
ज्यौं पियौ कृष्ण दावानलेस । त्यौं पिउ गऊ आबूअ देस ॥

गढ चढै मान मन धरिम भार । सम करों जारि संपारभार[1] ॥ छं० ॥ ७४ ॥

मुक्कले दूत ढिल्लीय थान । रष्षे न सरन ज्यौं चाहुआन ॥ छं० ॥ ७५ ॥

भीमदेव का चारो श्रोर मित्र राजाश्रों की सेना बुलाना श्रोर चढ़ाई की तयारी करना ।

कवित्त ॥ जपि भोरा भीमंग । अंग कंप्यै रस बीरह ॥
बिषम भार उड्डार । बारि बेरैं अरि नीरह ॥
दिसि[2] दिसान कग्गर । प्रमान पट्टे पट्टनवै ॥
बारिधि बंदर सिंधु । बाज सोरठ ठट्टनवै ॥
कच्छे न अध्य जद्दव जदर । सेन इक्क भए आनि भर ॥
चालुक्क राइ चालंत दल । अम्मर घुम्मर घुमर बर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

आबू पर चढ़ाई की तयारी ।

कवित्त ॥ बर गिरनार नरेस । किया साहस चालुक्की ॥
लोहानैा कट्टीर । सेन बंधे भुअलुक्की ॥
आबू उप्पर कूच । बीर भीमंदे दिज्जैं ॥
बर निसान सुर गज्ज । गच्छि[3] जैजै अरि पिज्जैं ॥
सहनाइ न फेरिय बीर बजि । सिंधुअ राग सु आदरी ॥
पंमार भीम पूजी सहर । बजी कूच गुन ग्रहरी ॥ छं० ॥ ७७ ॥

भीमदेव की सेना के कूच की घूम का वर्णन ।

छंद भुजंगप्रयात ॥ धरा धूरि पूरं । सिरं सेत नेतं । धर्ह धंड धंडं । उडी रेन रेतं ॥
मदं गधं भोरं । लगे भार भारं । मनैां कज्जलं कूट । कलधंठ थारं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
ढलं ढाल ढालैं । चलै ब्रंन ब्रंनं । मनैां केलि पंचं । रगंचा सुब्रंनं ॥
चलें चैार चावद्दिस बात पत्तं । मनैां भैारयं भैार बासंत मत्तं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
नवं नद्द नीसान बज्ज अघातं । गजै गैन कै सिंघ कै गिग्गिरातं ॥
नवं नद्द नफ्फेरि भेरी सभालं । तरक्कंत तेगं मनो बिज्जु नालं ॥ छं० ॥ ८० ॥

---

(१) मो-ह्वार

(२) को॰ कृ॰ ह॰--दस ।

(३) को॰ कृ॰ ह॰--गज्जि ।

करक्के नरं षाल षग्गं चमक्कैं । मनौं काल षध्धं सुविज्जू झलक्कैं ॥
जलं बेथलं बेथलें मध्य नीरं । मनौं नंषियं बान रघुनाथ बीरं ॥ छं० ॥ ८१ ॥
जलं बेन षुट्टी बनं बेन तुट्टी । थलं बेन कुट्टी फनं बेन उट्टी ॥
घरं रेन उड्डी सुलग्गौ अभानं । दलं बेन बढ्ढी पयानं पयानं ॥ छं ॥ ८२ ॥
करी आनि सेना सुआबू गिरद्दं । मनौं पारसं चंद आभा सरद्दं ॥
कवी बीय ओपंम चित्तं बिचारी । उरं हूव माला सिवं ज्यौं अधारी ॥ छं० ॥८३॥
चिहूं कोर डेरा कहूं पीत सेतं । मनौं ग्रीषमं अंत उट्ठि मेघ मेतं ॥ छं ॥ ८४ ॥
गाथा ॥ आभा सरदं प्रमानं । सेनं सज चालुक्कं बीरं ॥
छिति छचीयं छचं । जनु बद्दलं कुटि संकरं मेघं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
छंद भुजंगी ॥ निसानं निसानं निसानंत बज्जै । दिसानं दिसानं दिसानंत गज्जै ।
तमंते तमंते तमं तेज भारे । झमंते झमंते झमंकार झारे ॥ छं० ॥ ८६ ॥
पुजै नाहि बानं कमानं प्रसारे । इसे राइ चालुक्क सेना समारे ॥ छं ॥ ८७ ॥
गाथा ॥ मत्ता मेघ दिसानं । रिस्सानं चालुक्कं राइं ॥
नैनं तेजति तुट्टं । ज्यौं तत्ताइं अग्गियं बुट्टं ॥ छंद० ॥ ८८ ॥

आबू की शोभा वर्णन ।

कबित्त ॥ बलि भीमंग नरिंद । गढ्ढ मध्यौ चिहु पासं ॥
नारि गौर साथान । बीर धावै रस रासं ॥
बिय ऊंचौ षट कोस । पंच सुर मध्य लंबाइय ॥
बागवान जलथान । जानि कैलास बनाइय ॥
गिरि गंग सचित निध्धाच जहां । देवथान उद्यांन तह ॥
रिषि संत जती जंगम जुगी । रहहिं ध्यान आरंभ मह ॥ छं० ॥ ८९ ॥

भीमदेव का वैदिक धर्म छोड़कर जैन धर्म मानना ।

दूहा ॥ ठानिज्जै मानिज्ज भत । चानिज्जै गुर ग्यान ॥
बेद धर्म जिन भंजए । जैन ध्रंम परिमान ॥ छं ॥ ९० ॥ ✓

अमर सिंह सेवरा की सिद्धि का वर्णन ॥

कवित्त ॥ अमर सीह सेवरा । मंच भेदं उप्पाइय ॥
जैन ध्रंम बाचिग्ग । मंच कर कग्गर चाइव ॥

मोर सोर पप्पीह । जीह दद्दुर सुर लाइय ॥
चढ्य सुच्य सुभ्भैन । भेद अद्धी निसि आइय ॥
नाइक्क एक दष्यिन तनौ । दष्यिन दर कुंजी दइय ॥
चौसट्ठि देवि परसाद करि । मंच भेद अमरै ठइय ॥ छं० ॥ ९१ ॥

भीमदेव का रात के समय कूच करना ।

दूहा ॥ चल्यौ भीम भोरा सुभर । अंधारी निसि अद्ध ॥
रौरि परी गढ उप्परै । भेद सबै बर षद्ध ॥ छं० ॥ ९२ ॥

छंद भुजंगी ॥ उसद्देति सद्दे कुसद्दं गभीरं । चयं चंद बोधं अबोधं सरीरं ॥
चको चक्क बाजी गजे मेघ नद्दं । जगे लोइ लोयं कुसद्दे कुसद्दं ॥ छं० ॥ ९३ ॥
गती गत्ति छत्ती छिलीता छितानी । कमट्टं बिमट्टं मिठं नाचि रानी ॥
छती छच मंचे बिमंतेति भारे । सुनी कंन चालुक्क सेवक्क सारे ॥ छं० ॥ ९४ ॥

कुंडलिया ॥ जिनी ओंडां हम्मीर सौं । तिन सलषानौ भार ॥
दियो कोट चालुक्क कौं । सो दीसा संसार ॥
सो दीसा संसार । भीम अप्पौ गढ छट्टौ ॥
कहै बंधु बीरंम । राज पंगर गढ चट्टौ ॥
चल्यौ भीम कुमार । मुक्कि माविर्त्ता कोडां ॥
चल्यौ जुद्ध पंमार । गयौ हमीरसी उंडां ॥ छं० ॥ ९५ ॥

गाथा ॥ बलभे बलभो बातं । नच अच्छी बीयं भेदयौ ॥
भेदै अच्छरि कुलयं । पावारं प्रानि बालायं ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कवित्त ॥ बार दीह लगि नवमि । बहुरि रिन रत्तह लग्गा ॥
पामारं चालुक्क । सेन लुष्यिन भोमग्गा ॥
दनु सुदेव है दैयकरन । चल चलि गिरि छनं ॥
कोटि तिष्यि धारीच । भरत धारह पति तनं ॥
इम भिरत पंच दस वासरह । सूर उद्ध उद्धरन धर ॥
कर चनिग राव गुज्जर दलां । मार मार उच्चरंत सिर ॥ छं० ॥ ९७ ॥

कवित्त ॥ मार मार उच्चार । धार धव दए भीम दल ॥
षेम करन पंगार । देषि भर भीर तजे बल ॥

सिर उछुत उतकंठ । हंस रस कीय कटारे ॥
घति निसंक अरधंग । कमध कीनो पंमारे ॥
दह पंकधार धारह धनिय । जुरत जुत्ति जुगधर गनी ॥
ता पच्छ सुगति लभ्भय सुवर । चिंति चिंति मुनि सिर धुनी ॥ छं० ॥ ९८ ॥

कवित्त ॥ आसति असुति अस्त । वस्त किथी कित रष्षी ॥
कहै तो रष्षीं हेत । केइ आगय इह भष्षी ॥
ईस अचल दिषि अचल । अचल उनै न पाइ तिन ॥
धू धू धू मंडलह । सार बज्यौ सारन भिन ॥
बेहथ्य दरद्री द्रव्य ज्यौं । अचल सचल सिर दिष्षइय ॥
षंगार षेम षेमह करन । जिति किति अभिलष्षइय ॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ अचल कहै गिरि सिर धर्यौ । तहिन तें पन पानि ॥
रुधिर सुधिर सलह पर्यौ । धन्नि धन्नि सलपानि ॥ छं० ॥ १०० ॥

कवित्त ॥ रष्षि रष्षि सलपानि । जूह सलपानि पवारं ॥
वर भीमंग नरिंद । सीस दीनो भर भारं ॥
उद्द राव उद्धरन । कोट नव कोटी लाजं ॥
पुंजा पुंज पहार । लाज विम्भुतिय साजं ॥
महनसी टंक माह्र मरद । गज्जिधार सिर वज्जिग वन ॥
जाने कि सद्द पर सद्द गिरि । सुन हंक्यौ मंतह पवन ॥ छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ मत्त मत्त मातंग वर । छह पत्ता मुष मंडि ॥
ते षंडे सो षंड ए । जम किंकर कित छंडि ॥ छं० ॥ १०२ ॥

गाथा ॥ कुहा मुत्तिय पुहपं । तुटा रुधिराइ धार धारयं ॥
जानिज्जै पहमग्गं । जग मग्गं षेह यो पथयं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

सलष और भोम की सेना से घोर युद्ध ।

छंद भुजंगी ॥ मिले सेन पंमार चालुक्क एतं । कुहू रैन जुट्टैं मनैां प्रेत हेतं ॥
भरं सीस तुट्टैं विकुट्टैं बिहारं । करैं गद्द उज्जैं पिसाचं चिहारं ॥छं०॥१०४॥
तरक्कंत घायं परैं पाइ कच्छी । मनैां नीर मुक्कैं तरप्फंत मच्छी ॥
कियौ जुंहरं जालि बाबानि तत्थैं । चल्यौ राउ भोरा सिरैं अब्ब मत्थैं ॥

चपं चप्परंची सुरंची झनक्कै। बज्यौ जानि घरिआर संझ्या ठनक्कै॥
रुधिं धार धारं भई भूमि रत्ती। रमैं जानि वासंत निस्संक छत्ती॥
छं०॥ १०६॥

सलष का मारा जाना, उसकी बीरता की बड़ाई॥

कवित्त॥ षेमकरन षंगार। उद्ध उद्धरन गह्यौ गिरि॥
बल बरसिंघ ततार। सार लग्गै प्रहार सिर॥
मंस अंत तुट्टई। बीर बंटई जुराज्यौ॥
जरासिंघ जोरयौ। जोर दिष्षिय ज्यौ पाज्यौ॥
दिषि मंत मत्त मत्ती उमा। जै जै जै जंपत सुभर॥
पंमार पंच पंचौ मिले। रह्यौ एक औसाफ धर॥ छं०॥ १०७॥

कवित्त॥ षेमकरन षंगार। जुरत जों च्हर संपन्निय॥
लिय गिर गुज्जर राइ। कंध तिन हंस उडन्निय॥
सिर तुट्टै धर भिरिग। ढरत कर लई कटारिय॥
कर कत्ती सुकमंध। कंध बिन करिय पवारिय॥
बरन बिन्न बित्त कवित्त यौ। लष्षि पमार सुलष्षन॥
सक्क सों काल कमधज्ज किय। सुकवि चंद कित्ती भषन॥ छं०॥ १०८॥

कुंडलिया॥ अब्बुअपति पामार पच। लिय गिर गुज्जर राइ॥
ता पक्क बित्त कवित्त यौ। कह्यौ चंद बरदाइ॥
कह्यौ चंद बरदाइ। कज्जभर. बित्त कवित्तौ॥
पट्टन वैट्टै गै पलान। मुरधर संपत्तौ॥
सलष अलष करि कित्ति। सुयसु संसारह जानिय॥
करन नंद करिहार। गक्क चंपत बष्षानिय॥ छं०॥ १०९॥

भीमदेव का आबूगढ पर अधिकार करना।

कवित्त॥ परे झुज्झिक रन बीर। मरन ज्यौं जानि जम्म बर॥
पुच मिच सज्जन सुलच्छि। टरे तन काल काल कर॥
धरी लच्छि धर धस्यो। धारि उद्धार पमारं॥
सह परिगह कह पुत्त। तुट्टि धारा धर धार॥

धुअ धाइ भीम[1] कीनौ सुगढ। सुकल पष्य पुंनिम सुदिन॥
जय दंद[2] बत्त चालुक्क सुनि। नभ मग्गौ सलषान तन॥ छं०॥ ११०॥

एक महीना पांच दिन आबू में रहकर भीमदेव का अपने राज्य को लौटना।

दूहा॥ एक मास दिन पंच रहि। गढ़ मुक्यौ तिन बार॥
पट्टन वै पट्टन गयौ। अब्बू वै सिर भार॥ छं०॥ १११॥

अपने राज्य में आकर भीमदेव ने शहाबुद्दीन को पत्र लिखा कि आप सारूंड आइए हम आप मिलकर पृथ्वीराज को जीतें, पत्र देकर मकवान को भेजना।

छंद भुजंगी॥ थपी थान थानं सुअब्बू प्रमानं। गयौ राज पट्टं सु पट्टं निधानं॥
दियं कग्गदं साहि सुरतान गोरी। करौं भेद[3] बत्तं बधौं पिथ्थ जोरी॥
छं०॥ ११२॥

धप्यौ साहि गौरी सुसारुंड आवै। हमं सब्ब सेनं पसौ किन्नि धावै॥
दजं गढ्ढ अब्बू रुजंबू निधानं। हनौ साहि चौहान करि षग्ग पानं॥ छं॥११३
तहां मुक्कल्यौ बीर मकवान राजं। लिषे कग्गदं चालुकं राजकाजं॥ छं॥११४

मकवान से भीमदेव का कहना कि केवल इंछिनी के ही कारण से मैंने सलष को सकुटुंब स्वर्ग लोक को भेजा है।

दूहा॥ पून परिग्गह बंधु सह। मैं मुक्कलि स्रग[4] लोग॥
एकै इंच्छिनि कारनह। मति सलषानि अजोग॥ छं०॥११५॥

और मेरे मन का दुखः तब दूर होगा कि जब चौहान पर चढाई करूं, सुलतान मुझसे मिलजाय, और दिल्ली का राज्य अपने हाथ से नष्ट करूं।

---

(१) को. कृ. ह–गट्ठ।
(२) को–जयचन्द।
(३) मो–तेह।
(४) को–स्वग।

गाथा ॥ मम मनरंजन भंजौ। भजौं सेनाइं संभरी देसं ॥
जो मिलई सुरतानं। भंजौं राज दिल्लियं पानं ॥ छं० ॥ ११६ ॥

भीमदेव के कागद के समाचारों का सारांश।

कुंडलिया ॥ कग्गर गुरिय सचावदिस। भरि लिषि भोरा राइ ॥
तुम धरि संभरि उत गचो। चम नागौर निचाइ ॥
चम नागौर निचाइ। बंधि संभर गिरि अव्बू ॥
जो मिलंत मुषि आइ। देउं घन अंबर दव्बू ॥
पचु पारक पटनेर। सीम भष्वर ची अग्गर ॥
गुज्जरवै गरू छत्त। लिषे गोरी दिस कग्गर ॥ छं० ॥ ११७ ॥

घोड़े, चमर, पश्मीना आदि भेट दे कर शहाबुद्दीन के यहां भीमदेव का दूत भेजना।

कबित्त ॥ वचन बटी सो तुरग। चमर पसमी चैारंगा ॥
पंच घाट पंचास। अस्सि तंबोली षंगा ॥
उभय मत्त गजराज। सेन बलभद्र समानं ॥
लिषि कग्गर चालुक्क। बोलि सारँग मकवानं ॥
सालोभ अंगनन झूठ मन। चित उदार सची कचन ॥
इन दूत सुलच्छिन होचि न्टप। तव सुराज चप्पुच गचन ॥ छं० ॥११८॥

पत्र पढ़कर सुलतान ने कमान खींचकर कहा कि या तो मैं म्लेच्छों को मारूंगा या खुरसान ही में रहूंगा।

दूचा ॥ सुनि कग्गर गोरी गरुअ। कर षंची कम्मान ॥
कै भंजैां मेछान दल। कै रंजैां षुरसान ॥ छं० ॥ ११९ ॥

कबित्त ॥ षां ततार षुरसान। षान न्याजीषां रुस्तम ॥
षां पिरोज पाचार। बली निसुरत्ति जुद्ध जम ॥
तुंगीषा निरछुंति। अग्गवानी दल पानी ॥
है उजबक उज्जाक। रेच रष्पन मै दानी ॥
चालुक्क लिषे कग्गद जुबै। बषतवान दस्सन दुनम ॥
हंमीर मिले हंमीर वर। वर भीमानी भीम रम ॥ छं० ॥ १२० ॥

सुलतान ने कहा कि दान, खड्ग, विद्या और सम्पत्ति ये साझे में नहीं होते ।

दूहा ॥ कही बत्त सुरतान नै । जो' सारँग बर बीर ॥
दान खग्ग विद्या विभो । एनह बंदै सीर ॥ छं० ॥ १२१ ॥

अरिल्ल ॥ दानह षग्ग बिभोदी बंदै । लच्छि बीर पावंड उमंडै ॥
को अप्पै लच्छी परिमानं । मोहि आज परक्का चहुआनं ॥
छं० ॥ १२२ ॥

गाथा ॥ भूमी द्रवै सुलच्छी । बंका बीरां हूवं कियं भूमी ॥
नह बंकी धर कव्वं । बंक बीरांइं बंकियं होई ॥ छं० ॥ १२३ ॥

पृथ्वी वीरभोग्या है भीमदेव मुझसे क्या शेखी मारता है मैं उसे भी मारूंगा ॥

कवित्त ॥ बीर भोग वसुमती । बीर बंका अनुसरई ॥
बीर दान भोगवै । बीर षग्गह गुर करई ॥
अन्न पान रस द्रवै । लगै काइर नह अच्छी ॥
है षुर षग्गह धार । बीर भोगह बर अच्छी ॥
जंपै न बीर सारंगतं । भोरा नाम अभंग भर ॥
भुग्गवै कौन कौ भुग्गिहैं । करौं परक्का षग्गवर ॥ छं० ॥ १२४ ॥

स्लोक ॥ न कस्यापि कुले जाता न कस्य नरनारियम् ॥
हयखुर खड्ग धाराच । वीरभोगी वसुंधरा ॥ छं० ॥ १२५ ॥

यह सुनकर सारंगदेव मकवाना का क्रोध करके भीमदेव क़ी बड़ाई करना ।

दूहा ॥ सुनिय मत्त सारंगवर । कोहा देहा नेह ॥
दई दुहथ्थैं पिंजरै । हिंदू मेछन छेह ॥ छं० ॥ १२६ ॥

छंद भुजंगी ॥ न हिंदू न मेछं बरै काहि कोयं । बरै ताहि तायं रसं बीर भोयं ॥
कहै बत्त भोरं सुभोराति नामं । भज्यौ इक्क अब्बू लग्यो सीस तामं ॥ छं० ॥ १२७ ॥

शहाबुद्दीन का फिर कहना कि पहिले चौहान को मारूंगा पीछे भीमदेव चालुक का ।

कवित्त ॥ पुनि गज्जन वैसाहि । कहै भोरा भीमंदे ॥
धर पावंड निदान । बीर विद्यादिय बंदे ॥
दीहा होती मंभ्क । मोहि चहुआन चरक्का ॥
ता पच्छै गल्हवान । गल्ह करिहै धर धक्का ॥
पावंड डंड रखै नहीं । जिम्मीजर कंकर बरा ॥
संभरिय काल कंटक चनैं । तापाछैं गुज्जर धरा ॥ छं० ॥ १२८ ॥

मकवाना सुलतान की बात सुन बोला कि चालुक का दल जब चलता है तो काल कांपता है ।

कवित्त ॥ सुने सह सुलतान । बोल बासीठ बुसद्दे ॥
रस रसाल कोरी करकि । कर चोपि लुद्दद्दे ॥
भीमां सीं भारथ्थ । चाव लग्गे सुरतानं ॥
मुसलमान दीवान । बंक बोल्यौ मकवानं ॥
चालुक्क राद चालंत । काल कलह कुंडन करै ॥
मेवार अजैपुर गज्जनै । तीन राइ तिज्जर डरै ॥ छं० ॥ १२९ ॥

चालुक्य के आगे जालंधर, बंग, तिलंगी, कोंकन, कच्छ, परोट, मरहट्ठे आदि कोई नहीं ठहर सकते ।

कवित्त ॥ नहिं जालंधर बार । बंग चंगी न तिलंगी ॥
कुंकन कच्छ परोट । थट्ट सिंधू सरभंगी ॥
गवरि गवर गुज्जरी । सबर मरहठ अरु पंडै ॥
मुरि मरहठ नंदबार । राइ मालव बुन्न छंडै ॥
चामिली बार डर सिंधवर । सक्कहि न मंडन पग्ग ढुकि ॥
चालुक्क राइ चालंत दल । काल कलह मंडै न भुकि ॥ छं० ॥ ३० ॥

जिस भीमदेव ने बघेलों को जीता, आबू को तोड़ा और जादवों को हराया उसको जीतना सहज नहीं उसे ब्रह्मा ने अपने हाथ से बनाया है ।

कवित्त ॥ जिन जूना जंगाल। बाढ बाढेल उछही ॥
जिन आसावलि अंग। देव बाधेल पलही ॥
जिन भरि भोरा भीम। पाखि पंपी आसेरी ॥
जिन जोग बेग जहों। निकारि अब्बू अनसेरी ॥
मकवान बोलि अगवान सो। मकरि तास सम जुद्ध सचि ॥
ए भरनि भीम भंजन घरुण। अप्प कियो करतार रचि ॥ छं० ॥ १२१ ॥

सुनकर सुलतान की आंखे क्रोध से लाल हो गई और वह उसको मारने पर उद्यत हुआ।

कवित्त ॥ कलह न छंडै काल। देस पुब्बेस पुलंगी ॥
अग्निवान दषि प्रभा। वाद कूनारस मंगी ॥
मुसलमान दीवान। साह अग्गे इह बुल्यौ ॥
लरै चंपि चहुआन। काल घग्गर सं तुल्यौ ॥
सुनि श्रवन मग्ग रत्ते नयन। बयन साचि तत्ते तमसि ॥
जानै कि अग्गि सिंचिय सु घ्रत। ताम तेज चल्यो विहसि ॥
छं० ॥ १२२ ॥

कवित्त ॥ मद्पानी किं करै। किं जंपै मतिहीना ॥
किं वायस ना भषै। किं न कवि करै सुचीना ॥
अवध बाल किं कहै। पलह सों किं नह होई[1] ॥
पासवंत किं करै। छुधावंतह किं जोई ॥
किं करै काम अंती कठिन। किं न करै लोभी नवन ॥
किं करै न तसकर चप्पवर। अबुध इह घत्तह सुमन ॥ छं० ॥ १२३ ॥

वज़ीर ने समझाया कि दूत नहीं मारा जाता, इसमें बड़ा अयश होगा ॥

कवित्त ॥ रमन रोस सुरतान। चसम हाजुर फुरमानं ॥
बर वजीर बरजंत। ऐब लग्गै सुबिहानं ॥
अवध बसीठह भट्ट। नीति हिंदू तुरकानं ॥

(१) को. कृ. ए.-खलह निघटह किं न होई।

स्वामि सकल बोलंत । बघघ अह सथ्था षानं ॥
अल्लान आन षाषावदी । चल चलाल किज्जै गमन ॥
अनचल आलिल भैरवा । घलक षान षग्गघ चसन ॥ छं० ॥ १३४ ॥

छंद मोतीदाम ॥ घयं षग षत्तिय मत्त प्रमान । भयौ रस बीर चलाचल जान ॥
तमी तम लग्गि नभी नभ भान । उग्गै जनु बद्दल फुट्टि प्रमान ॥ छं० ॥ १३५ ॥

शहाबुद्दीन को महा क्रोध हुआ, एक सामंत ने वज़ीर से कहा कि तुम ठीक कहते हो पर यह कैसी गंवारों सी बात करता है।

रिसं रिस रत्त तमी तम नैन । उरं घन बीर सिरं लगि मैन ॥
हुकंम हजूर वजीर सुषान । दलं दल ग्रब्ब भई रस षान ॥ छं० ॥ १३६ ॥
वजीरन मझ्झि कियो बल साहि । लगी जनु विज्जल श्री घन चाहि ॥
करी करुना रस केलि सुचत्त । मगी वर साहि कमान अचित्त ॥ छं० ॥ १३७ ॥
बुल्यौ बर गामिय गुज्ज गवार । कहै सुरतानप सेन उवार ॥
टगट्टग चाहि रहै सब लोइ । दिष्यो धर तेज अदभ्भुत सोइ ॥ छं० ॥ १३८ ॥

यह सुन मकवाना को क्रोध आगया, उसने सामंत को एक हाथ मारा कि सिर जुदा हो गया ॥

छंद भुजंगी ॥ बढी बीर बझ्झी सुजझी अभत्ती । पर्यौ सीस अग्गै मनौ साहि मत्ती ॥
उठी छिच्छ उंचो रुधिरं छीन छीनं । मनौं बीर मत्ते सिरा जाल पीनं ॥ छं०॥१४०॥
घरी एक रवि मंडलं छिद्रकारी । तुटे कंध कामंध भौ जुद्ध भारी ॥ छं० ॥१४१॥

इस पर ऐसा हाहाकार मचगया।

छंद गीतमालती ॥ ढलकंत ढालैं, चंद्र सालैं, बंध चालैं, प्रब्बतं ॥
रस रसनि रागं, बहुल बागं, बीरजागं, उवेतं ॥
उर्ी न पावै, देव गावै, सार, भावै बीरयं ॥
मकवान थानं, भेदि भानं, करि प्रमानं, धीरयं ॥ छं० ॥ १४२ ॥
बहु मंत कंतिय, भंति भंतिय, दंत दंतिब, उभ्भरं ॥
मग नग निमानं, बुद्धि दानं, निव पारानं नीसरं ॥ छं ॥ १४३ ॥

मकवान का अपने चित्त में सुलतान के संदेसा न मानने पर विचार ।

दूहा ॥ कही चित्त मकवान नैं । नह मंनी सुरतान ॥
अप्पन अप्पन सथ्थ सों । बल मंडै चहुआन ॥ छं० ॥ १४४ ॥

कवित्त ॥ करि सिहानी आन । बंग जे सुन चित हिंदू ॥
ते हिंदू मुष निंद । निगम निंदै गुन जिंदू ॥
इक बार सुनि बंग । सहस पातक रजपूतन ॥
नरकाह सोधि नरकह । कवन कढ्ढै न्रक पुत्तन ॥
रजपूत मुक्ति[1] पग चिंत्तधरि । बिधि बिनान यों न्रम्मयौ ॥
कलि जाहि मिटै भवि मंडलहि । पै न मिटै तन अम्मयौ ॥ छं० ॥ १४५॥

इधर चालुक्क राय का अपनी सेना सजना ॥

गाथा ॥ सजी सेन असुरायं । उप्पंमं चंद देवियं बरयं ॥
जानिज्जै परमानं । कै षल्लियं बद्दलं साहिं ॥ छं० ॥ १४६ ॥

कवित्त ॥ बद्दल दल बल उमरि ॥ सेन धुंमर घट घुम्मरि ॥
सयन बयन जकि नयन । मयन मत्ते जनु धुंमरि ॥
अरि अरिष्ट सम दिष्ट । धिष्ट धारन घर धुम्मर ॥
अग्गि झाल बिन धूम । इसे दष्षिय गज झुम्मर ॥
चालुक्क राइ सज्जे सयन । हय हिंमार न उच्छरै ॥
सिद्धान बंस सिद्धान गनि । सिद्ध इष्ट गुन बिस्तरै ॥ छं० ॥ १४७ ॥

उधर शहाबुद्दीन ने तो अपने सामंत के मरने पर क्रोध कर मकवान को एक तीर मारा और मकवान ने हैजम हुजाब के सिर में एक तेग ऐसी मारी कि दोनों गिर गए ।

कवित्त ॥ सुनि साहाब वजीर । बोलि बल की अप्पानों ॥
कक्कस कर में वर । कमान तानी लगि कानों ॥
कल कुट्टी कीतीर । चलत सारंग सुषानों ॥
मार मार उच्चार । तेग कढ्ढी मकवानों ॥

(१) को० उ० ज-पुत्ति ।

चैजम हुजाब सिर उच्छटी । बीजलि कै अंबर भरी ॥
कंनांन भंजि वुप्परि पला । मही अग्गि उच्छटी परी ॥ छं० ॥ १४८ ॥

कवित्त ॥ चैजम धुकि धर पर्यौ । पर्यौ मार्भी मकवानां ॥
रस रसाल लुहीयं[1] । और लग्गिय सुरताना ॥
गयौ साधि औसाफ़ । साप भग्गिय दुनियाना ॥
बुरे बुरौ सब कोइ । कथन संजम सुनियाना ॥
करतार हथ्थ केती कला । कियो सुलभ्भै अप्पना ॥
पावंग देव मही मिचै । दीदे देषि सु सुप्पना ॥ छं० ॥ १४९ ॥

भीमदेव ने अपने दूत का माराजाना सुन बड़ा क्रोध किया और ग़ज़नी पर चढ़ाई के लिये वह सेना सजने लगा ।

कवित्त ॥ सुन्यौ भीमर बध्यो । बसीठ षेचै पज्जीनां ॥
करि सिद्धानिय आन । भेट मेछाइन दीनां ॥
बंग सह कंनान । जीव जंना जन बट्टौ ॥
असी सहस्स सेना । सजन गोरी जर कट्टौ ॥
ढल्लांन मलंढी चाल जनु । असम समुदसेना तिरिय ॥
मय मोह छंडि रत्ते विषम । दह दिवान गुन दुत्तरिय ॥ छं० ॥ १५० ॥

छंद पारक ॥ रत्तानी बानी यूबानी । नीलानी सोहैं सावनी ॥
भुरवानी बानी बोलंदे । सिंधानी संकर तोलंदे ॥
सोरट्टी बह निबहायं । धुरम जहूरहु बहायं ॥
अग्गिबान कमान सस्त्रायं । सर सस्त्र कमा मय·पंचायं ॥
छं० ॥ १५१[2] ॥

दूहा ॥ ढल्लानं चल्लौ चलं । चौरा मैंच बदंत ॥
भोरानं भुम उप्परै । मै कुद्दा मै मंत ॥ छं० ॥ १५२ ॥

दूहा ॥ घोरानं छर्प्प छतं । मोरानं मंध्यान ॥
सारस्रौ पष्पर जरी । हेमानी गत्तान ॥ छं० ॥ १५३ ॥

---

(१) मो–लुट्टीय

(२) यह छन्द मो· और क· प्रतियों में नहीं है ।

सेना सजने पर आग लगने से अपशकुन होना ।

कवित्त ॥ नीसा नीनी जुष । धाम लग्गी चालुक्कां ॥

चक्कारी चाकंत । सथ्थ सत्तरि वै भुक्कां ॥

गोम गज्ज उक्करीय । धाम धर कंपि चलक्किय ॥

नाग भाग सत दीय । नीय नन कंप सलक्किय ॥

प्रज्जाल माल हिंचान छलि । कलि कलाप कलि उल्लटिय ॥

पहु राइ पिट्ठ किलंग छिति । नित नियंग सुर उच्छटिय ॥ छं० ॥ १५४ ।

दूहा ॥ बोली [1] बंधनि चाय धन । पंमारे चहुआन ।

वीरं दाह बसीठिया । है हिंदू सुरतान ॥ छं० ॥ १५५ ॥

दूहा ॥ जित्ती धर चहुआन की । जित्ती [2] ताइ तुषार ॥

परठी पट्टनवै परत । मग्गां दान सवार ॥ छं० ॥ १५६ ॥

भीमदेव का प्रतिज्ञा करना कि जो खुरासान के राज्य पर शहाबुद्दीन रहै तो मेरा नाम नहीं ।

छंद भुजंगी ॥ करी राज भोरा प्रतंग्या प्रमानं । चखे बोल अप्पे सु उंचेष मानं ॥

रचै साहि गोरी षुरासान थानं । नहीं नाम चालुक्क भीमं परानं ॥ छं०॥१५७॥

भख्यौ नाम रजपूत सू बंभ लहौं । हतो दोष दंदं दहै जौ न कहौं ॥

धरैं ध्यान कब्बी जुलै चित्त मंझै । परे त्वक्क आअत बुझ्झै न सुझ्झै ॥ छं०॥१५८॥

जिते बाल उपबैन झूठे उचारैं । धरै नाम कब्बी न सत्तं पचारैं ॥

हुमं [3] बीर बीरं कहे भीमराजं । गजे गुंग नीसाम ईसान गाजं ॥ छं० ॥ १५९ ।

उधर शहाबुद्दीन ने अपनी सेना सजी ।

कवित्त ॥ गज्जनेस गोरीय । सेन हय गय अपसज्जिय ॥

षां ततार षुरसान । मीर माछी पष रज्जिय ॥

हय गय्य नर असुरान । सुनी चावद्दिस बत्तं ॥

पट्टनवै पट्टंन । बीर गोरी जुध मत्तं ॥

मैमंत राज प्रथिराज पर । अब्बू वै ऊपर करै ॥

---

(१) क्र० को—बोलां ।

(२) मो—जित्तीक ।

(३) मो—हुमं ।

सुरतान सेज सज्जे सुने। धर गिरजल रज उच्छरै ॥ छं० ॥ १६० ॥

सुलतान और चालुक के अपनी अपनी सेना सजाने पर चहुआन का भी दिल्ली और नागौरादि में अपनी सेना सजाना।

दूहा ॥ ढिल्ली वै सेना सजय। रंजन रन रावत्त ॥
मधुर मधुध्वनि धानवर। दिय कग्गद गुन मत्त ॥ छं० ॥ १६१ ॥

छंद अनूपाल ॥ रावत्त रत्त दिसान। सजि चालि[1] सेन सुरतान ॥
सारुंड गोरिय आइ। बहु सेन असेष[2] सुजाइ ॥ छं० ॥ १६२ ॥
प्रब्बाह सेन समुद्द। मिटि गई छित्ति सरद्द ॥
नागौर ढिल्लिय राज। पज्जार कट्ठ विराज ॥ छं० ॥ १६३ ॥
सुभ च्यारि सहस प्रमान। पट उभै सेना मान ॥
चालुक्क भोरा भीम। को काल चंपै सीम ॥
बर करै तमकत रीस। तिहि जगैं जग्गि गिरीस ॥
सोभत्ति चालुक राइ। मनु वीर कच्छि प्रवाइ ॥ छं० ॥ १६४ ॥

कैमास का मति उपजाना कि ऐसे में अपने दोनों शत्रुओं से लड़ने का अच्छा अवसर है।

कवित्त ॥ चाहुआन सामंत। मंत कैमास उपाइय ॥
बंदि लग्ग हुंकार। बंध बंधान उचाइय
दस गुंनी बल देषि। साजि साधन सु सुगंधष ॥
दुहु मुष्पांची लग्गि। बीच चंप्यौ सुरदंगष[3] ॥
गोरीय एक गुज्जर धनी। मुष विचिच धनि संभरी ॥
पज्जार दून द्वादस भरह। दो मिलग्गि दुहु दिसि बुरी ॥ छं० ॥ १६५ ॥
कवित्त ॥ सारुंडे साहाब। दीन सुरतान विलग्गा ॥

---

(१) कृ० मो० को–चलिय।
(२) कृ को०–लष्ष। मो–सलष
(३) ए–अरंगी।

सोभत्ती भर भीम। राव लष्षह असदग्गा ॥
नागौर सामंत। ईस चहुआन पिथाई ॥
अस पति गुज्जर पत्ती। जानि म्रदंग बजाई ॥
दो बीच हजारी अट्ठ चव। ग्रेहा मंत परठ्ठयौ ॥
चामंड राइ कैमास सम। षीची षग्ग बरठ्ठयौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥

कैमास की उपजाई मति के निश्चय के लिये नागौर में मता मंडना अर्थात् सब सामंतों की सभा होना उसमें कैमासादि का अपना अपना विचार प्रकाश करना।

कवित्त ॥ मतौ मंडि नागौर। राइ कैमास बिचारं ॥
दल सम्नह सुरतान। मिल्यौ नाहर परिहारं ॥
सोभत्ती चालुक्क। राइ भोरा बढि लग्गा ॥
तुक्क अवाज सजि जूह। जियन कज्जै नह भग्गा ॥
चामंड जैत उच्चारयौ। बाचारो[1] लंबी सुभुअ ॥
सुरतान सेन[2] किनक[3] कहै। हम ठेलैं षुरसान धुअ ॥ छं० ॥ १६७ ॥

उसमें चामंड राव और जैत राव की प्रतिज्ञा।

कवित्त ॥ कचौ[4] तौ बंधौ साहि। धाय चालुक्क बिडारौं ॥
हम स्वामि[5] काज सामंत। मरन तन तिनुक बिचारौं ॥
अप्प अंग सुज्जीव[6]। पुत्र बंधव षिजि भानं ॥
चक्कवर्ति तिन मान। बीत रागी करि जानं ॥
अंतरौ एक कैमास सुनि। मरन तुच्छ मारन बहुल ॥
उन असमो तन आस हम। निरगुन ए वे सहित मल ॥ छं० ॥ १६८ ॥

(१) कृ० को०—बाबारो।
(२) कृ० को०—"सेन" नहीं है।
(३) कृ० को०—"किनक" की जगह "किनकक" है
(४) मो—कहै।
(५) कृ० को—सामि
(६) मो—"अप्प आग मे सुजीव"।

बग्गरी अर्थात् देव राव बग्गरी का कथन ।

कवित्त ॥ पच्छिमै भंजै भीम । कहिग बग्गरी विसाले ॥
मदनसीह[1] परिहार । देव दुज्जर मुंछाले ॥
राज दुअं जद जद्दव । जीभ जहो जा मानिय ॥
ओ[2] छाही सारंग । देव पट्ट पर थानिय ॥
चालुक्क चंपि धूनी धरा । सो सुरतानह संभरी ॥
मेदलह धार बधाइयां । बोल उचा उंचां करी[3] ॥ छं० ॥ १६९ ॥

राव बड़ गुज्जर का कथन ।

कवित्त ॥ रा प्रथिराज प्रसंग । राव बोले बड़ गुज्जर ॥
तिन तोली तरवारि । साह उप्पर दल दुज्जर[4] ॥
कैमासै गढ सौंपि । कह्यौ कोटां रा रष्षन ॥
तुं मंत्री सस्त्रधार । भार भारी भर[5] भष्षन ॥
आलोच[6] अधारी संभरिय । मति बिद्दत्त ते बत्त हुष्ष[7] ॥
आरीर हजारी पंच सें । चाहुआन घल घत[8] तुष्ष ॥ छं ॥ १७० ॥

लोहाना का आगे होना और सेना ले जहां चाहुवान सेना फेरता था वहां जा मिलना ।

कवित्त ॥ लोहानौ भयौ अग्ग । तोन सै पंच चलक्किय ॥
पंच हजारह सेन । एक दस अट्ठह भेरिय ॥
उच्छंगी सनाह । टारि ते सुभट सनेरिय ॥
मिले जाय जहां अग्ग * । फौज चहुआन सुफेरिय ॥
उत्तंग ढाल बैरष बनिय । पज्जूनह सो टारियह ॥
बस पत्ति सेन नष पग्ग कहि । सावन सार सुनत्त यह ॥ छं ॥ १७१

---

(१) कृ० को०—मदनसिंह । (२) मो—जहा ।
(३) मो—' उचा उंचा भरी ' की जगह ' बाल उचाए इंभरी ।
(४) को० कृ—उज्जर । (५) कृ० को—हर ।
(६) मो०—आलोप ।
(७) मो०—" मति बिद्दत ते बत्त हुष " की जगह—" मत्त बहत्तति बत्त हुष "
(८) मो.—घत्त ।

सामंतो का मत हो जाने पर चाहुवान ने अपनी सेना के दो भाग किए, एक चामुंड राव जैतसी के साथ सुलतान पर चढ़ा एक ओर दूसरा चालुक्क भीम देव पर ।

कवित्त ॥ मतौ मंडि सामंत । सेन बंटे चहुआनं ॥
जैतसि राव चमुंड । मुक्कि कैमासचथानं ॥
अड्डु ए संबोधि । चंपि चालुक्क मुष लग्गा ॥
जित्ते मिस्से संभूरी । जोग सद्दे अप भग्गा ॥
बंटई फौज प्रथिराज भर । अर्क बार राका चरी ॥
बर लाज लई धर संभरी । संभरि वच कंधच धरी ॥ छं० ॥ १७२ ॥

दुओरी चढाइयों की सेना की शोभा का वर्णन ॥

छंद भुजंगी ॥ बंटी फौज दूनों चढ़े चाहुआनं । भरं स्वामि दूनों भरे चित्त थानं ॥
तिनं की उपंमा कवी चंद पढ्ढे । मनो कर्क अरु मक्र निसिदीव बढ्ढे ॥
छं० ॥ १७३ ॥

दुई इक्क मझ्झैं उमझ्झै नसाई । करी संभरी अत्थ दूनो दुधाई ॥
धितं मुष्ष उंचं दिपै चाहुआनं । मनौ अंमरी बाल उग्गो बिभानं ॥
छं० ॥ १७४ ॥

फिरै उंच तेजं तुरं गंति ताजी । जिनै[1] देष्षै नैन गत्यै[2] न लाजी ॥
षचे बाग उट्ठे चुटक्कै चरेवं । मनौ मंडियं मौज कोकी परेवं ॥ छं० ॥ १७५ ॥
पहू पाइ मंडं तनं चित्त इंषी[3] । मनौ पातुरं चातुरं तं विसंषी ॥
कवी चंद ओपंम दंती करत्ती । मनौ कज्जलं कूट धावै धरत्ती ॥ छं०॥१७६॥
षिनं[4] उप्परं ढाल नेजे सुरंगं । तिनं ओपमा चंद चिंती सुचंगं ॥
जरे पाटनारी विचैं हेम गुंथे । मनो षज्जुरी केलि जुग मेर मंथे ॥ छं० ॥१७७॥
ठनक्कंत घंटा चलैं अंग मोरैं । मनौं कूलटा हैल चित चाहि चोरैं ॥

(१) मो०–तिनै ।
(२) इ० को० मो–गति चैन ॥
(३) मो.–चषी ।
(४) इ., षिनं । को. मो.–तिनं ।

भ्रमैं दंत दंती सुनेनं[1] बिराजै । मनौं बिज्ज बग्गा नभं मध्य छाजै[2] ॥ छं० ॥ १७८॥
मुषं सूर सूरं समुच्छी बिराजै । तिनं चंद बीजं गतं[3] देषि लाजै ॥
पटे बीय पासं उपंमा सुबब्बो । मनौं राह बीयं रनं [4]चंपि रब्बी ॥छं०॥१७९॥
सजे आवधं सूर छत्तीस छब्बे । मनौं राह रूपं ससी कोटी दब्बे[5] ॥
करी सेन गोनं निसानं दवानं । बढी बेय बाजू सरित्ता किजानं ॥छं०॥१८०॥
गह्यौ मुष्ष गोरी प्रिथीराज राजं । मनौ राह अरु भांन मिलि जुद्ध साजं ॥
मुषं रोकि सुर्तान को चाहुआनं । उतै रोकि कैमास भोरा मुहानं ॥
छं० ॥ १८१ ॥

दूहा ॥ षीची षग्ग परट्टि बर । बर भीमंग चालुक्क ॥
तिहुं दिस तिहुं बर धाइया । ज्यौं पच्छिमी आरक्क ॥ छं० ॥ १८२ ॥

कुंडलिया ॥ मुच्छ उच्छटिय बंक भरि । हसि कपोल भय लोल ॥
जौं जंबुक बर घत्ति चै । तौ सिंघानै तोल ॥
तौ सिंघानै तोल । लोल लंबी चल्लि बाहं ॥
मनौं बीर सौ अंग । उठे सिर गंग प्रबाहं ॥
नन उतंग आरत्त । मत्त आरत्त सुदिट्ठी ॥
मानौ चालुक राय । देव दूसासन उट्ठी ॥ छं० ॥ १८३ ॥

इधर सुरतान का मुख अर्थात् मुहाना रोक और उधर भीम से लड़ने के लिये चौहान का नागौर जाना ॥

दूहा ॥ रोकि मुष्ष सुरतान को । चहुवान दै बान ॥
बर बसीठ भोरा सुभट । चलि नागौर निथान ॥छं० ॥ १८४ ॥

छं० बिअष्षरी ॥ नागौरैं चहुआन पिथाई । चंद बिअष्षर छंदह गाई ॥
सोभती चालुक मुष लग्गा । नागौरैं गोरी दल षग्गा ॥ छं० ॥ १८५ ॥
असपति गजपति नरपति बीरं । धाए तिहुं दिसि सज्ज सरीरं ॥
ज्यौं कुरषेत किस्न मति कीनी । भारथ बेन सेन मति भीनी ॥ छं० ॥ १८६ ॥

(१) को. कृ. मो.–सनेनं । (२) मो.–साजै ।
(३) मो.–गती । (४) मो.–रतं ।
(५) मो–दब्बे ।

सामदान करि भेद सुदंडं। बंधे बर चहुआन विषंडं ॥
जिन चहुआन परहर लीनी। बहुत दोष देवत्तन भीनी ॥ छं० ॥ १८७ ॥
सुबर बीर कीनो बर अंसं। किम्न सुगोकुल मथुरा कंसं ॥
गोरी वै मद पान उमत्ता। तिन बसीठ हंने बिन मत्ता ॥ छं० ॥ १८८ ॥
षिझ चालुक्क निसान बजाए। दल सन्नह सजि दुझ्झर धाए ॥
दुहुं बंध्यौ नर बैर प्रमानं। उत गौरी सम्हौ चहुआनं ॥ छं० ॥ १८९ ॥
चालुक मतौ बिचार न कीनौ। अमर सीह बोल्यौ मति झीनौ ॥
मैहूं भट्ट सुबंभन लीला। करौ मंच बर मंच अकीला ॥ छं० ॥ १९० ॥
जुद्ध मंत बंधौ सुरतानं। अरु गोरीसाहौ[1] चहुआनं ॥
छल बल करि कैमासह बंधौ। सुचि सुमंच सुचि क्रंम[2] विरुधौ ॥ छं० ॥ १९१ ॥
कवित्त ॥ मिलि धर भीमंगराव। चाव पत्तौ पति गुज्जर ॥
विषम बैर उद्धार। सार वीरत्त सुदुज्जर[3] ॥
चाहुआन सुरतान। काम कंदल क्रत लग्गं ॥
देवंग बहल सीम। मार जरजीज सुजग्गं ॥
कलमलिय उअर[4] परताप तन। क्षुध पियास निद्रा गमिय ॥
अनुराग तरुनि षल षेध जिय। दुअ दुराह चालुक दमिय ॥ छं० ॥ १९२ ॥
कवित्त ॥ सोझत्ती द्वै गै उभार। दल अरि संपत्तौ ॥
सुभर सार भीमंग। गज्जि गज्जन अतिरत्तौ[5] ॥
आयस रहसि विचार। मुष्य मंची आभासिय ॥
तिहि निसाह परधान। अंध लच्छी उप्पासिय[6] ॥
पामार रांम रन उद्धरन। गुर गुरीठ पैरंग गुर ॥
रानिंग झाल षग झालि नर[7]। बीर देव बघ्घेल धुर ॥ छं० ॥ १९३ ॥

---

(१) को॰ कृ॰ मो॰—सम्हौ।
(२) मो॰—"सुचि सुमन्त्र सुचि क्रम विरुधौ"— की जगह "सुचि सुक्रंम सुचि मंच विरुद्धौ।"
(३) मो॰—उज्जर।
(४) मो॰—अरि।
(५) मो॰—असि असौ।
(६) मो॰—उसासिय।
(७) कृ॰ को॰ मो॰—बल।

कवित्त ॥ सोढा सारँग देव । गंग डाभी सु गुज्जगुर ॥
बर चाविग्ग[1] सुदेव । धरि बाघेल धंमधुर[2] ॥
अमर सीह सेवरा । बीर विद्या बल जासं ॥
मिच अह मिलि काज । चिंत चिंतिय चित सारं ॥
उच्चरै गरुव भीमंग तब । करौ मंच उच्चार चित ॥
पंमार सरन चहुआन गय । लहौ र्ष र सगपन्न चित ॥ छं० ॥ १९४ ॥

सब सामंतों का गुर्जर नरेश से कहना ॥

छंद पद्धरी ॥ सम कही सबन गुज्जर नरेस । चिंतौ सुसब्ब कारन सुरेस ॥
पम्मार सरन चहुआन रष्य । औगुन अनेक अष्येव नष्य[3] ॥ छं० ॥ १९५ ॥
सादाव दीन सारंग सद्धि । उभ्भरे बोय बोल्यौ विरुद्ध ॥
चिंतेव चित्त सज्जौ समंत । सो कज्ज लज्ज मनकंध संत ॥ छं० ॥ १९६ ॥
उच्चरिग नाम सारंग देव । पुच्छौ सुराव पुरंभ भेव ॥
सनमध सगप्पन चाहुआन । उच्चरिग मंत चिंतौ उरान ॥ छं० ॥ १९७ ॥
जै जंपि नाम पैरंभ राव । बूझै न मंत कै अंम ठाव ॥
अपराध कौन पम्मार कीन । ताहन्य मदोदरि तुमहि दीन ॥ छं० ॥ १९८ ॥
अब रचौ बुद्धि सो राज सार । सब होइ सोइ लग्गी उच्चार ॥
उच्चरिग भाल रोनिंग नाम । गत सोच[4] न कीजै पत्त काम ॥ छं० ॥ १९९ ॥
पतिसाह बैर बंध्यौ बिराह । संमाज छूह मनु सिर गजाह ॥
बघेल सुजंपै बीर देव । अनभूत भेव कारज्ज एव ॥ छं० ॥ २०० ॥
सनमंध कुंवर कचरा सुकाज । ता सोंह सगप्पन संधि[5] लाज ॥
तुम करहु संधि सम चाहुआन । मिलि जुरौ जुद्ध सुरतान टान ॥ छं० ॥ २०१ ॥
इन भंजि चित्त गुज्जर नरेस । चिति काज किंत्ति बहु असेस ॥
सेवरा नाम नमि अमरसीह । तुम कही बत्त सांची[6] सलीह ॥ छं० ॥ २०२ ॥

---

(१) मो०--बारचिक ।
(२) मो०--धम्मंधुर ।
(३) मो०--तष ।
(४) मो०--चीत ।
(५) मो०--बंधि ।
(६) मो०--संची ।

जजि [1] बचन षेद भीमंग राव । चहुआन थान उच्चयौ दाव ॥
बंधिये बंध उत्तंग साव । उध [2] गज्ज गाह प्रथिराज राव ॥ छं० ॥ २०३ ॥
प्रथिराज काज कैमास अथ्थ [3] । सामंत सूर सब तास सथ्थ [4] ॥
करि अथ्थ माहि विद्या अभूत । अति दुष्ट अग्यकारी सबूत ॥ छं० ॥ २०४ ॥
बसि करौ जाइ दाहिम सोइ । चहुआन काज बूझै न जोइ ॥
बसि करौं सब्ब सामंत सूर । बल द्रव्य दुष्ट [5] अथ्थीस पूर ॥ छं० ॥ २०५ ॥
उद्धरौं आंनि नागोर देस । भीमंग बढ्ढि कित्ती असेस ॥
प्रथिराज आइ लग्गौ [6] सुपाइ । सामंत सूर भर सथ्थ आइ ॥ छं० ॥ २०६ ॥
बसि करौं सब्ब दल सजौं सार । भंजौं सुजाइ साहाब भार ॥
सुनि षेत जित्त गज्जन नरिंद । जस बढै पहुमि उद्धार इंद ॥ छं० ॥ २०७ ॥
भनि सुनी भीम सब अमरसीह । भल भलो पढ्ढि सब भषी लीह ॥
नागौर अमर सज्ज्यो पयांन । निरमत्त सथ्थ सज्जे सथान ॥ छं० ॥ २०८ ॥
भैरव सुभट्ट बंभन सुलील । चारंन चंद्र नंदन छबील [7] ॥
लिय द्रव्य सब्ब सथ्थां सुभार । नागौर चले मति मंच तार ॥ छं० ॥ २०९ ॥

फिर निशान का बजना और अमरसीह का दाहिम को बांधने का पाषंड करना ।

दूहा ॥ इह कहि गहि बज्जन बिलसि । बज्जि निसान निघाय ।
करि पाषंड सुअमर बर । बंधन दाहिमराय ॥ छं० ॥ २१० ॥

पाटरिया रान का कहना कि कैमास को छल करके बांधूंगा ।

अरिल्ल ॥ छल करि बर बंधौ कैमासं । सजौ सेन सुरतानह पासं ॥
बोलि [8] रान पाटरिया बीरं । झाला अनी साधि सो धीरं ॥ छं० ॥ २११ ॥

(१) मो०—लजि ।
(२) मो०—" उधगज्जगाह " की जगह " उधंग जंग " ।
(३) मो० कृ०—अथि । (४) मो०—सथि ।
(५) कृ० को०—द्रुष्ट । (६) मो०—लग्गे ।
(७) को० कृ०—सुबील । (८) मो०—बोलीय ।

अमरसिंह सेवरा के मन्त्रबल से कैमास को वश में करने का निश्चय करना।

कवित्त ॥ बर पट्टन बैरांन। तेन [1] झाला अधिकारिय ॥
मतो मंडि चालुक्क[2]। अमर सेवर सुधि भारिय ॥
भैरों भट्ट प्रमान। बुद्धि काश्यप अधिकारिय ॥
सो मत्तें सो मत्त। बुद्धि सेनह बिचारिय ॥
दल मलहि सेंन चहुआन कैा। अरु भंजै सुरतान दल ॥
मंत्री सराज कैमास बर। साम दाम [3] कीजै सुकल ॥ छं० ॥ २१२ ॥

चालुक्यराज की सेना की चढ़ाई और अमरसिंह का मन्त्र आरम्भ करना।

गाथा ॥ चढियं चालुक सेनं। चहुआनं साधनं भीरं ॥
दिसि कैमास प्रमानं। अमरसिंह मुक्कियं मंचं ॥ छं० ॥ २१३ ॥

अमरसिंह के मन्त्रबल की प्रशंसा।

कवित्त ॥ जिन अमरसि सेवरा। आनि देवंग परब्बत ॥
जिन अमरसि सेवरा। द्रव्य आन्यौ अनिअब्बत ॥
जिन अमरसि सेवरा। चंद मावसि उग्गाइय ॥
जिन अमरसि सेवरा। पदमनि मान रिझाइय ॥
षट उभय कोस उद्योत हुअ। विप्रसीस मुंडिय सकल ॥
चित मंत भ्रंम आभ्रम बर। सुबर मंच किज्जै सकल ॥ छं० ॥ २१४ ॥

छंद मोदक ॥ इति मोदक छंदह बंध गतो। जरि सत्त सुभंतिय बंधमती ॥
दिसि अट्ठ दुरी दुरितान कला। चित मुक्कलि च्यार बसीठ बला ॥
छं० ॥ २१५ ॥
जिन मंच बसीठन चित्त करं। नव निक्कर नेह अब्रत्तधरं ॥
षिति बीरनि बीरय मंच मुषं। तिन रावन राज निब्रत्त रुषं ॥
छं० ॥ २१६ ॥

(१) मो०—तेग।
(२) मो०—"मतो मंडि चालुक्क" की जगह "सो मने चालुक" है।
(३) कृ० को० मो०—दांन।

छंद विअष्षरी । भैरों भट्ट सुबंभन लीला । चारन चंद्रानन्द छबीला ॥
मह्तम अमरसीह गुणग्याता[1] । साम दाम[2] भेदं सुविधाता ॥ छं० ॥ २१७॥
जिन अमरसी[3] अमरि रिझाइय । चालुक सेन सुमंच बढाइय ॥
मावस चंद जेन परगास्यौ । जेन[4] जैन ध्रंमह अभ्यास्यौ ॥ छं० ॥ २१८ ॥
सिंगी हेम भरे नग पासं । लच्छि प्रसंनिय दारिद नासं ॥
भोरा राय भुअंग वजोरं । भौ प्रसंन सुरसुरी सुनीरं ॥ छं० ॥ २१९ ॥
बाद जीति[5] सिर विप्र मुंडाइय । कुंभ थप्पि जिन साष भराइय ॥
बोल्यौ कुंभ कलक्कल बानी । नीर मध्य दुरगा सुसमानी ॥छं०॥२२० ॥
इष्ट गंठि तहां दिष्ट पसारिय । वेद उथापिक रैभ विचारिय ॥
रथ षटधात हेमसिर कच्चं । चढि नागौर अमरसी मंचं ॥छं० ॥ २२१ ॥
बर चौरासी सथ्थसु आसं । छल्लन राजमहि मंच कैमासं ॥
है दुज धरत नील पट मंजर । रतन हेम नग मुत्ति सुपंजर ॥छं०॥२२२॥
घट में कहै सुकीर प्रगासै । सुनत सुवीर ध्रंम भर नासै ॥
जै भर धर चालुक्क प्रजाए । अमर महातम बुद्धि रिझाए ॥ छं० ॥ २२३ ॥
इन विधि नर नागौर सँपत्ते । हीह निसा गुन करे सुरत्ते ॥
छल छंदै बंदे कर भूपन । लच्छि केर करनी कर रुपन ॥ छं० ॥२२४ ॥

कैमास के यहां सन्धि का पत्र लेकर वहां का भाट भेजा गया उसने चालुक्य की बड़ाई करके पत्र दिया।

दल कैमास भई सुअवाजं । भोरा राइ वसीठन साजं ॥
चेटक चंचल नंचल कानं । आर भटी देषे सव्वानं ॥ छं० ॥ २२५ ॥
भेटि भट्ट कैमास कलापं । आदर अधिक कियो सुअलापं ॥
मुत्तिय माला कंठ सुबानी । भोला राव दई सहनानी ॥ छं० ॥ २२६ ॥
पचिय[6] पच पढै परवानं । वीर मंच पूजा सह दानं ॥ छं० ॥ २२७ ॥

---

(१) क्ट० को०—अमर सिंह महाग्याता ।
(२) क्ट० को० मो०—दांन ।
(३) क्ट० को० मो०—अमरसिंह ।
(४) क्ट० को०—जिने ।
(५) क्ट० को०—नीति ।
(६) मो०—पत्री ।

छंद नाराच ॥ कलप्प केलि मेलि मंद चंद चारु पट्टनं ।
तमेग दुग्ग सुग्ग सुभ्भ उभ्भ बन्ध कट्टनं ॥
नरिंद नील सील संच बंचयं भुअप्पती ।
चरित्त चारु चालुकं नरिंद को नरप्पती ॥ छं० ॥ २२८ ॥

गाथा ॥ न को न को नरप्पती । पत्ती चालुक्क राइयो सोसा[1] ॥
किं चहुवान सुमंती । कैमासं जानयं बीरं ॥ छं० ॥ २२९ ॥

चालुक्य राज का पत्र ।

साटक ॥ स्वस्ति श्री जय भूप भूपति भयं, भीमं भयं वर्त्तते ॥
पाया पाच लवंत[2] देव विनयो, मंत्रान् मन्त्री नष्यते ॥
षेमं कोटिव षग्ग षग्ग वलयं, देवा चरित्तं भयं ॥
द्रारिद्रं यद ईव आनन रयो, द्रिष्टा स या पावयं ॥ छं० ॥ २३० ॥

साटक ॥ जं तं वारिधि बंधनेव चलयं भीमं भयानं बलं ॥
कल्पं केलि मरोरि मारव दिसा, बध्यं पुरं बन्दरं ॥
दीवं देवय देव चब्बस पुरं, चस्सी छुजावं पुरं ॥
सोयं भीम वलिष्ट मध्य वलयं, लेनं कलं दुस्तरं ॥ छं० ॥ २३१ ॥

गाथा ॥ इंदो वारिधि बंधो । वारिधि मद्दे[3] सुइंद्रनं द्रिष्टा ॥
वारिधि अंचन इंदो । सा भीमं रूपयं भूपं ॥ छं० ॥ २३२ ॥

गाथा ॥ भूपति भीम नरिंदं । भूभारं काज अवतारं ॥
तुं कैमास न जानं । तो नं तो छंडि चहुवानं ॥ छं० ॥ २३३ ॥

छंद पारक ॥ हंमानी[4] बानी पुब्बानी । नीलानी सोरं सब्बानी ॥
मुरबानी बानी बोलंदे । सिंधानी सकलं तोलंदे ॥
सोरट्ठी थट्टी निघटेयं । घर बंजहु रावर वट्टेयं ॥ छं० ॥ २३४ ॥

छंद चोटक ॥ आगे वांनक वांनक सस्तकयं । सब सस्तक मंचक मंच तयं ॥छं०॥२३५॥

---

(१) मो० कृ० को०--सरसा ।

(२) मो "पाचल" की जगह "एतल" ।

(३) मो० च ।

(४) मो०--घानी ।

अपनी बड़ाई लिखकर एक स्त्री का चित्र लिखा कि यह स्त्री लो और कई ग्राम और धन देंगे तुम आनन्द करो। चित्र देखकर कैमास का मोहित हो जाना।

अरिल्ल ॥ लिष्यौ चित्र पुत्तल परिमानं। ज्यों कैमास भयौ बसि प्रानं ॥
बायस सें पंषा कर डुल्ले। त्यों कैमास मंत्रबल भुल्ले ॥ छं० ॥ २३६ ॥

कवित्त ॥ गुज्जर वैधर देहि। देइ धोरहरा ग्रामं ॥
मति संपूर कैमास। देइ बहु द्रव्य सुनामं ॥
मध्य पट्टरजं मध्य। द्रव्य आवै बंदर बर ॥
सो अप्पौ चालुक्क। करै कैमास इन्द्र घर ॥
को सुनै कहै को अंपि को। को उत्तर तिन देइ फिरि ॥
कैमास मंत्र किन्नौ वसै। लिष्यौ चित्र पुत्तलि लहरि ॥ छं० ॥ २३७ ॥

अरिल्ल ॥ साषि भरै घट होइ प्रगासै। सुर नर नागनि[1] कैातिग आसै ॥
सब भत सद्दर सद्दर सब मिल्यो। नट गति एम[2] अचम गति विल्यौ।
छं० ॥ २३८ ॥

दूत ने लाले नामक एक खत्री की रूपवती लड़की के द्वारा वश करने का मंत्र आरम्भ किया ॥

दूहा ॥ घट सदय विधि दुज्ज दुअ। जैन ध्रंम अभिलाष ॥
श्रवन मभ्भिक कैमास कहि। अमर मचातम भाष ॥ छं० ॥ २३९ ॥

अरिल्ल ॥ षित्री एक सुनेर[3] सुमत्ती। कलच एक सुरवर की गत्ती।
घट हित केलि रसं रस मंडिय। मनि आभरन नारि सब[4] छंडिय ॥
छं० ॥ २४० ॥

छंद विअष्वरी ॥ षित्री एक नाम जिन लाजे। ताके मुगध प्रौढ त्रिय बाजे ॥
मध्या मान बाल सिरन्हाई। प्रौढा कै बारै निसि आई ॥ छं० ॥ २४१ ॥
अप्पन प्रौढ मुगध गति लीनी। च्यारो जाम रमी रस भीनी ॥
प्रात बालबेलह रस[5] जान्यौ। भूषन बिन स्रंगार सुहान्यौ ॥ छं० ॥ २४२ ॥

---

(१) कृ० को०—नागनि। (२) कृ० को०—राम। (३) मो०—सुमैर।
(४) को० कृ०—सिर। (५) मो० "बेलह रस" की जगह "बलभरह"।

षिची सोइ सुन्दर हिसारं। बिन चिय एक कयौ श्रृंगारं॥
निज चित मांन कोल निधि मंडी। मीनह मनु अचवन सिर कंडी॥ छं०॥२४३॥
षिची एक सुगध सूमत्ती। तहां मंच आरंभन जत्ती॥
हरि हरि तहां कयौ उचारं। पढ़े छंद गुन मंच बिचारं॥ छं०॥२४४॥
मंच स्लोक॥ ॐ नमो गिरे[1] गर्जस्य। जल्पं जल्पेषु जालपम्॥
तत्वयं मंचं विध्वंसं। स्वरं धारं निवर्त्तयेत्॥ छं०॥ २४५॥
दूहा॥ असुष नयन लष्षी अलष। नर वु मंच वर ग्रब्ब॥
आकरषे तिन चारनह। भैरों भट गंध्रब्ब॥ छं०॥ २४६॥

दूत समय जान उस स्त्री को साम्हने लाया।

दूहा॥ अमरसिंह पासे प्रसन। मानि मंच जल जथ्य॥
तब तरुनि आनी चिहुनि। सुनै सुमंगल कथ्य॥ छं०॥ २४७॥

उस स्त्री के रूप का वर्णन।

कबित्त॥ कुटिल केस बय स्याम। गौर गुन बाम काम रति॥
चोर धनी उभ्भित ततंब। जानि रवि बिंब बीय गति॥
चष चंचल उद्दिय नरीह[2]। करी मनौं ब्रह्म अप्प कर॥
ता समां न कोइ आन। नांहि असमान थान धर॥
कवि चंद कहै का अंन करि। पदम गंध मुषचंद सरि॥
जुब्बन तुरंग सुमनह करन। मानौं मार अवंगि धरि॥ छं०॥ २४८॥
कबित्त। चंद बदन चष कमल। भौंह जनु भ्रमर गंधरत॥
कीर नास बिंबोष्ठ। दसन दामिनी दमक्कत॥
भुज म्रनाल कुच कोक। सिंघ लंकी गति बारुन॥
कनक कंति दुति देह। जंघ कदली दल आरुन॥
अलि संग नयन मयनं मुदित। उदित अनंगह अंग तिहि॥
आनी सुमंच आरंभ बर। देषत भूलत देव जिहि॥ छं०॥ २४९॥
दूहा॥ कोटि ईस कीए सुब्रत। विमति मत्ति परमान॥
तहां मंच पत्ते सुबर। गहै काल चित पान॥ छं०॥ २५०॥

---

(१) मो॰ क्र॰ को॰—गिरा। (२) को॰ क्र॰—"उद्दिय नरीह" की जगह "उद्दित नरीह"।

छंद त्रिभंगी ॥ संचारी देसं, कुंअर भेसं, करि वेडेसं, श्रृंगारं ॥
आकर्षन मंचं, वक्र सवस्तं, दर्पन हस्तं, कर्नारं ॥
कवरी करतारं, कज्जर सारं, हार सुधारं, निभ्भ्कारं ॥
मुष मंडन नीलं, कर नष नीलं, नेवर [1] नीलं, सुझारं ॥ छं० ॥ २५१ ॥
वै संधि समानं, उप्पय जानं, कव्वि बषानं, रितुराजं ॥
रितुराज चढंतं, फागुन अंतं, बलि आमंतं, इन साजं ॥
हरि हरि भारं, मुष उद्दारं, बिहु बिम्भारं, थनथोरं ॥
घन घंट किसोरं, मुष तंमोरं, प्रोढन भोरं, इन जोरं ॥ छं० ॥ २५२ ॥
जावक रंग पायं जेहरि भायं ओपम आयं मिलि चंदं।
कंचन घर [2] घुघ्घर बजि रस दुभ्भर रति समउभ्भर मैजानं ॥
पीरे घन भौरं, लगि मन मोरं, अभी सझोरं मन मालं।
अलि अलि बेकारं हल किन नारं सभि सम रारं पहु रारं। छं०॥२५३॥
चलि चंचल नेनं, संभरि बेनं, कवि छबि देमं पचिहारं।
नर नागन ओरं, देवन जोरं, रचि पचि [3] छोरं, तन थोरं ॥
कटि किंकन रोरं, गंध्रव ढोरं, ढपै सरोरं, सिर हारं।
चिहु चक्रित नैनं, तट्ठिय [4] ऐनं, मधु रस बैनं रस सेनं ॥ छं० ॥२५४॥
ढल कंतिय वैनी भिंभरनेनी, जुग फल देनी रस मैनं।
बसनर तन मंडिय भूषन थंडिय गुन बहु मंडिय दुषछंडी ॥
तारक बिन सक्षिय आभा लक्षिय भाइ प्रनमिय भव षंडी।
आवरदा लज्जिय संमर रज्जिय, नन नं नज्जिय, थन थोरं ॥छं०॥२५५॥
चल चंचल नैनं, मधुरित बेनं, भंभरि भैनं, बनि रोरं ॥
प्रअंक सुगंधं नव नव नंधं सषि नावंधं हरि छोरं।
आचिज्ज सरस्सय किंकन कस्सय हंई हस्सय दुजदोरं ॥ छं०॥२५६॥
गाथा ॥ पारवती जिन मंत्री। कामनषं रचियं बरयं ॥
इन दिष्टि सुधामय बाले। अनंग नांम अंग सो मिलयं ॥ छं० ॥ २५७ ॥
छंद नाराच ॥ अनंग अंग अंग मांन अंग अंग निर्नयं ॥

(१) मो०-झीलं। (२) मो-घन। (३) मो०-छरं। (४) मो०-तुट्ठिय।

कि बान बा । साल काम काम काम पत्तयं ॥
मनों कि मैं न सागरं सुबुद्धि नाक मोदयं ॥
मनों कि चार भावै विचित्र चित्र सोधयं ॥ छं० ॥ २५८ ॥

कबित्त ॥ अंग रचि रचि चित्त ।[1] चित्त मनमथ विकारिय[2] ॥
मानों मेन तरंग[3] ।[4] नैंन आनंग प्रचारिय ॥
किधौं जोग मन भजन । रजनि सायक सुषसागर ॥
मानों मयन रवंन । सेन सज्जी रति नागर ॥
सरिता सु उप[5] लोइन लहरि । रचै मीन मन मैंार[6] परि ॥
घन चाइ भाइ गुन आइ सम । कवि का ब्रंनन करै[7] करि ॥ छं० ॥ २५९ ॥

आश्चर्य है कि कैमास ऐसा मंत्री बालचरित्र के वश पड़ जाता है ॥

गाथा ॥ आचिज्ज बालचरियं । किंहो जंम्म जम्म विन चरियं ॥
कै विधि पुब्बच लिखियं । जो मन माहन सुष सुषांइ[8] ॥ छं० ॥ २६० ॥

वचनिका ॥ प्रथम सदा दुज्जन राइ कैमास मंत्री दुष्टां ते ॥
उन मंत्र कांमां ते ॥
अमर मचा तम देवि प्रमादां ते । कैमास दुष्टां ते ॥ छं० ॥ २६१ ॥
हमरे हंस र व बोल्यौं ॥ दुर्लभ राइ कुमारां ते ॥ पाचांते पानिग्रहनांते ॥
पंयं नांग आनांते । रति सांते घट होबांते ॥ छं० ॥ २६२ ॥

छंद त्रिभंगी ॥ घनं नंक घटंतो भजि भजि मंतो । इय कलि तंता[9] गुनवंतो ॥
सहति गुन सुंदरि अंमरि संचरि निस्रन मंजरि रतिवंतो ॥[10]
लवली पुफ्फं जरि करकिय पंजरि मिलि मीनं जरि[11] जुगजंतो ॥
चित्त सिर मंडिय हो प्रभु मडिय प्रभु मन मंडिय सुभ संतै ॥ छं० ॥ २२६

दूहा ॥ दूरत[12] राजे बाल गुन । रचो चित्र परिमांन ॥
कै गाइ अहि लाकों । कै अमरेष बषांन ॥ छं० ॥ २६४ ॥
सुरपुर नरपुर नागपुर । इच आचिज्ज सुकीन ॥
धनि मंत्री खेचर अमर । दाक्षिम[13] सुबल सुकीन ॥ छं० ॥ २६५ ॥

(१) क्र० मो०--चित्त । (२) मो०--चाधिकारिय । (३) मो०--तुरंग । (४) मो०--अंग । (५) मो०--संपुर ।
(६) मो०--तोर । (७) मो०--करै । (८) मो०--दुषाइं । (९) मो०--जयवंतो ।
(१०) मो०--यह तुक नहीं है । (११) मो०--'मिलि मीनं जरि' की जगह 'मिलि मिलि नंजरि' पाठ है ।
(१२) मो०--दूरति । (१३) मो०--दाहिमा ।

अमर सिंह के मंत्र के बस में कैमास ऐसा प्रबल स्वामि भक्त मंत्री फँस गया ।

कवित्त ॥ जिन मंत्री कैमास । द्रव्य उद्धरि धर लीनी ॥
जिन मंत्री कैमास । प्रजै जद्दव कुल पीनी ॥
जिन मंत्री कैमास । लियौ षट्टू निधि धारी ॥
जिन मंत्री कैमास । जंग संभरि उद्धारी ॥
मंत्री अनास कैमास सों । मति उचार अमरा कियौ ॥
गंधर्ब घाट दुर्गा विसार । मंत्र विसेषन जे दियौ ॥ छं० ॥ २९६ ॥
जा दिष्षंत मंचियसु । पंचदस बयन प्रपत्ती ॥
नवों बध्यो सेवान । राज मंगल गुन रत्ती ॥
होत बरस नव दून । जाइ थट्टा रन भंज्जौ ॥
उभै बीस इक मास । अद्ध अद्धें गुन सज्जौ ॥
भंजयो बीर बंभनति बस । अब कुमंत्र मंत्री [1] कियौ ॥
कैमास भयौ षल बसि विषल । मंत्र सस्त्र सचव गयौ । छं० ॥ २९७ ॥

दूहा ॥ यों [2] बसि भयौ कैमास बर । ज्यौं रोगी भेषज ॥
ज्यों नट बसि कपि नंचई । ज्यों त्रिय बसि पति सेज ॥ छं० ॥ २९८ ॥

कैमास ऐसा मंत्रमुग्ध हुआ कि पृथ्वीराज को भूलकर चालुक्यराज के वशावर्ती हो गया ॥

अरिल्ल ॥ यौं बसि कियौ दाहिमैं प्रमानिय । कोह मोह लोह मद टानिय ॥
इक [3] आंन फिरी [4] चालुक्क मांन की । मेटी आंनि प्रथीपति जानिकी ॥
छं० ॥ २९९ ॥

दूहा ॥ कियौ बसि कैमास नवां । अमर मन्त्रासम उट्ठि ॥
सकल सचर भीमंग बर । प्रथुक आंनि संट्ठि ॥ छं० ॥ ३०० ॥

कैमास के वश होने से नागौर में भीमरायचालुक्य की आन फिर गई ॥

कवित्त । मंत्री भौ कैमास । काम न्टम्मदो नेह जिष्षि ।
सांमि-ध्रंम मुक्कयौ । नीत मुंकी अनीत ग्रषि ॥

---

(१) मो०--मुक्की ।　　(२) मो०-- बति ।
(३) मो० 'इक' नहीं है ।　　(४) ह--"आन"--इतना और अधिक है ।

मादक उनमादुक समप्पि । सोषन द्रव्य बानिय ॥
बंध भ्रंम्म छंडयौ । अंध काया उनमानिय ॥
लज्जा सुमंत मन संकि रह्यौ । रवि पति पंक अलुझयौ ।
चालुक्क आनि नागौर फिरि ॥ मरन अंध नन सुझयौ ॥ छं० ॥ २७१ ॥

चन्द बरदाई को स्वप्न में इस समाचार की सूचना हो गई ॥

आनि फिरी भीमंग । नैर नागौर घरं घर ॥
बसि कीनौ दाहिम । धरनि भौ कंप धर द्दर ॥
सुपन बीर बरदाइ । भरकि उठ्यौ जु चरित तहं ॥
जहं मंची भर सुभर । करिग वसि बसन देव जहं ॥
भूमंग भूप डंबर परिय । किल किलंत डमरू करह ॥
दनु देव नाग सब बसि करन ॥ कितक बंध बुद्धी नरह ॥ छं० ॥ २७२ ॥

यह जानकर चन्द ने देवी का आह्वान और उसकी स्तुति की।

दूहा ॥ इह चरित दिषि मंत तहां । कटक संपती अप्प[१] ॥
चंद जप्यौ जप जुगति सम । निसि सुपनंतर जप्प[२] ॥ छं० ॥ २७३ ॥

छंद भुजंगी ॥ चढी सिंह देवी प्रकति पुरुष्षं । महा तेज जागुल्य चंदं मुष्षं ॥
लिखे वाक बानीं समानी न जंपी । कुकंपे कडूरं नचे मेर कंपी ॥
सुभं सेत स्यामं रगं रत्त पीतं । मनो दिष्षियं धनुष नभ अभीतं ॥
बजै डक्क डौंरू त्रिसूलंत हथ्यं । स्वयं वाक बानी बिराजंत तथ्यं ॥
मिल्यौ अमर राइं सु कैमास भानं । भयौ अंधकारं दलं सा बयानं ॥
बधे जैन रहं ... ध्धं अंधकारं । गई मत्ति चंदं भयौ सोत नारं ।
कवो दिष्षियं रूप सा दिव्य अग्गै । पतालं[३] नषं सिष्ष ता अभ्भ लग्गै ॥
जयं जै जयं जै [४]जपै चाहुआनं । तबै चंद कब्बी परतीत मानं ॥
उमा कै निसासी परतीत पावै । जहां अब्बिसासी तहां देषि नावै ॥
उठ्यो चंद आसी पुरं प्रात राई । दई निरत नांही चहूवांन जाई ॥
किधौं केवलं मरन सरनं बिचारौं । किधौं जैन ध्रमं जुगं पाइ टारौं ॥ छं० ॥ २७४ ॥

चन्द स्वयं कैमास के पास नागौर की ओर चला।

दूहा ॥ सु कविचंद चल्लौ सुनिज । पुर नागौर निधांन ॥
जहां कैमास पलटि तन । करन केलि अग्यान ॥ २७५ ॥

---

(१) मो०--आप । (२) मो०--पाप । (३) पाठांतर-बतालं । (४) मो०--जंपियं ।

नागौर पहुंच कर चन्द ने सब बात प्रत्यक्ष देखा और घर घर यह चरचा सुनी ।

छंद मोतीदाम ॥ जहां तहां गल्ह सुनी परवांन । सुमिंत्तिय दांमय छंद बषांन ॥
जहां महा गल्ह सुनी परवांन । सुमिंत्तिय दांमय छंद बषांन ॥
बजी ग्रह ग्रेह घरं घर बात । मनों चिन उड्डिय बाय अघात ॥
कियौ बसि दाहिम मंचिय राज । बजी सुर सब्ब अकित्तिय बाज ॥
उडी बर मैरनि मैरनि नभ्भ । गई अजमेर सुनी भतबभ्भ ॥
धरद्धर कंपिय भ्रंम परांन । भयौ बसि दाहिम देव सुजांन ॥
सुनी चहुआंन कही कविचंद । भयौ न्टप बत्त अगाह दमंद ॥
स पट्टय बत्त जित्यौ कयमास । करै जिन षग्गह षिचिय आस ॥
भयौ सपनंत चल्यौ कविचंद । मनों मकरंद उड्यौ रस भिंद ॥
संपत्त सुनथ्थ महा कवि वीर । जहां कयमास पलट्टि सरीर ॥ छं० ॥ २७६ ॥

यह देखकर चन्द ने बड़े क्रोध से भैरो तथा देवी का अनुष्ठान आरम्भ किया ।

दूहा ॥ दिष्षि नयन झल चलि भयौ । चल चल चल्यौ अंग ॥
क्रोध लग्गि किलि कुप्पयौ । दिष्षित डिंभ तरंग ॥ छं० ॥ २७७ ॥

छं० भुजंगप्र० ॥ कहै चंद घंडो अहो भद्द भैरूं । तुवं लुहि विप्रं तनी लज्जि जोरीं ॥
अहो चारनं नंदनं दीन सानं । घटं मध्य काली कलं काल किलानं ॥
मयं घट्ट घट्टं वमंडंत जोरं । घुजै देव बोलै डुलै होइ सोरं ॥
वियो घट्ट थप्पे चयं थरथरानं[2] । जयं जैन भग्गी भलं भरभरानं ॥
कहै कोनं आरंभ जीत्यो सुजैनं । बजी चक्क चंदं लग्यौ सीसगैनं ॥
थरं थप्पि थानं वियं घट्ट मंडे । बजै सत्त्र दूनों जिनें सद्द संडे ॥
द्रुगे धाम धामं पियं पद्द पांनी । ढिली जैन भ्रंमं सबं राजधानी ॥
फिरे पच्छिमंचं महा मंच जंची । चरे षंड षंडं सबं सत्त्र कची ॥
मिले राज मझ्झं [3]मरउज्याद कुट्टी । उमा सत्त सामंत की सत्ति षुट्टी ॥
निरालंब लंबी वियं वीरवाई । चिपा रतपुज्जी नची रत राई ॥

(१) मो०—सुमुन्तिय । (२) मो०—थुरहरानं । (३) मो०—मध्य ।

विथा जथ्थ लग्गी तथा तो प्रसादं। कथा काल डैनं भरो एकबादं ॥
जहां बेद बांनी सुनी सत्त पाटं। तहां जैन जंपै सु पाषंड बाटं ॥
हुहुंकार हक्का घटं घाट उठ्ठौ। छलं छेद भेदं [1] दुअं धूम बुठ्ठौ ॥
हरं धार झारा धरा कंप ठांनी। मिटी बूंद माया सु आकास [2]बांनी ॥
दुजं दोह उड्डै छुटे सुग्गं मग्गं। घटं घाट फुट्टा चमं धाम भग्गं ॥
हतं छच मोहं मह फूल तुट्टौ। परा पेष तें जैन भ्रंमं सु लुट्टो ॥
महा मंच मंची दिठी माउ मांनी। कवी चंद मंत्रं सिधी हो समांनी ॥
छं० ॥ २७८ ॥

संग्राम काले संग्राम ईश्वराय संग्राम भूपाय स्मरनं कृत्वा मंचं ॥
संग्रामे प्रविसे तु जयां संग्रामे विजयां भूपाल द्वारे स्मरणं कृत्वा ॥ *

चन्द का देवी की स्तुति करना

साटक ॥ चामंडा वर षग्ग मंडित करा हुंकार सद्दा धरं ॥
प्रभासं सचसंघ सत्य तपसं रूंडाल माला धरं ॥
लग्गना [3] हस्त मुषी प्रचंड नयना पायातु दुर्गेश्वरी ॥
काली कल्प कराल काल वदनां अंगे कलिंगे[4] जया ॥ छं० ॥ २७९ ॥
माया तूं हंद्दार माल कलया जीतं जगद ब्रह्मानी ॥
माया तूं माहेश्वरी जप कहं अग्गोदरं गोचरं ॥
सिष्यं रिष्य [5] सपह नंचत वसा हिंगोल हुं हुं कारं ॥
साहुंका हुंकार हक्क सुनयं जातं दलं दुर्ज्जनं ॥ छं० ॥ २८० ॥
षग्गं जा मिति झाम झाम झमियं तस्यास्य मंत्रे मुषं ॥
सा मंचे उच्चार धार धरियं[6] अभ्भं अभंगा अरी ॥
जग्यानं जय जोग जोग पतयं पाषंड षंडायनं ॥
काली लंक ललंत कंति त्रिपुरा तस्यानि ध्यानं धरं[7] ॥

(१) मो० 'छलं छेद भेदं दुअं धूम बुठ्ठो' की जगह 'छलं छेद दूयं धारं धूम उठ्ठो' है।
(२) मो०—आसमान। * यह मंत्र एशियाटिक सोसाइटी की प्रति में नहीं है।
(३) मो०—लग्नी हस्तमुषी प्रचंड नैनी पायातु दुर्गेश्वरी।
(४) मो०—कलिंगे जया की जगह कालिंगेश्वरी है॥
(५) मो०—रच्छ।
(६) मो०—अंगा।
(७) मो०—धनं।

चन्द का देवी से वर मांगना कि जैन की माया को जीतें।

आई तूं उमया अखंड तनया दाता दुरी नाशिनी ॥
संतुष्टा सुर नाग किंनर गना दैत्यानि संघा सनी ॥ *
रक्षा चारु चवंति चारु कमलं संतुष्टयं साधुनं ॥
जैनं[1] वद्धंस वद्धयाइ चरनं जै जै सुजिह्वासनं ॥ छं० ॥ २८२ ॥

दूहा ॥ सुबिधि बिहि सेवर सुवर। बाइ बिहि परमांन ॥
जंच मंच जाजप्प सौं। लगे रोस असमांन ॥ छं० ॥ २८३ ॥

छंद भुजंगी॥ उठे चंद चंदं[2] बरद्दाय बीरं। भयौ तेज आकून संनी अधीरं ॥
बुल्यौ बीर वांनीय ज्यों गेन पांनी। मनो उग्गियं बीर सिव दिष्ट जांनी ॥
मथा मंडियं बीर अंकुस सिरानं[3]। तजा तेज मत्तं उठौ बीर बानं[4] ॥
छं० ॥ २८४ ॥

कवित्त ॥ जिन मंची मंनाय[5]। द्रव्य उद्धरि धर लीनी ॥
जिन मंत्री रिनथंभ। ठेलि जद्दव कुल दीनी[6] ॥
जिन मंची ढुंढार। ढार कूरंभक सारी ॥
जिन मंत्री जंगली। जंग संभरि उद्धारी ॥
मंचो अभासि[7] कयमास सौं। मंति उचार अमरा कियौ ॥
सम्भरी भद्द दुग्गार दम। घट विघाट उभ्भा बियौ ॥ छं० ॥ २८५ ॥
उठ्यौ चन्द बरदाइ। बिरद दुग्गा सम्भलि सुर ॥
सुमन सस्त्र तजि मिच। पच बल्लिय जुमिच बर ॥
काज कलंन[8] कल्यांन। काज घटन आघट्ट बर ॥
भट[9] निघाय[10] रागी सुनट। भट साहस भम्मं[11] धुर ॥
दिष्षो सु चाहु मंची धरा। मति अचार[12] कर लिष्षयौ ॥
गन्धर्व[13] गांन चारन अमर। बर पाषण्ड सुविष्षयौ ॥ छं० ॥ २८६ ।

---

* ये दो चरण रॉयल एशियाटिक सुसाइटी की प्रति में नहीं हैं।

(१) मो 'जैनं वद्धंस थाट चंडि चरनं'। (२) मो०--चंडी। (३) मो०--सिरानी।
(४) मो०--बानी। (५) मो०--कैमार। (६) मो०--पीनी।
(७) मो०--अनासि। (८) मो०--कइयांन। (९) मो०--नट।
(१०) मो०--धिंग। (११) मो०--वि। (१२) मो०--उच्चार।
(१३) मो०--इंकि इंकारह छंडियो मनो चसर गुरु सिष्षयो।

समाचार पाकर चन्द का मंत्र व्यर्थ करने के लिये अमरसिंह का मंत्र प्रयोग करना और घट स्थापन करना।

समं[1] हो चन्द कविन्द बाद। अंकुस सिर मण्डिय ॥
मंच देव उच्चार। हंकि हंकारव छंडिय ॥
अमरसिंघ बर भट्ट। बीर बम्भन बिचारिय।
मंडि बीर पाषण्ड। मंच जंचह उच्चारिय ॥
मंडयौ कुम्भ सलिलह सुमन। धूप दीप अच्छित धरिय ॥
सेवर सुगन्ध आडम्बरह। चष्य जोरि बीनति करिय ॥ छं० ॥ २८७ ॥

छन्द भुजङ्गी ॥ महाबीर बीरं चितं जाप लीनौ। जिनैं कुच्छितं लुचितं पंथ कीनौ ॥
जिनैं जग्य ध्रमं चरं नेति [2]भंजै। सुध्रंमं उथापे अध्रंमं सुरंजे ॥
बधं जीव टार्यौ सुलोभं निवार्यौ। सतं सील आचार अंगं अधार्यौ॥
रचे पंच भूतं प्रथी अप्प तेजं। प्रचै नाहि धातं अघातं सुनेजं ॥
दमं दान ध्रमं दयाजुत्त मंड्यौ। सुत्रं अमर उप्पासनं तासवंड्यौ ॥
छं० २८८ ॥

एक घड़ी तक चन्द का भ्रम में पड़ जाना। फिर संभलकर अपना अनुष्ठान करना देवता आदि का आश्चार्य के साथ दोनो का बल देखना।

कवित्त ॥ रोल्यौ घट्ट सुघट्ट। बीर हुंकार हुंकतिय ॥
ना पक्कै मंचो न मंच। आरंभ सुथंतिय ॥
इक्क मुट्ठि दुअ मुट्ठि। चंद संमुह पढि नंषिय ॥
घरी एक भ्रम भम्यौ। जगि दुग्गा जस लग्गिय ॥
बुल्लयौ बीर कविचंद मुष। चल चलंत हेमावलिय[3] ॥
सु प्रसंन मात भट्टह भइय। बस[4] पाषंड भमाव तिय ॥ छं० ॥ २८९ ॥

---

(१) मो०--छंद २८७ के आदि के दो तुक का पाठ इस प्रकार है-"जनमय चक्कजकज। मंच आरम्भ सुमण्डिय ॥ पढमावर परतषि। हक्कि हुंकारव छण्डिय।
(२) कृ० को०--नन्ति+मो०--'ध्रमं चरं नन्ति' की जगह 'धर्म्म वरं नीति'--है।
(३) मो--हेमावलीय। (४) मो-सब पाषण्ड भमावलीय।

कह्यौ वीर कविचंद । प्रगट आचिज्ज दिषायौ ॥
कुंभ मध्य पाषंड । बांन विद्या इम मायौ ॥
दनुज देव मानुष्य । सकल आचिज्ज सु जान्यौ ॥
पै मनुष्य गति लोइ । उपल जिम मिटै न पान्यौ ॥
लोचयौ रिभझ जल जिमि प्रबल । भइ सरस रस बुझयौ ॥
गंध्रब वीर चारनं अमर । धंमर उचित बुझयौ ॥ छं० ॥ १९० ॥
राजा बसुव पट्टनी । चंद कहौ उप्पर आइय[1] ॥
सबें साथ चालुक । अमर भए तुंग सहाइय[2] ॥
रह्यौ भान रथ थंभि । देव लगि तुंग तमासे ॥
कुटिल दिष्ट कुटइन[3] । आज मत लभ्भ[4] कैमासें ॥
उचर्‍यौ चंद उरचक्कयौ[5] । आरंभ्यौ बर मंच कै ॥
आचिज्ज लोइ दिष्यत[6] भयौ । अरु प्रारंभ न तंतकौ ॥ छं० ॥ १९१ ॥

चन्द ने अमरसिंह की माया काटने के लिये योगिनियों के जगाने का मन्त्र आरम्भ किया ॥

छंद भुजङ्गी ॥ कियौ मंच आरम्भ प्रारम्भ कब्बी । जगी चौंसठी देवि तो तेज छब्बी ॥
चितै चन्द कब्बी तवां रूप तैसौ । मनो अर्क राकान छिपं मिलै सौ ॥
मुषं चन्द कब्बी पढै दिव्य बानी । रिझें मात कब्बी तिनं में समानी ॥
रिझें थावरं नाहि जंगम कैसें । सुनें पंष बांनी मुनी मौन जैसें[7] ॥
सुनें कांन नारी सुधा-बाल भग्गी । मनों तर्क उत्तर्क संदेस जग्गी ॥
सुनें मुष्यवानी प्रमांनी न जाई । मनों इन्द्र आगें चचा कूच गाई ॥
बुचै कंठप्रानं लिये चित्तरेषं । लगे मंच मांनो सजीवं सुभेषं ॥
रहे सीत मन्दं सुगन्धं सुवातं । मुषं कैं सुधारें सुरंनं अघातं ॥
रथं थंभि अर्कं अहनं सुनावै । रह्यौ मोह माया क्रमं नं न धावै ॥
चल्यौ ग्राव रीझें गति कंकी लीनी । रसम्भौ भयानं अद्भूत चिन्ही ॥

(१) मो-राज बसु पट्टनी । चन्द उपर कहों आयो । (२) मो-सहायो ।
(३) ए-कुट्टन । (४) मो-मतिलयि । (५) मो-हकमो । (६) मो-छिपित ।
(७) मो--मनो पंच बानी मुनी मान जैसें ।

मनों सुंदरी तिन चित्ते सुचक्खी । चल्यौ भाव रीझै कबी मौंचि नंषी ॥
घरी एक चन्द उठक्यो सु सक्खी । मनों गब्भिगत्थं मझ्झ पाषान पुक्खी ॥
मंगो सुन्दरी मोहि दै भब्ब उट्ठी । करौं दौरि तुम्भी करामात झुट्ठी ॥
छं० ॥ २९२ ॥

अमरसिंह का बहुत पाषण्ड फैलाना ॥

दूहा ॥ अमरसिंघ सेवर सुवर । किय अनूप पाषण्ड ॥
सिर पच्छै धर नंचई । धर पच्छै नचि[१] मुण्ड ॥ छं० ॥ २९३ ॥

चन्द का पाषण्ड भंजन में सफल होना ॥

कवित्त ॥ कहै चन्द सुनि बाज । देय आसीस इक्क पय ॥
नव सुकिंन किन नंक । बोलि बानी सुरङ्ग चय ॥
जै जै जै उच्चार । कह्यौ कवि तिम तिम नंच्या ॥
सब देषत बोकयौ । बहुत रचना कर रंच्यौ ॥
पाषण्ड खण्ड[२] सेवर अमिय । घट भंजन उप्पाय किय ॥
मांनुक्क न जांनिय देव गति[३] । भ्रम भग्गौ[४] सुव चन्द जिय ॥
छं० ॥ २९४ ॥

दूहा ॥ तिनहु न तिन देषिय नयन । सयन सकल बिध वीर ॥
ते कयमास नरिन्द गति । कढ्ढन मनहि सुधीर ॥ छं० ॥ २९५ ॥

कवित्त ॥ सत्त सुमन्तियं तत्त । बाद लग्यौ चिहु पासं ॥
चय चय हुंकार बन । कुम्भ मुक्यौ बल भासं ॥
भव नितंन नव घात । नवति बल मंच उचारहि ॥
एक एक सम्भवहि । एक एकन पढि डारहि ॥
लागंत चन्द बरदाइ तन । भ्रमत भ्रम्यौ चक्किय उमा ॥
मन जग्य[५] न निद्रा नहिव बर । सुमति मन्त चिन्तिय उमा ॥
छं० ॥ २९६ ॥

पद्धरी ॥ गवरी सहथ्थ गवरी व ईस । जग्गायौ चंद मंच नवसीस[६] ॥

---

(१) मो०--नचि । (२) मो०--मंड । (३) मो०--मानुक्क जानियतु देवगति ।
(४) मो०--'भ्रम भग्गौ' की जगह--'भ्रमभग्गौ' । (५) मो०--जग्या । (६) मो०--मंचन वरीस ।

अविवेक गाढ़किय मान पास । लग्गै न जिम्म अरि लुप्प नास[1] ॥

छं० ॥ २९७ ॥

दूहा ॥ आप मुष अंमीय उर । रमिय काय[2] धुन धारि ॥
जै जै जै उच्चार बर । पार न लभ्भै पार ॥ छं० ॥ २९८ ॥

चालुक्य राज का मन्त्र नष्ट होना ॥

छंद भुजंगी ॥ मिटे मंत मंचं[3] सुचालुक्क राजं । भए विझिमनी सब्ब मंची अकाजं ॥
सबै मंत मंची कबी चंद जंप्यौ । तहां पहनी राव आसन्न भंप्यौ ॥
काढो तेग बेगं जिनारी निगारी । मनों बीज कोटी कलासी पसारी ॥
दई चंद अंष्षी सुन्यौ चंद बंसी । नदै ठाम अप्पं मरंनं सु अंसी ॥ छं० ॥ २९९ ॥

गाथा ॥ इक्कं ठाम मरिज्जै । नां किज्जै एकयौ ठामं ॥
कित्ती मत्ति सुदेवं । दिष्यानं इक्कयौ सेवं ॥ छं० ॥ ३०० ॥

चन्द का अमरसिंह को वाद मे जीतना ॥

दूहा ॥ घरी एक किय वाद बर । को जित्ते कविचंद ॥
अमरसिंह सेवर कुंवर । भयौ कित्ति गुनमंद ॥ छं ॥ ३०१ ॥
बर पाषंड न पुज्जयौ । किए अमर घन तंत ॥
को जित्ते कबिचंद सों । दुग्गासघाइक मंत ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

अरिल्ल ॥ जे पाषंड बहुत अभ्यासे । चंद मीन विष ज्यों अहि ग्रासे ॥
छिनक एक बिद्या गुन संधी । बर पाषंड मंडि कबि बंधी ॥ छं० ॥ ३०३ ॥

दूहा ॥ बद्धा जैन सुजैन लगि । जीता चंद चरित्त ॥
भामीं भट्ट सुमंत[4] किय । मरन जियन करि चित्त ॥ छं० ॥ ३०४ ॥
छुट्टि गये पाषंड सब । छुटि मंची कैमास ॥
चर चरंत आयास लगि । चंदन छंडे पास ॥ छं० ॥ ३०५ ॥

चन्द की सेना का युद्ध करके शत्रुओं को भगाकर कैमास के पास जाना ।

छंदभुजंगी ॥ मईदेव देवान चालुक्क चंपे । तहां तूं सचायं भवं राग जंपे[5] ॥

(१) मो०—जास । (२) मो०—काम । (३) मो०—मची ।
(४) मो०—सुमित्त ।
(५) मो०—कंपे ।

निसा एक रत्ती अहो जंग धायौ। पखं श्रोन षोचीन भूची अघायौ॥
चहं[1] चार हंकयौ मयं मान साथे। सदा देव द्रुगे अनाथं न नाथे॥
सश्रा लष्ष सेना गजं बाजूरं। अगं बान कंमान सजि गैन दूरं॥
झमी झंम नेजे छिता[2] छच पचं। मचा मब्ब अग्रं लबी मंच जंचं।
धरा धार धंडे सुमडे विसध्ये। परी[3] धार पाइक्क काइक्क लष्षे॥
बिना सामि सेना सुपंचं हजारं। तिनं मंझ सामंत पचीस भारं॥
मुषं मंषि कैमास दिव कासमीरं। बियौ बग्गरी राव स्वामित्त धीरं॥
तियौ जाम जद्दो लघु बंध जाजा। धरै लाज गुज्जर धरा राम राजा॥
षटौ षग्ग तोनं जयं जैत छचं। गुरू राव गोयंद सत छच रं॥
सयं सिंघ साना हनौ अष्ट काली। जिनैं द्रुग्ग देवं हमं तेज झाली॥
दसं गौर गाजीव साजीव सामं। सुनी संभरी राव स्वामित्त नामं॥
अषा राव हाडा चयं चंद देवं। जिनै द्वादसी धवल एकादि सेवं॥
ततं तुंग चंगा अभंगा बिचारं। जिनै मारिया राय जंगी पछारं॥
बली राइ बंको विरुद्दांन बंके। जिने ढाहि ढुंढेरिया राइ हंके॥
बरं जोर कूरंभ रजंग सूरं। जिसौ पथ्थ पत्ताप मझ्झे कंगूरं॥
नियं राइ नीडर[4] ननौ रथ सथ्थी। जिसौ राव संतन ननौ भीष रथ्थी॥
मचा मल्ल सज्ज्यौ बियौ मल्ल भीमं। बरं तास चंपेन को जोर सीमं॥
मई बंदनं देवतो पाव हेवं। युती मंच मुष्षं मयं जंपि एवं॥
हु हुंकार हक्की सनी सा बिचारं। चढे मत्त आगे सुपंचं हजारं॥
मचा सेन सत्तार तनो लष्षसाई। सुन्यौ राइ कित्ती दियौ रत्ति वाई॥
छं० ॥ ३०६ ॥

कवित्त ॥ बर बंधे बसीठ। ढीठ पाषंड निवारे।
षोरचरा ग्रामांन। सेन संचार संभारे॥
तारी रत्ति चीजांम। जांम बोल्यौ जहांनी॥
होजा जारन जाइ। गस्त चौकी भीमांनी॥

(१) मो०—चहंकारं। (२) मो०—छिता। (३) मो०—फरी।
(४) मो० को०—नाहर।

चसाल चस सेपंच दुति। सेनी भाखि दुरा [1] मरन ॥
सेषंध नेज भज्जय भिरिय। बंसी जान बिषांन बन [2] ॥ छं० ३०७ ॥

कैमास का लज्जित होना।

चौपाई ॥ बंसी जान बषांन प्रमानं। रह्यौ लज्जि कैमास निषानं ॥
चौसट्ठी मनों आव सुढारी। उठै सीस संमुष क्यौं भारी ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कवित्त ॥ उट्ठावै नच सीस। लज्ज दाहिम चहुआनं ॥
उठै सीस नच ईस। लज्ज कुल पन कुल पांनं ॥
उठै सीस नच ईस। करै भारथ बहु काजं ॥
उठै सीस नच ईस। देव गति देवनि साजं ॥
उठै न सीस संमुष सरस। लज्ज बिरहां भार सिर ॥
कैमास काज लग्गी गवनु। बिसर बीर दिष्यो बिधर ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

चन्द का कैमास को आश्वासन देना।

दूहा ॥ बर बरदाइ नरिंद कवि। दै आसिष छिति राज ॥
तूं लज्जिन कैमास बर। मंत बिरोधन काज ॥ छं० ॥ ३१० ॥

कैमास को लेकर पृथ्वीराज के सामतों का चालुक्य राज पर चढ़ने को प्रस्तुत होना।

कवित्त ॥ चंद सुचंडि प्रताप। मिच कैमास कुडाइय ॥
मेटि आंनि चालुक्क। आंन चहुआंन चलाइय ॥
लाज राज कैमास। सीस ढंकै न उघारै ॥
सबला सों संग्राम। करन रति चाच बिचारै ॥
उज्जली रैंन उज्जल दिसा। जस उज्जल कों धाईयां ॥
दाहिम राइ दाहर तनै। सिलच सुरंग बनाइयां ॥ छं० ॥ ३११ ॥
सथ्थ राव चांमंड। सथ्थ सज्जिय परिहारं ॥
मदन सिंघ बल्हार। नांम रांनी षग झारं ॥
रामों चा चंदेल। राव भट्टी भच नंगी ॥
भर भट्टी बहु सथ्थ। सार लग्गी तन दंगी ॥

(१) मो०--दुराम दल।
(२) मो०--बल।

आजुक्ख तेज नरसिंघ नर । चाहुवांन कूरंभ गुर ॥
सामंत पत्त[1] सत्त्व सुमति । सुवर बीर भारथ भर ॥ छं० ॥ ३११ ॥
परम पवित्र पमार । जांन चहांन पँचाइन ॥
सारंग सिसु चालुक्क । राज रघुबंस सुभाइन ॥
रत्ति वाह मन चित्ति । सेन सज्यौ बिन राजं ॥
मदन तेज तम चरन । मेघ मंते जनु गाजं ॥
कल छंत कोति मंडिय बिषम । गहम अब गहिलोत गुर ॥
खंगिरय खोर खग्गौरहै । स्वामि भ्रंम जिन भार धुर ॥ छं० ॥ ३१३ ॥
अचल बहन अत ताह । कन्ह बिन बीरवसिंगं ॥
रानिंगुर रट्ठौर । साज[2] क्लिसन रन रंगं ॥
बा बारो बरसिंघ । रेह रावन अजमेरं ॥
दहियां अंगज राव । अंग गग्गह धर मेरं ॥
ठंठरी टांक चाटा चपल । अकल मति जिन उद्धरिय ॥
ठिल्लै सुवज्ज बज्जंग तम । पल पंडै बज्जन बज्जिय ॥ छं० ॥ ३१४ ॥
बर अद्दव जै सिंघ । राव अंघारौ सुब्भर ।
किल्हन कनक नरिंद । इन्द्र दल दिष्षय दुब्भर ॥
बली बांह परसिंघ । रेह रख्खै चहुआनिय ॥
सुवर बैर बाघह । बज्जिय संभरि धर आनिय ॥
अजमेर मुक्कि चहुआंन कौ । ए कुहै भारथ भिरन ॥
दिन एक बीर बल बंध पल । उभय बज्जि बजू जिरन ॥ छं० ॥ ३१५ ॥

चालुक्य राज का सेना प्रस्तुत करना ।

छंद भुजंगप्रयात ॥ फिरी गस्त चौकी सु चालुक्क राई । सथे सठ हज्जार मकवान घाई ॥
रनं पाटरी रांन ता नांम लीयं । बलं बैर बैरीन को चंपि लीयं ॥
जिनै देषिया जुद्ध जाडे च सब्बं । जिने कक पंचालची[3] लोपि अब्बं ॥
घटं बीय संग्राम सज्जे सुअंगं । हकै कक अंगं[4] करी कोटि संगं ॥
तिनंकी उपंमा कवीचंद गाई । सुते कंठ रायंन गोरष्ष पाई ॥

(१) मो०—पूर । (२) मो०—साह । (३) मो०—ची । (४) मो०—दंग ।

तिनं साथ वै चाय सज्जे उपाई। तिनंकी मयूषं रखं[1] होउ चाई॥
सुयं कंठ सोभा नरं टोप सोमा। ससी अष्टमी अद्धये भांन लोभा॥
जरे जंजरायं भरं राग मिल्लै। मनों नौ ग्रहं नाविका होउ विल्लै॥
चयं पष्षरे पष्षरं जंजरायं। कपी सीस द्रोनं मनो लंक आयं॥
फिरै गज्ज राजं मदं तेज गाजी। तिनं देषतें बहुषं कांति लाजी॥
चली वीर कैमास सामुष्ष अग्गें। मनो राम कामं कपी कूट लग्गें॥
सुनी कंन्ह भोरा जु चालुक्क वीरं। कुडायौ कबै कोय कैमास भीरं॥
इकं नाम चंदं बरंदाइ बानी। जिनें भंजिया च्यारि सो मंच पानी॥
दिसा च्यारि रष्यौ निरष्यौ प्रमानं। जहां सज्जियं सूर चहुआंन थानं॥
रजं मोद बंकी करक्की कमानं। धुनै तूल धूनी मनों कट्ठ[2] थानं॥
हुकंमं नरिंदं सुचालुक्क दीनौ। रचौ आज चौकी सुभ्काला नवीनौ॥
चिहूं कोद चव्वीन की वीरटं फेरौ। निसा आज रष्यौ सुमंचीति मेरो
चढी चौक चौकी सुभ्काला निमांनी। उठी क्रूर दिष्टी स्वयं सेन जांनी॥
रष्यौ[3] यों मचासेन भीमंग राजं। मिले मल्ल मल्लं अधमं सुसजं॥छं०२१६

चालुक्य की सेना का वर्णन।

दूहा॥ सज्जि सेन चालुक्क भर। रहे लोह करि कोट॥
पयदल गज बल हय चपल। भए आंनि सब जोट॥ छं॥ २१७॥

छंद भुजंगी॥ महा सेन सेनं गभीरं गरज्जं। मनों मेघ माला सुकाला धरज्जं॥
भ्कमं भ्कंम भ्कंमंति भ्काला नियानी। चढी चक्र चक्की चवट्टी सुबांनी॥
सयं सच्च ते नेज कैमास अग्गै। सयं तीन सथ्थं जथं जाजु लग्गै॥
सयं पंच जद्दों सु जामानि नच्चै। सयं अट्ठ अट्ठे रमं राम पच्चै॥
दुहूं बांह सेना बरं बीर बाही। मनों कुं[4]डली छांडि सामुद्र थाही॥
अहं सेव सामंत स्वामित्त लग्गै। सु मानो कि सेना हनू देव पग्गै॥
भए जन जनं दिठं दिट्ठ चौकी। मनों अंकुरी दिष्ट दौ नारि सौकी।
धरे ढिग्ग पग्गे भिरे भ्कल्ल भल्ले। घरी एक भग्गे नहीं होय बल्ले॥

(१) मो॰—रवि। (२) मो॰—कंठ।
(३) मो॰—रच्यौं। (४) मो॰—मंडली।

भगो सीह रायं भई कूह सद्दं । सुनी राय भोरा भने कव्वि चंदं ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

कवित्त ॥ कलह अग्ग सामंत । कांम कैमास कुसल्लिय ॥
गज्ज अज्ज सहजाज । अनुज फिरि पर्यो दुसल्लिय ॥
भल्लानी[1] भरफुट्टि । कुहि संका सामंता ॥
ज्यों कढी परनारि । धींग मिलच्यौ आवंता ॥
असमान अल्लि भूमिय अरिय । आय अमंक अमंक घर ॥
बंदियहि बाह बाहू दुहल । प्रथीराज राजंग बर ॥ छं ॥ ३१९ ॥

चालुक्यराज का धोखा करना ।

दूहा ॥ भर मिरि चौकी चंपि चलि । मिलि ठिलि अद्धां दलराइ ॥
खबर जुद्ध दरबार भौ । चढि चालुक्क रिसाइ ॥ छं॥ ३२० ॥

युद्ध का वर्णन ।

छं० भुजंगप्रयात ॥ धमं धाम धामंत धामं निसानं । निसा स्याम बज्जी सुभेरी भयानं ।
धिगं तंछि तेजी चयं चिन चिनानं । कुटे अंदु दस्ती मदं जाजु रानं ॥
चयं[2] चाय चायं दलं हिंदवानं । महाबीर जग्गे सुदग्गेह मानं ॥
गिरें रत रावत्त तुट्टे बिनानं । परी हल्ल हल्लं सुसामंत पानं ॥
कथा उच्च भारी सुभारह पुरानं । सुनें भ्रंम बक्कं सुमम्मं गियानं ॥छं०३२१

कवित्त ॥ मिले मल्ल चालुंग । जंग भोरा भुअंग जगि ॥
कै कुलाह कंतार[3] । धारा अंकूर पूर लगि ॥
कै कुलाह कुट्या कि । सिंघ मेंगल मैं मत्ता ॥
कै[4] अप्पां अप सेन । राव[5] रावत्त * बिरत्ता ॥

(१) मो॰ ह॰ को॰—भालानी ।
(२) मो॰—भयं ।
(३) मो॰—कुंतार ।
(४) मो॰—"कै अपसेना अप्प । अप्प रावत्त बिरत्ता" ।
(५) ह॰—मक्क ।
* राव॰ ए॰ की प्रति में नहीं है ।

आहत[1] सेन उत्तर दिसा। ईसानै लग्गिय लहरि॥
धावंत धाम सामंत सों। सूर समर लग्गे समरि॥ छं०॥ ३२२॥
चंडिय देवि पसाइ। हस्ति तोरै मै मत्ते॥
चक्यौ राव भीमंग। चैार मैारह सिलहंते।
कै अप्पानी रारि[2]। काइ धाम कि डंडूरिय॥
कै कुट्टा संग्राम। सिंघ संकर निज्जूरिय॥
कै वीर धांम धुज्जिय धरा। कै कलाल[3] कलपंत हुअ॥
आ जंपि जंपि जंपन कहै। जपै राज भीमंग भुअ॥ छं०॥ ३२३॥
नां अप्पानी रारि। नाहि धाइ सुडंडूरिय॥
नां कुट्टा संग्रांम। सिंघ संकर निज्जूरिय॥
है हक्कां धर कंप। चंप उत्तर थी लग्गिय।
चैाकी गस्त गुराइ। कोट कोटन दूत भग्गिय॥
सा द्रुग्ग देव सत्तरि पती। पति पहार ठेल्यौ करिय॥
आहंन हंन हंतेव हठ। निसि निसान सद्दह भरिय॥ छं०॥ ३२४॥

सप्तमी को घोर युद्ध का आरम्भ होना।

दूहा॥ सद्दां सद्द उमद्द भय। बज्जा बज्जिय लग्ग॥
जूना जंजर हैर[4] बल। भई सुरासुर जग्ग॥ छं०॥ ३२५॥
संभरि सों लग्गे समर। अंमर चैालिग एव॥
घरी सत्त सत्तमि दिवस। उग्यै उडग्गन देव॥ छं०॥ ३२६॥

छंद भुजंगप्रयात॥ घरी सत्त सत्तं उग्यै चंद मांनं। बरं बीर चालुक्क षग्गं षगानं॥
बजी जूह कूहं कलं कोकनद्दं। मनों गज्जियं मेघ नद्दं प्रसद्दं॥
कुलं बीर जग्गे मुषं नीर भारी। परे लोह आवत्तं सा व्रत सारी॥
बहै षग्ग धारं गजं सीस भारी। मनों धूम मझ्झे उठे अग्गि झारी॥
नमी तेज भग्गे जगे तेज षग्गं। बजै जंग नीसांन ईसांन मग्गं॥
करै अप्प अप्पं न्रपं बे दुहाई। नचे रंग भैरूं ततथ्येन घाई॥

(१) मो॰—आवृनसेन। (२) मो॰—कै अपनी पार।
(३) मो॰ कृ॰ को॰—कुलाल। (४) मो॰—बैर।

बढ़े बांन आवत्त सावर्त्त तेजं । तहां चंद कव्वी उपंमा कहेजं ॥
लगें अंग अरि गंजि सुग्रीव भारी । फिरंतं ज जंगंम दीसै उनारी
परें संघ बंधं असंधं निनारे । मरोरंत चोरं मनों भ्नर बारे ॥
फिरें [1] मद्धि ढालं रिनं मंभ रीती । तिनं मुक्कियं कुंत वारी निवती
छं० ॥ ३२७ ॥

युद्ध की तयारी का वर्णन, सरदारों का सेना समेत प्रस्तुत होना

कवित्त ॥ है [2] पग गै पग रथ अरथ । बढि बढी नर लग्गा ॥
कै घायां घन नंन । भयें भंमरि[3] भर भग्गा ॥
चालुक्कां चंप्यो सयंन । सें दल सामंता ॥
गोयंरद कैमास । भूप भोरा धावंता ॥
रथ सथ सिलह सज्जन कहौ । गहकि गज्जि भोरा सुभर ॥
को करै काम सो चाल कत । मथन रंभ मानों अमर ॥ छं० ॥ ३२८ ।
चक्कायो रा भीम । मत्त में गल गज्जानां ॥
सहस पंच साहन समंद । टालै ढल्लानां ॥
जंब मंच गोला गहक्क । केनी सब संक्रिय ॥
साहन वाहन बर बिरद । आवत उत्तंकिय[4] ॥
लख्खिय लोह अप्पां अपन । भर उभ्भार लग्यौ गान ॥
चल चले सेन सामंत[5] दल । मनों अंत[6] जम जुध्ध पन ॥ छं० ॥३२९॥
ना कुहा रासिंघ । डांम डंडूरन उठ्यौ ॥
ना ढंकाया आप । सेन भारथ्थ न जुथ्यौ ॥
सा मंनांरी हाक । धाक उत्तर दिसि लग्गी ॥
अप्पांनो सेना सुनत[7] । भारथ भिर भग्गी ॥

---

(१) मो०—हत्थि ।
(२) मो०—हैयग्र गैयग्र ।
(३) मो०—भूंभर ।
(४) मो०—उतंगिय ।
(५) मो०—सामंद ।
(६) मो०—अंठ ।
(७) मो०—सुमंत ।

सन्नाह राय सज्जी सुकसि । विधि विधान लग्गिय अमर ॥
चालुक्क राइ चित घूंमरी । सार धार लग्गी समर ॥ छं० ॥ ३३० ॥
महन रंभ आरंभ । जग्गि[1] भेरा सनाह सजि ॥
तब लगि दल रुक्कयौ । राज कंठीर कन्ह रजि ॥
भर अभंग चालुक्क । रोस आकास प्रमानं ॥
छाला छल तंमस्यौ । तमसि तामस तम भानं ॥
चैनेन जगि प्रलैकाल जनु । बंधि बंधि गज्जे उभय ॥
बंभांन जग्य जे उप्पने । करौं सोइ निर्वीर मय ॥ छं० ॥ ३३१ ॥

युद्ध आरम्भ होना ।

षग उभारि दल रारि । तारि कट्टन दुज्जन वै ॥
क्रौडन छंयछ नंषि । धंषि[2] अत चालुकन रवै ॥
कढि कबंध धर लुट्टि । लुथ्थि पर लुथ्थि अलुट्टिय ॥
श्रोन धार षल चल्लिय । मोह माया भ्रम छुट्टिय ॥
तुटि अंत दंत पाइक्क दुरहि । बब्बर रूप धावै अरुग ॥
पग पगति सिंभ[3] पग पग मुगति । भुगति लभ्भ कित्तौ सुजग ॥ छं० ॥ ३३२ ॥

दूहा ॥ कित्ती[4] सुजन लयौ नृपति । सुर विध्वंसन काल ॥
　　बीस सहस पारस परिय । मनों बीर बर माल ॥ छं० ॥ ३३३ ॥

छंद मोतीदाम ॥ समग्ग अमग्ग विमग्ग विसाल । रहे जुरि चालुक देवन साल ॥
　　जुरे बर बीर दसों दिसि पंति । मनों[5] घन भद्दव वर्त्तन भंति ॥
　　दोऊ दिसि घाव बढे करि साज । मनों चव चंग कुलंगन बाज ॥
　　परे बहु दंतिय[6] भंतिय काल । बरै बर ढूंढि बिवांनन[7] बाल ॥
　　मनों मुगधा मन मांन प्रमांन । रही हम अच्छरि रंकि विमांन ॥
　　सुदेव जयं जय नंषि पुहप्प । करै दोउ चंद सुकीरति जप्प ॥
　　हुकै अरु[8] कीरति अमृत एक । कहूक कवित सुधारैं विसेक ॥

---

(१) मो॰—लग्गि ।　(२) मो॰—नंषि ।　(३) मो॰—शंभु ।
(४) मो॰—कित्ति सजन जायो नृपति ।　(५) मो॰—मनो घट भद्दव सद्दु निरत्ति ।
(६) मो॰—पंतिय ।　(७) मो॰—निवांनन ।　(८) मो॰—अवि ।

सुर च्छिनंत नच्चि वीर बखांन । बढे बर बांन कमां मय[1] थांन ॥
भमंतिय गिद्धिय हद्धिय[2] भांन । रची[3] इक अच्छरि अच्छ विमांन ॥ छं०॥३३४॥

वाजिद खाँ का लड़ना और वीरता से मारा जाना ।

दूहा ॥ मद्धि षांन बाजींद भिरि । पंच सहस तिन सथ्थ ॥
• भर चालुक सेवक बली । जे घल्ले जम हथ्थ ॥ छं० ॥ ३३५ ॥

कवित्त ॥ जुद्ध जूह[4] सिरदार । ढाहि दीने बलवांने ॥
नल कूबर मनि ग्रीव । जमल भग्गा मरकांने ॥
पुब्ब श्राप नारद सम्भाह । किति दरसन हरि पाइय ॥
उत्तमंग उत्तरें । हूर लै सूर बधाइय ॥
उप्पारि षांन बाजीद लिय । षग्ग मग्ग बोहिथ्थ सें ॥
चालुक्क भीम परपंच परि । चंपि चूरि षग्गह षिसें ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

अष्टमी के युद्ध का वर्णन ।

दूहा ॥ भर पर भर बज्जै सुभर । हय गै दल भर तुट्टि ॥
चंद सीस अड्डौ चढ्यौ । बर अष्टमी अछुट्टि ॥ छं० ॥ ३३७ ॥
सै बंधन बंधन ब्रहम । पंच पंच लै तत्त ॥
दल छिक्कत छिपै सुगति । अप्प भूत अपतत्त ॥ छं० ॥ ३३८ ॥
सिसिर आइ कायर तनह । ग्रीषम सूर प्रमांन ॥
वे तहे ए तत्त गुन । विधि विधांन दै बांन ॥ छं० ॥ ३३९ ॥
बालप्पन जुब्बंनपन । लई वडुप्पन किति ॥
धनि चाला हल विति तहां । भई कन्ह जिमि किति ॥ छं० ॥ ३४० ॥

छंद नाराच ॥ परट्ठि सेन सज्ज बीर बज्जए निसानयं ।
नराच छंद चंद जंपि पिंगलं प्रमानयं ॥
गजं गजे चलं मले चले चले गिरद्धरं ।
कसंमसे उकस्स सेस कच्छपं उचक्करं ॥
उपारि भूमि दट्ठ तब्ब कंध आनि मुक्कयं ।

(१) मो०—नय । (२) मो०—पावै न जांन ।
(३) मो०—रम । (४) मो०—जूर ।

जुराव रूप जुद्ध भीम सीम नाग धुक्कयं ॥
सुअंत सथ्थ[1] विथ्थुरं अनेक भांति वाहई।
मनों कि दंड चच्चरीय बालकं उछाहई[2] ॥
झनंकि षग्ग सौं निसा चल्लू चमक्कई।
मनों कि चंद चंद सो धरा न भुम्मि सुक्कई ॥
अनेक भंति सा दुरं बजंत बान सावरं।
मनों कि जीव जंत पांनि उच्छयं उछाररं ॥
बजंत राग पंच षट् मोह बंधि आनयं ॥
अवंत सेन संधि भूप चंद जंपि पानयं ॥
ढुरंत चौरं गज्ज सीस सस्त्र मग्ग उत्तरें ॥
मनों कि कूट षोसतें सुगंग भूमि विस्तरें ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

चावंडराय के युद्ध का वर्णन।

अरिल्ल ॥ जस धवली लड्डी कैमासं। चावंड राइ बंधव अभ्यासं ॥
सस्त्र मग्ग तन[3] तिल तिल षंड्यौ। बली जूह भारथ फिर मंड्यौ ॥ छं० ॥ ३४२

कवित्त ॥ धनिव सूर सामंत। लोन ह्वै मिल्लै अरिन अट ॥
इक मागिय छुइ षार[4]। भाग चौसट्ठि षार घट ॥
ते दुसेन मुष धरनि। लज्ज सों निठु उतारे ॥
मार मार विस्तार। सार संन्हौ गहि डारे ॥
उर धस्यौ सिंधु[5] सिंधुर सुभट। उदर मध्य फुट्यौ अग्नित ॥
चामंड राइ दाहर तनौ। सोंन नेह बंध्यौ अमित ॥ छं० ॥ ३४३ ॥
एक बीस इकईस। एक इकतीस सहस बर ॥
इक्क सहस इक डेढ। इक्क बर उभय सस्त्र भर ॥
एक एक इक लष्य। विलष बल पुज्जहि देव ॥
ते जगिथ वीर बीराधि। बीर बीरा रस सेवं ॥
झाह मइंन नाहर बलिय। छलिय कित्ति दष्षिन वयह ॥
निडुर नरिंद पज्जून बल। धाइ धाइ करे दिसि दसह ॥ छं० ॥ ३४४ ॥

(१) ए०—मत्त। (२) मो०—उछाररं।
(३) मो०—तिन। (४) मो०—अपार। (५) मो०—आप।

दूहा ॥ हय हय गय नह सूर बर। दिष्षि भयानक देव ॥
जंबूरा हंमीर सों। भर भारथ वित्तेव ॥ छं० ॥ ३४५ ॥

यह युद्ध संवत् ११४४ में हुआ।

*ग्यारह सें चालीस चव। बंधव पुच अहुट्टि ॥
सु फिरि राज सेना न्रपति। भौ भारथ संजुट्टि ॥ छं० ॥ ३४६ ॥

कवित्त ॥ हय गय नर आहुटें। लुथि आहुट्टि लुथ्थि पर ॥
इक हथ दुअ विहथ। उच्च चढ़ि चित्त मद्धि धर ॥
बलि बामन रामह सुबीर[1]। पंच पंडौ बल भारी ॥
जरासिंध नर केस। नरति नर सिंघ उचारी ॥
इन समह समर इत देव मय। क्रत द्वापर कलियुग्ग मभ्झि ॥
इन करिय सोह करिहै न को। करो सुकोइ न बत्त बुभ्झि ॥ छं० ॥ ३४७ ॥
तरनि तेज तप हरन। भरन पोषन दोषन षल ॥
उदर ब्रत्ति जं करिय। उदर कट्ठै सुमध्य मल ॥
बल भट्टी जं करिय। करिय कर दंत मत्त गहि ॥
घरी एक इक पाइ। षग्ग टिक षग षेत रहि ॥
जंबूर लग्ग भग्गान तउ। बर बुल्ल तामस बयन ॥
चालुक्क आंन जंपै मुषह। रत्त मुष्प अग्गी नयन ॥ छं० ॥ ३४८ ॥

दूहा ॥ नयन बयन तन अग्गि जगि। कित्ति अग्गि जग जग्गि ॥
बर बिताल जंगम विहंसि। दससीस नर षग्गि ॥ छं ॥ ३४९ ॥
रन षग्गा भग्गान को। पत्ता चालुक राइ ॥
हंमीरां हंमीर बर। भो बर बीर विभाइ ॥ छं० ॥ ३५० ॥

उन सरदारों का नाम कथन जो लड़ते थे।

कवित्त ॥ सुअन[2] सूर सामंत। मंत लग्गे विरुझानं ॥
रा चामंड जैतसी। रांम बड गुज्जर दानं ॥

३४६—* यह दोहा एशियाटिक सोसाइटी की प्रति में नहीं है।
(१) मो०—राव हमीर। (२) मो०—सुग्रीव।

उदिग चांह पग्गार। कन्ह कूरंभ पजूनं॥
षीचीराव प्रसंग। चंद पुंडीर सु दूनं॥
महनंग मेर माह्न मरद। देवराज वग्गरि सलष॥
देवराज कुंअर अल्हन अनुज। इन बीरा रस लषि अलष॥ छं०॥ ३५१॥
निडुर बर नर सिंघ। बीर भोंहा भर रूपं[1]॥
बीर सिंह बर सिंघ। गरुअ गोइंद अनूपं॥
रा बड़ गुज्जर राम। बलिय बंभन रस बीरं॥
दाहिम्मौ नर सिंघ। गरुअ सारंग रन धीरं॥
चालुक्क बीर रन सिंघ दे। दै दुवाह दुज्जन दहन॥
सुर तांन गहन मोपन चढ़ै[2]। चालुक्कां लग्गे महन॥ छं०॥ ३५२॥
घट्टिय घट्ट निघट्ट। षांन दिष्षे इन भंतिय॥
ज्यों प्रात उडग्गन चंद। दीह दीपक ज्यों कंतिय॥
तमसि तमसि सामंत। जाइ बर बीर सुरुंध्यौ॥
उभय पुत्त इक बंधु। भीम भारथ बल बंध्यौ॥
ओहनय हथ्थ लग्गी तनह। उपम चंद सारह करिय॥
धूमली रत्ति में बंक षग। मनों चंद ह्वै बिस्तरिय॥ छं०॥ ३५३॥
नर नाहर ज्यों लरौ। अयुत नाहर षर षंडिय॥
नाहर राइ नरिंद। षेत माथा तन मंडिय॥
ढंढौ रिम्भै ढाल। हाल चालुक्कह कढ्ढै॥
आंन राज प्रथिराज। लाज सांईं सिर चढ्ढै॥
हसि कहिह बाग कढ्ढिय बली। मिलि मच्छौरि संम्हौ लर्यौ॥
जांने कि अग्गि लग्गी बनह। बंस दार दव प्रज्जर्यौ॥ छं०॥ ३५४॥
बड़ गुज्जर राजैन। कह देषै पट्टनवै॥
बैं नीसांनी मार। थाट गिर बर घट्टनवै॥
अधरा षंडन षग्ग। झग्ग झूरे सुपमारह॥
मनों सराली जंग। पांन कहें गंमारह[3]॥
रा राम देव देवत्त तुअ। जाजै जोरि जुहथ्थ किय॥

(१) मो०--भूपं। (२) मो०--कढ़ै। (३) मो०--सुगमारह।

नर नाग देव देवी विहसि। पंजुलि पंजु प्रहास किय ॥ छं० ॥ ३५५॥

जिन थक्का जरि देव। सेव थक्की मातंगी ॥
धर थक्की धर भार। भारथ क्यों शिव संगी ॥
कर थक्का करि वार। बांन थक्का कम्मांनां ॥
मुष थक्का मुष मार। ठांन थक्का तुरकांनां ॥
थक्कान जैत जज्जर बर्नां। कलिन राम गुज्जर अरी ॥
चालुक्क राव गुज्जर पती। धाय धाय घुंमर परी ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

दूहा ॥ परिय रार हिंदवांन सों। सोभत्ती रति धाह ॥
दिल लग्गा बरदाइ बल[1]। जौ हंदे हथ वाह ॥ छं० ॥ ३५७ ॥

युद्ध का वर्णन।

कवित्त ॥ हय हय हय उच्चार। देव देवासुर भज्जिय ॥
हय हय हय उच्चार। घाइ घाइं घट बज्जिय ॥
चह चह चह चासंत। बहुल षग षग्गं गहन ॥
टूक टूक उत्तरिय। बाजि नर भर भर पहन ॥
हर हार वास हर हरु भुलिय। धुअ मंडल सहह डुल्ले ॥
मंगल धनेष[2] भारथ्थ किय। जिन सु ब्रह्म साधन षुले ॥ छं० ॥ ३५८ ॥

दोहा ॥ सर्व ध्यांन बंधन सु ब्रह्म। पंच पंचल्ले तत्त ॥
पंच पंच पंचह मिले। अप्प भूत अह बत्त ॥ छं० ॥ ३५९ ॥

छंद भ्रमरावल ॥ नव जंपि नऊ रस वीर नचै। भमरावलि छंद सुकित्ति सचै ॥
रस भै छह तीय नवं नव थांन। दिष्यौ मुष रूप सु चालुक पांन ॥
भयौ मुष वीर सु भूप नरिंद। भयौ रस कारुन कहत कंध ॥
भयौ अदभुत भयांनक ब्रत्त। भयौ रसहास उमा क्रतपत्त ॥
भयौ रस रुद्र अदभुत जुद्ध। भयौ तिन मध्य सिंगार विरुद्ध ॥
भयौ रस संत भई तिन मुत्ति। दिषै जनु पल्लव लालित गत्ति ॥
टगं टग चाह रहे पल हार। उठे तहां हंकि सुबीर हुँकार ॥ छं० ॥ ३६० ।

(१) मो०--दल। (२) मो०--धुनेव।

दूहा ॥ हल बल कल साईं बिसल । मरन महूरत संधि ॥
चाहुआंन चालुक्क कै । लगे बीर गुन बंधि ॥ छं० ॥ ३६१ ॥

छंद रसावला ॥ सूर साईं रनं । बीर चक्के बनं ॥ मोह मत्ते अनं । सार पीवं पनं ॥
बार बीरा इनं । काल जुट्टे अनं ॥ षग्ग षग्गं षनं । ज्वाल लभ्भं मनं ॥
अस्त्र तुट्टे तनं । रत्त जामें षिनं ॥ लोह बज्जे पनं । डिंभ डिंभी रनं ॥
तार तारं षिनं । काल अैसे ननं ॥ रत्त अग्गं निनं । लोह न्हाए मनं ॥
नीथ कुट्टे इनं । मांस पित्तं रनं ॥ स्वामि जित्ते तनं । पिंड सारे घनं ॥
देव कामं कलं । ग्यान कुट्टे छलं ॥ जोग पावै ननं । मुत्ति मग्गं गनं ॥
॥ छं० ॥ ३६२ ॥

छंद भुजंगी ॥ चुअं रोर रोरंग सोरंग[1] सोरं । प्रजालंत बीरं निसानंत भोरं ॥
मुषं मंच कैमास नै भं[2] जिभीरं । कही चंद चंडी बरं आस पीरं[3] ॥ छं० ॥ ३६३ ।

आर्या ॥ पारसं अर्द्ध चंद्रं । तारका तार बंधं ॥ बीरका बीर संधं । सूर कुटै कबंधं ।
काल षग्गा[4] प्रमानं । देव जग्गा दिवानं ॥ गुज्जरं राय रायं । चन्द चल्यौ बिभायं ।
छं० ॥ ३६४ ॥

स्वयं भोराराय के युद्ध का वर्णन ।

कवित्त ॥ छाइ छाइ विरझाइ । नैंन तामस भय लस्सै ॥
दिष्षि रिष्षि अवरिष्षि । भिष्षि आभिष्ष स लस्सै ॥
ग्रहन गहअं ज्यों भांन । राहु लग्यौ गुर केतं ॥
यों लग्गि गहअ भीमंग । बथ्थ पल पंचं जेतं ॥
सो चल्यौ चंपि दिष्षे सकल । बलति रंघ कट्ठ सदिव ॥
सिद्धांन धंनि सिद्धां सुपत । बिपत मत्त भारथ्थमिव ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

छन्द बेलीमुरिल्ल ॥ प्रमाद उमाद सु आवध संचर । बीर बिरं भरि भूबर[5] नंचर ॥
पंज सों पंज सनेह मिलं थर । संधिय रारि सुधारि सुधं भिर ॥
ठिल्लिय फौज मिले बल[6] दुंदरि । दिट्ठ अलग्गि भयौ ससि सुंदरि ॥
अप्पय अप्प मिले भर भींमर[7] । पार अपार सरद्धर[8] धुंधर ॥ छं० ॥ ३६६ ॥

---

(१) ए.–में नहीं है । (२) मो.–दिविकास । (३) मो.–जा सरीरं ।
(४) क. मो.–कालहलग्गा । (५) मो.–भूचर । (६) मो.–दल ।
(७) मो.–सुभ्भर । (८) मो.–सारधर ।

पांनि निषेध बजी झरसें झर । जानति मां जननी पिय बंझर ॥
सें हथ बाह सयं भर सुझिय । गोहिल मुक्कि परे पय रंभिय ॥
हथिय ईकि भिर्यौ प्रभु भीमिय । लष्ष सवाय जिरीं दल जीमिय[1] ॥
उत्तर उत्त तुरंगति छंडिय । जद्दव षग्ग यियं करि मंडिय ॥

छं० ॥ २६७ ॥

लुथ्यि उलथ्थि पलथ्यि सनंथिय । हुंकत देव सिरं परि पंथिय ॥
कुंडन मुंड परे दरबारिय । आंनि कि कूर सुकट्ठ कबारिय ॥
सें हथ हथिय सें भुज पारिय । जानि चनूर[2] कि ब्रूर मुरारिय ॥
सें गुर बंध सु जांम सु चष्पय । सें दल रांमति गुज्जर नष्पय[3] ॥

छं० ॥ २६८ ॥

तीन सु तुंग किए तन[4] कुंजर । मीडत जांनि मिली भुज पिंजर ॥
तीन निमेष जगयौ जदु मुच्छिय । जयं[5] जय जोर पले उर लच्छिय ॥

भोला राय को लिए हुए हाथी का गिरना और मरना ।

चंपिय पांनि हियं दल कुष्यिय । राय समेत पर्यौ धर धुक्किय ॥
प्रांन गयौ गज गुज्जर हारिय । स्वामि गुरज्जन चंद प्रहारिय ॥

छं० ॥ २६९ ॥

पृथ्वी पर गिरने से भीमराय का महाक्रोध करके कैमास पर टूटना

भुमि परे भयौ भीम भयांनक । भीम कि भीम[6] गजाधर जानक ॥
षग्ग तुटें कर कढ्ढि कटारिय । सो कयमास ग्रह्यौ कर भारिय ॥
राउ पर्यौ निरयौ निज चालुक । दंत[7] कै कंठ लग्यौ मनों कालक ॥
कष्ष ग्रह्यौ कयमास उचारय[8] । पटन राइ जै सिंघ दुचारय ॥

छं० ॥ २७० ॥

कंध परी गुर गुज्जर रामहि[9] । जैत पवार सुमेरहि रांनहि ॥
तेन लगे चल चालत तांनहि । सिंघ परै बक्क में गजवांनहि ॥

---

(१) मो०—दलंदल । (२) को०—जा बिचनूर । (३) मो०—नंषय ।
(४) को० कृ० ए०—कोर । (५) मो० कृ०—जय । (६) मो०—नीम ।
(७) मो०—दंतिय । (८) को० कृ० ए०—उचारिय । (९) मो०—कान्हहि ।

हक्कि हमीर हस्यौ मुष नक्किय। तुम सामंत किमां मुष पक्किय ॥
गहि गल भीम झमक्कि छिलोव्यौ। अंब पव्यौ नर जांनि झंझोव्यौ[1]॥

छं० ॥ ७७१ ॥

फिरि करि वाहि नरिंद कटारिय। से मुष मल्ह[1] हमीर निवारिय ॥
गौ भजि भूप जहां रज पत्तिय। हड्डि झरें जल ज्यों गिर गत्तिय ॥
अप्प गज्यौ भर भीम महाभुज। उभय सुषग्ग सुवंक दुअंनुज[2] ॥
आय मिले भर भीम समथ्यह। जंपिय जीह हरी हर तथ्यह ॥

छं० ॥ ७७२ ॥

डंभिय बीर महा बर बीरह। सोढा सारंग देव सधीरह[3] ॥
चोरा चाचिग देव सधीवह[4]। बीर बढेल सु जुद्ध अरेवह ॥
सथ्यह सत्त सहस सु सथ्थिय। जुद्द मच्यौ सम सूर समथ्थिय ॥
भीर भई भर सामंत सूरह। बीर जगी सम बीर करूरह ॥

छं० ॥ ७७३ ॥

कैमास पर भीड़ देख कर चामंडराय का सहायता पर पहुंचना

कवित्त ॥ तामस मय चामंड। आप तथ्यह संपत्तौ ॥
चरन बंदि मथुरेस। सुने कारन क्रत तत्तो[5] ॥
सुभट पंच सें सथ्थ। मिलह बंधी सवधीरं ॥
परसि तिथ्थ कटि पाप। अप्प आवरेसु बीरं ॥
देषियै भीर कैमास सिर। सेंधि रारि उससे अहन ॥
हहकारि हक्क चामंड गर्जि[6]। सब्ब[7] लोह कट्ठु लरन ॥

छं० ॥ ७७४ ॥

घोर युद्ध का वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ कढे लोह सोहं जपे आंन ईसं। समं ज्वाल पावक्क में धूम दीसं।
बजे लोह रथ्थं[8] रजे रारि संधी। मिले षेल बीरं दुअं पंति बंधी ॥

(१) मो०—मेल्हि। (२) मो०—उनिय षग्ग सुबंक बिय भुज।
(३) को० कृ० ए० में यह तुक नहीं है। (४) मो०—चोरा चाचीय देव सुदेवह।
(५) कृ० को० ए० सुनिय कायरन क्रत ससो। (६) मो०—गसि।
(७) मो०—सबहि। (८) मो०—रसं।

षवकंत संगी चवकंत बीरं। भभकंत श्रोनं चमेनंति धीरं ॥
परुं[१] षंड तुहं कटिं चडुजामं। बधै बीर बीरत्त अंगं उधामं[२] ॥
छं० ॥ ३७५ ॥

असी झाक बाजंत पावक्क उट्ठं। जरै टट्टरं षग्ग उभ्भार मुट्ठं ॥
हरै अंत अंती परं छभि[३] तुट्टै। कटिं[४] पाइ पानिं धरं सीस लुट्टै ॥
असी अग्गि उट्टुं लगें टोप दभ्भैं। उठै श्रोन छिछं तिनं ताप रभ्भैं ॥
परें हाथ चामंड बाजी बिभंगं। नरं रुध्थ संनाह षंडं अलग्गं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

रिनं राइ चामंड षेलं कहरं। मनो भग्गलं नट्ट मंड्यौ विहरं ॥
चल्यौ गज्ज[५] पामार सिंघं समथ्थं। तिनं गज्जयं चंपि चामंड तथ्थं ॥
चप्यौ अस्व चामंड गो भूमि मग्गं। उठ्यौ असि मग्गं[६] चयो सं समग्गं
फट्यौ सीस कंधं समं झाक ताई। गचै[७] दंत दंती धमक्यौ धराई ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

फटे कुंभ प्राचार श्रोनं अजेजं। मचामट्ट फुट्या मनों रंगरेजं ॥
चली कुंभ साडंभ भेजी उपट्टं। मनो भंजियं कन्ह सोदहि मट्टं ॥
पर्यौ सिंघ भूमं करै चक्क उठ्यौ। चयौ असि विभाग लोनी अपुठ्यौ।
चचकारि सारंग सोढा समथ्थं। समं आइ चामंड सों सेल हथ्थं ॥
छं० ॥ ३७८ ॥

चयौ असि दाहिम्म सा सीस मंधे। जरासंध फट्या जरा जानि संधे
चयं सह जंपेव वट्टेल बीरं। समं अस्व चामंड चंप्यो सुधीरं ॥
चयौ सेल दाहिम सीसं सुदेसं। फटै टट्टरं पुट्ठि उट्ठे परेसं ॥
ग्रहे[८] बाह चामंड चंप्यौ सुजरं। विना अस्त्र नष्यो कलेवं सभूरं ॥
छं० ॥ ३७९ ॥

---

(१) मो०—परं पक्खु तट्टं करें। (२) मो०—बँधे बीर बीरं समंगं उधामं।
(३) मो० हक्कि। (४) मो० कडे।
(५) मो०—सलष। (६) मो०—उठे असि रभ्भं। (७) मो०—गजे।
(८) मो०—गहे।

चकौ अश्व वठेल चामंड बीरं। जवं सह जंपे सुरं सीस धीरं॥
चक्यौ अश्व चामंड चंपे अरेसं। बिबं षंड षंडं परंतं परेसं॥
परे संड मुंडं सु सामंत हथ्थं। मनों कोपि कोरी दलं पारि पथ्थं॥
परीहार सिंघं लग्यौ लोह रस्सं। मनो सूक षंषं सुरं मुष चस्सं॥
छं० ॥ ३८० ॥

नृभौ धार ईसं गयक्के बहंके। चनो सह जंपे लषे भीमधंके॥
तबे सां षुला आय बोरंम देवं। नृपं अप्प अडौ उचसे उरेवं॥
दुअं उंच गातं दुअं उच हथ्थं। दुअं सामि भ्रंमं सुधारंत मथ्थं[1]॥
दुअं सेत अश्वं षिरं गेन सारं। दुअं चाइ आभासि सेलं उभारं॥
छं० ॥ ३८१ ॥

दुअं वाहि सेलं ततं मझ्झ भग्गे। ... ... ॥
विना बाज टूनं कढे षग्ग ढानं। जुटे अंगदं भीम दुर्जोधजानं॥
उभै षग्ग भग्गे कढे जंम दड्ढं। जुटे हथ्थ बथ्थं समथ्थं सनड्ढं॥
धवक्कं हुवक्कं अमं दड्ढ पानं। लषे सीसयं फूल नष्षे सुरानं॥
छं० ॥ ३८२ ॥

करे तर्पनं रत्तपिंडं पलोरं। करे केस कुस्सं नृभै तिथ सारं॥
बरं[2] रथ्थ रोहे चढे स्वग मग्गं। धनं धंनि बानी सबै सेन लग्गं॥

भोलाराय की सेना का भागना।

गहक्केव कम्यौ सु कैमास जामं। भइंराइ सेनं भगी भीम तामं॥
छं० ॥ ३८३ ॥

दूहा॥ दस सहस्स दुअ भुज परत। रहि दरबार झुझ्झाइ॥
हसम सहित पँवर सुमति। कतिहुन बांन सिराइ॥ छं० ॥ ३८४ ॥
दरसि राज पट्टन सुपति॥ गति फर पारस लग्ग॥
मनों इन्द्र इन्द्री वरन। मुष मुष कंकन लग्ग॥ छं० ॥ ३८५ ॥
लुथ्थि रही दरबार गुथि। घरिय पंच दस रीस॥
तिंन महि सक कैमास सथ। रहिग अठारह बीस॥ छं० ॥ ३८६ ॥

---

(१) मो०-सथ्थं। (२) मो०-वरं।

अप्पांही अप्पां जुरिग । भग्गा थर वर थाइ ॥
मुथा न को मत आ करइ । कट्ठी कठुन घाइ ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

कवित्त ॥ आयौ कट्ठी स्वामि काज । साहस सामंगां ॥
बारह सें बानेत । सुमत ढुढन धावंता ॥
चैवै लग्गै हथ्थ । नथ्थ भेरें राकज्जें ॥
जो चित्त कवित्तयौ । देव दरबार सु गज्जै ॥
संग्राम लग्गि संकट सु पहु । पहु प्रहास पिंगिय पहर ॥
तुट्टिय सु सस्त्र छिन्निय सिरन । गहत गनत अच्छौ गहर ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

छंद रसावला ॥ छिंदु छिंदू ररी । लोह उड्डुं[1] झरी ॥ मुक्क उक्कीबरी । मुक्क सुक्कैब
राग रंगै तरी । भीर भागैं परी ॥ झल्ल मल्लै ढरी । ढल्ल कल्लै टरी ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

कट्ठि कूटं करी । ईम ईमं अरी ॥ भीम लग्गी घरी । राइ तुंगं परी ॥
गोम छेमं लरी । आइ क्का उग्गरी[२] ॥ कंज कूरंभरी । दाहिमानी भरी ॥
छं० ॥ ३९० ॥

जड्ड हड्डे करी । पैर वज्जीघरी ॥ सून सेनं टरी । लुथि पा पथरी ॥
कोंन जंग्ने भरी । कोयकेनी वरी ॥ जैत उप्पा भरी ॥ ... ... ॥
छं० ॥ ३७३ ॥

कवित्त । काकट्ठी झुझयौ । रह्यौ रानिंग देव उर ॥
जेन सहू धरि छच । मंच त्रिवह्यौ मंडि सिर ॥
गरुअ राव पैरंभ । रह्यौ ग्यारह से संभर ॥
पारिहार पावार । नेह निव्वह्यौ सुनिब्बर ॥
जानै न चंद आनन अनत । सहस तीन तेरह परिग ॥
गुज्जरिय ग्रेह संदेह मिटि । सहस मत्त दह निव्वरिय ॥ छं० ॥ ३९२ ।
पहुआंनां रे सेन । समुद बिच बडवा गोरं ॥
अगि सु पग्ग पगयौ । सुतमरन धन धन कोरं ॥
स्वांम छोह दहयौ । रोस नथ्थयौ सु गट्ठौ ॥

(१) मो०--झम्मं । (१) मो०--आइ कहांकरी ।

दुति ओपम कवि चंद । चंद पारस विष ठक्को ॥
झुक्कई लोह लहरैं सुतन । तुटि गुरज्ज अरि छंडिलिय ॥
कढ्यौ समर चालुक्क रन । अप्प पंच मिलि अप्प जिय ॥ छं० ॥ ३९३ ।

पृथ्वीराज का राज्यस्थापन होना ।

जित्यौ रनि रति वाह । सिंघ लीनौ गज घेरिय ॥
चलि दाहिम कैमास । दियौ चालुक मुष फेरिय ॥
वरनि संग वे थांन । राइ भोरा हय मंडिय ॥
दिषि दिसांन कग्गद प्रमांन । आव आवन लगि छंडिय ॥
ढुंढ्यौ षेत सामंत भर । आपन पर उत्तारयौ ॥
तिन रानि रारि चहुआंन दल । मंत सुमंत विचारयौ ॥ छं० ॥ ३९४

छं० भुजंगप्रयात ॥ पस्यो अष्षि हाडा हयं हड्डभग्गी । लस्यौ छोह भीमं सिरं छत्र लग्गी ॥
पस्यौ पंथ मारा[1] उपरिहार पाली । जिनै ब्रह्मचारी चितं किन्नि आली ॥
पस्यौ माझ मोहल्ल मल्लीन वल्ली । जिने देह रत्ती करी सत्त ढिल्ली ॥
त्रिभै जैत बंधं पस्यौ धार नाथं । मही राव भागै नहीं जासु हाथं ॥
छं० ॥ ३९५ ॥

सहदेव सोनिग्ग चौषथ्थ हथ्थैं । रची रंभ ढिल्ली गुनं गैन गथ्थैं ॥
अचारी असंभी जयं जोग ध्यानं । कवीचंद किती करैं का वषानं ॥

आबू का राज्य जैतसी को सौंपना ।

रतिं वाह जित्यौ जयं जैत सूरं । वदे ग्रेह सामंत तत्ते सपूरं ॥
गजं वाज लुट्टे रु कुट्टे पवारं । दियौ राज अब्बू सदुग्गं अधारं ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

परे स्वामि कामं जु सामंत सथ्थी । प्रकारे[2] सु चंद्रं दिसा सुद्ध पथ्थी ॥
जयं पथ्थराजै सु सोमेसपुत्तं । चढ्यौ संभरी राव सो छत्र हित्तं ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय सों जुद्ध सामंत विजै नाम द्वादस प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १२ ॥

---

(१) मो० मयार परिहार । (२) मो० प्रकासे ।

अथ सलष जुद्ध समयो लिष्यते ॥

(तेरहवां समय ।)

सिंहावलोकन ।

दूहा ॥ गह उग्गह निग्गह करन । भिरन भूप चहुआंन ॥
सिंघालोकन कथ्थ कथि । सो कवि चंद बषांन ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ धन निधन होइ षपहि । षपहि रन वीरह काइर ॥
कुहं बल वे पांन । बीर चक्के बल साइर ॥
अधम जुद्ध नह आदि । जुद्ध हिंदवान हिंदु बर ॥
चाहुआंन सुर तांन । कहो कलहंत केलि भर ॥
आदेव सेव चहुआंन किति । चालुक्का लग्गे भिरन ॥
सम मुगति बंध बंधै बलिय । सुबर बीर लग्गे तिरन ॥ छं० ॥ २ ॥

गाथा ॥ ढिल्लिय ढाहन सब्बं । बज्जिय आगाज राज राजेन्द्रं ॥
ग्रामं पुर अजमेरं । जग्गे सय वीर विक्कंदं ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ सयन सिंह लग्गा सुअरि । सुनि करि बर प्रथिराज ॥
सा हंडे संम्हौ चल्यौ । तहं गोरी प्रति बाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

गाथा ॥ भारद्दाज सु पंषी । उभयं मुष उद्दरं एकं ॥
त्यों इह कथ्थ प्रमानं । जांनिज्यो कोविदं लोयं ॥ छं० ॥ ५ ॥

उधर भोला भीमदेव से सरदारों की लडाई ठनी इधर शहाबुद्दीन की खबर लाने दूत गया, उसका लौटना और पृथ्वीराज से विनय करना ।

दूहा ॥ उत भोरा भीमंग सों । सूरन संध्यौ सार ॥
इत प्रथिराज नरिंद को[1] । दूत संपते वार ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ह० को० मो० के ।

अंग भसम जंगम जुगति[१]। जटा जूट सिर मंडि॥
कसिल गोट म्रिग चर्म पट। बड आडंबर छंडि॥ छं०॥ ७॥
नयन जोति वत्तन बिदुष। असन दंभ कछु आंन॥
षवरि होर बुल्ले निकट। दुवा दीन[२] चहुआंन॥ छं०॥ ८॥

साटक॥ श्री चहुआंन नम्यिद[३] इदं अवनी भूपाल भूपालयं॥
जंबू द्वीप महीप द्वीप निबलं कित्तीति विस्तारयं॥
षग्गं वास मैवास वास हसनं गर्भा न गर्भं गलं॥
तोयं जैति जिहांन भांन तपनं मोनं द्रष्टा जे बलं॥ छं०॥ ९॥

वार्ता॥ अचहु श्री चहुआंन गाजी। पलक तो षग राजी॥
मेवास मार बाजी। पर्व तो सरन साजी॥
भैभीत[!]भूपं षषेवं। फल पत्र कंदं भषेवं॥
आवास निवास नैरं। जहां तहां तजमि धतूर षेरं॥
अजमेर पीर सहाई। दुसमंन पैमाल लषो देव हाई॥
पीर पैगंबर दुवाह गीर सारे। अन मीन महूचिन दंत चारे॥
ढिल्ली तषत थिर राज तेतें। गंग जल जमन रवि चंद जेतें॥ छं०॥ १०

दूत का आकर पृथ्वीराज को ख़बर देना कि तीन लाख सेना के साथ शहाबुद्दीन आता है।

दूहा॥ सुनि दुवाह जंगम चरन। आडंबर तन तिच्छ॥
रिंभिय गल्हां गुर सुतन। कहो षबरि की मिच्छ॥ छं०॥ ११॥
कहै दूत दिल्लेस सुनि। चरचि बत्त चहुआंन॥
हम आए तब उन कियो। बाहिर नगर मिलांन॥ छं०॥ १२॥
कहै बिवर सांई सुनो। गज्जनेस सह भेव॥
तीन लष्य साहन सबल। अकल अनंम अतेव॥ छं०॥ १३॥
बंके मुष बंके बचन। बंकी करन कमांन॥
बंक दीह सम करि गनो। बंके षग्ग अमांन॥ छं०॥ १४॥

दूत का ब्योरे के साथ शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन करना ।

छंद पद्धरी ॥ कर जोरि अरज तिन करी राइ । गनि कहै सेन जे जुरे आइ ॥
दस सहस सेन षग्गर अगंज । अति उंच गात साटूल पंज ॥ छं० ॥ १५ ॥
बत्तीस सहस कविली कहर । जम जोर जोध निज्झरि गह्वर ॥
कसमीर कहर सत्तरि हजार । कमनैत काल मुट्ठी समार ॥ छं० ॥ १६ ॥
हबसीह संम चैपन हजार । कर धरैं कहर कत्ती बजार ॥
पेंतीस सहस रूमी रहस्सि । तिन गहै लोह मह मह वहस्सि ॥ छं० ॥ १७ ॥
सेंतीस सहस सज्जे फिरंग । तिन लंब भूल टोपी सिरंग ॥
सचह हजार सज्जे पठांन । अनभंग जंग अनभूल वांन ॥ छं० ॥ १८ ॥
दस सहस सेन सज्जे सजह । बाराह बैर बल घट अघह ॥
पब्बह सहस पस वांन साह । अंगन अगंज को सकै गाहि ॥ छं० ॥ १९ ॥
पचीस सहस सागिरद पेस । कामीक कमल पेषे असेस ॥
सुलतांन षबरि इह सेन पाइ । बगसी सहाव बरनी सुनाइ ॥ छं० ॥ २० ॥
तिन मद्धि इक्क लष अकल जीव । जांनै न भज्जि[1] बज्जी करीव ॥
तिन मद्धि मीर के समर धार । तिन माया न मोह पिष्षिय लगार ॥ छं० ॥ २१ ॥
तिन मद्धि मिले केतवल साज । सम रंग जंग जनु परत गाज ॥
पचास सहस तिन मद्धि असंक । तिन चित्त अभै भै भीत बंक ॥ छं० ॥ २२ ॥
तिन मद्धि तीस बहरी बलाइ । हुकमी हसंम जनु सोर लाइ ॥
तिन मद्धि सहस दस समर धार । अरि मार सार जै करै सार ॥ छं० ॥ २३ ॥
तिन मद्धि पंच सें सच सूर । रन रंग नेंन लषियै कहर ॥
पंच बीस पंच दिन करैं निवाज । हक अहक बत्त जिन नहीं काज ॥ छं० ॥ २४ ॥
षय काल पाक अस्रांन अंग । छल छेद भेद जिन नहीं रंग ॥
संमरन संग जिन नही दूव । अल्लाह लाह व्यापार भूव ॥
की रीय करी जिन देह एक । धैराति षरच षज्जी न टेक ॥ छं० ॥ २५ ॥
दूहा ॥ कहै दूत प्रथिराज सम । मिछ सेना बरजोर ॥
सहर निकसि बाहर भए । बंब बज्जि घन घोर ॥ छं० ॥ २६ ॥

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का क्रोध करना।

कवित्त ॥ सुनत सुवन सोमेस। भैस भैभीत भयौ तन ॥
रोस रंग प्रज्जलिग। मंगि संन्नाह अमर जन ॥
चयन हुकुम करि देन। मंत गज अंदु न पुच्छिय ॥
नालि गोल जुत जंच। चसम चाजुर सह बुच्छिय ॥
लोहांन बोलि आदर अनंत। बिवरि बत्त दूतन कही ॥
बिफरि बीर उक्कन सुनत। जनु कि पुंछ मिंडिय अही ॥ छं० ॥ २७ ॥

लोहाना का क्रोध करके शाहगोरी के नाश करने की प्रतिज्ञा करना।

पुच्छ चंपि जनु चिल्ह। सिंघ सोवत जग्गाइय ॥
चक्काचौ कि वराह। ढंग जनु अग्गि लगाइय ॥
बरड छता कै छेरि। गाय ब्यानी बग्गानिय ॥
कै जग्गाए बीर। भीर भारथ मग्गानिय ॥
बिरचयौ लोह लोहांन सुनि। जच कच मेछन करों ॥
सोमेस आंन सुरतांन धर। तर ऊपर गज्जन करों ॥ छं० ॥ २८ ॥

आबूपति सलष आदि का अपनी सेना तयार करना।

सुनि अवाज सुविहांन। सलष अब्बू पति रष्षन ॥
सहस सत्त सजि सेन। गिलन गोरी भर भष्षन ॥
गजन पंति ढुलि ढाल। तत्त तोषार पष्षरिय ॥
जंच गोर गहरांन। मिलन मेछांन मष्षरिय ॥
अनभूत भूत संनाह सजि। बजि निसांन घन घुम्मरिय ॥
हम जैत सुवन द्रुवननि दहन। लरन लोह मन गुंमरिय ॥ छं० ॥ २९ ॥
पुनि गुज्जर बलि बंड। लोह अन डंडनि डंडन ॥
रहसि राम रन जंग। नथन अन नथ्थन संडन ॥
अट्ठ सहस असवार। सार पाहार प्रव्रत्तिय ॥
दांन ध्यांन असनांन। सोक संसार निवर्त्तिय ॥

अनचिंत्य आइ सारोंड सह। जनु अकाल पावस मंडे ॥
आवाज साह श्रवननिनि सुनत। सकल सुष्य विभ्रम छंडे ॥ छं० ॥ ३० ॥

पुरोहित गुरु राम का आशीर्वाद देना।

फुनि आई गुर राम। माम भुज डंड समर जिहि ॥
जांनु भारथं द्रोन। श्रोन बरषंत सस्त्र जिहि ॥
अस्त्र श्रयुत निहि नीन। ग्यांन विग्यांन विनांनिय ॥
मंच जंच आराध। सध्य जिन बीर विग्यांनिय ॥
आसीस आंनि चहुआन दै। कहा विरम साजिन चलौ ॥
चंपै न सीम साहाब सक। धक धकि घर करिहौ प्रलौ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ दिषि डरांन डूंबर सयन। गहकि गज्जि नीसान ॥
घर धुंमर अंमर[1] मिलिय। मुदित रोस रीसांन ॥ छं० ॥ ३२ ॥

थोड़ी सी सेना के साथ शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये पृथ्वी-राज का निकलना।

कवित्त ॥ सहस पंच दस सेन। अलप चहुआंन संघानिय ॥
बाल पोस प्रत्यंग। सस्त्र सचंग निघानिय ॥
चमर तबल टंकार। हंक हंकार हकारिय ॥
लोह छक घर धक्क। कंक अनसंक बकारिय ॥
सहस तीस सह सेन मिलि। गिलन मेछ गज्जे गहर ॥
तिन संग बीर बेताल चढि। पढत मंत बछ्रे कहर ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन से लड़ने के लिये सारूंडे पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ सजि धायौ चहुआंन। साह सारुंड सु संभरि ॥
उन जित्यौ चालुक्क। रत्ति रति बाह सुभंमरि ॥
धनि सुभाग प्रथिराज। बीर भोरा बिडारयौ ॥
अरि अनंत कलहंत। सेन सामंतन भारयौ ॥

लग्गयौ षग्ग उड़ि हथ्थ तें । चिया नयन मत्ता मयन ॥
गाहंन गहन दुज्जन दलन । सुबर सूर सज्जिय सयन ॥ छं० ॥ ३४ ॥

लोहाना आजान बाहु का पांच सौ सेना के साथ आगे बढ़ना ।

लोहांनौ अगिवांन । सेन सै पंच चलक्किय ॥
पंच सहस सों सोम । पुत्त करि तोन पलक्किय ॥
गौ डंडा नीसांन । एक दस अट्ठ सुभेरिय ॥
ओरुंगी सन्नाह । फौज चहुआंन सुफेरिय ॥
उत्तंग ढालकी बैरषीं । कोहंकै अट्ठारहां ॥
निसि जाम तीनि बित्ते पतिय । पंजूराय सुढारहां ॥ छं० ॥ ३५ ॥

तातार खां का सुलतान से चौहान की सेना पहुंचने का समाचार कहना ।

अरिल्ल ॥ तौ प्रसंन कीनौ चहुवांन । बल जल धर धंमर परिमांन ॥
आयौ अनी बंधि सुरतांन । कही षांन तत्तार प्रमांन ॥ छं० ॥ ३६ ॥

सुलतान का अपनी सेना को तयार करना ।

दूहा ॥ दल सज्जिग सुरतांन नें । है गै गगन गभीर ॥
जनु भद्दों भर उंनमत । बादू भांन चँपि सीर ॥ छं० ॥ ३७ ॥

सुलतान का उमराओं से कहना कि अब की अवश्य जीतना चाहिए ।

बोलि उंमरा मीर सब । यौं जंप्यौ सुरतांन ॥
अब कै पग गड्ढे गहौ । भंजो षेत परांन ॥ छं० ॥ ३८ ॥

खुरासान खां तातार खां आदि सरदारों का बादशाह की बात सुन आक्रोश में आना ।

कवित्त ॥ षां षुरसांन ततार । षांन रुस्तंम अधिकारी ॥
बली षांन पीरोज । नांम रोजन रज धारी ॥
षां रूमी हबसी हुजाब । षांन षांनां रुस्तंम षां ॥
जमन जुद्ध बर मुद्द । सुद्द अनुरुद्ध मुस्त षां ॥

सुरतांन चमाऊ हथ्थ धरि । गहक्कि गज्जि षग हथ्थ लिय ॥
रष्ष सुजीय हम साह सुनि । जौ बंधै चहुआंन जिय ॥ छं० ॥ ३९ ॥

सब सरदारों का सजकर धावा करना ।

हॉलि षांन सुरतांन । बाह लंबी पस्सारिय ॥
है षीना षुरसांन । मरन सांई अधिकारिय ॥
सरन जाइ षुरसांन । बंधि वा रूप मइंगल ॥
षेलि षांन सजि प्रांन । सेंन सज्यौ दिसि जंगल ॥
बढि सुबर भिल्ल अरु बयन जिय । आनंद्यौ गौरी गरुव ॥
धाए सुभ्रम बद्दर मनों । सस्त्र धार धावै धरुव ॥ छं० ॥ ४० ॥

सेना की चढ़ाई का आरम्भ होना ।

छंद मोतीदांम ॥ सज्यौ बर गौरी साह सयंन । सुमोतिय दांम बरंन वयंन ॥
छिति छच छिती पति बज्जहि छोइ । उगे जनु अंकुर बीज सुदोय ॥ छं० ॥ ४१ ॥
बजे रन तूर वरद्दय[1] कन्न । जग्यौ जनु बीर दुती सिर पंन ॥
बजे रन रंग रजौ दन मोद । फले बल मध्य कला छन क्रोध ॥ छं० ॥ ४२ ॥
चलं हल बद्दल सद्दल बांनि । उपट्टिय सत्तय सिंघ प्रमांन ॥
बजी रन रंग सुरंगय भेरि । धरी रथ नारि छतीसउ फेरि ॥ छं० ॥ ४३ ॥
बजी सहनाइन फेरि उपंग । बजे दस पंच स सिंधुअ रंग ॥
बजे रव रंग निसांन दिसांन । बजे घन चंबक ढोल निसान ॥ छं० ॥ ४४ ॥
बजे घरियारि रनं किय घंट । बजे घनि घुघ्घर पष्षर अंट ॥
बजे तंबल सुर तंग तदूर । बजे रन बीरनि झालरि रूर[2] ॥ छं० ॥ ४५ ॥
बजी सिर चोट दमांमन रीस । नचै जनु गंगय अग्गय ईस ॥
फिरें गज राजत गज्जत पंति । करी मनों कज्जल पव्वय कंति ॥ छं० ॥ ४६ ॥
बनी गजराजन वैरष पंति । मनों बनराइ बसंत चलंत ॥
चले बनि पंतिय दंतिय जोर । ढुरै छच रंग नछच चिलोर ॥ छं० ॥ ४७ ॥
चढे गज अंडन बंधिय पांनि । चढें गज राज चले गिर जांनि ॥
छरं छर पाइ छुतौ छर छोइ । पुजै नच बांन कमानह कोइ ॥ छं० ॥ ४८ ॥

(१) ह० को०—रवद्दुय । (२) ह० को०—कूर ।

सउज्जल दंत न उप्पम बांनि। मनों बग पंति पनी[1] घट जांनी ॥
बदै नन अंकुस बूह चिकार। सचै नन वज्जय वज्ज प्रहार ॥ छं० ॥ ४९ ॥
जरैं नग दंत न हेमह मुत्ति। मनो घन मंझह विज्ज पवंत ॥
छयं घन पट्ट सु किंकय तांम। झरैं झरनां जनु पव्वय स्यांम ॥ छं०॥५०॥
मचै तहां कद्दव कीच झकोर। करै तहं दद्दुर घुग्घर सोर ॥
घरैं धर पाइ चरे हर जोट। चलावत मेर कहां कहो कोट ॥ छं०॥ ५१ ॥
बियं बिय बैारंग जें गज लेहि। लरैं नह सायर ढिग्ग समेंहि ॥
बनो बर नारिय रेसम रंग। चढें गिर इंद बधू मनों चंग ॥
तिनं उपमा बरनी नन जाइ। प्रलै घन संकर कुट्टिय पाय ॥ छं० ॥ ५२ ॥
दूहा ॥ पाइ दाइ धर वर धरै। सद मद गोसन जंग ॥
दुअन दिषाअै देषियै। जनु बिस भरे भुजंग ॥ छं० ॥ ५३ ॥

चैाहान की सेना का पूर्व और पच्छिम दोनों ओर से चढकर मिलना।

निसि पद्धरी नरिंद तो। सज्जि सेन चहुआंन ॥
मिले पुव्व पच्छिमहुतें। चाहुआंन सुरतांन ॥ छं० ॥ ५४ ॥
हय गय दल बद्दल सुअन। नर भर मिलि चतुरंग ॥
चाहुआंन है वैजु सों। बढिय रारि रन जंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥

खुरासानियों का चैाहानों पर टूट पड़ना।

घरी एक पल विपल हुअ। लोह षेलि षुरसांन ॥
उररि परे दोउ दलन वल। चाहुआंन तुरक्कांन ॥ छं० ॥ ५६ ॥
लै संभरि पति सगुन वर। पुट्ठि पवन प्रथिराज ॥
जुग्गिनि चक्क अचक्क बर। सो सम्ही अरि काज ॥ छं० ॥ ५७ ॥
लै जुग्गिनि प्रथिराज बल। संमुह दै पति साह ॥
च्यारि घरी घरियार ज्यों। चच्चर सी सम राह ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१)-ह०-घनो। को- घनी।

शाह की सेना का युद्ध वर्णन।

छंद रसावला ॥ साह गोरी भरं। सेन संभं फिरं। * * * * * * * * ॥
लोह कट्ठे करं। बीज झंपं झरं। असि बंकी करं। चंद वीयं वरं॥
नैंन रत्ते करं। कंध कट्ठे करं[1]। वं बजे घुघ्घरं। मुष्पजा कंदरं ॥५९॥
बीर बड गुज्जरं। सेन बड्डी परं। असि मारं झरं। उत्तकंठं परं॥
रंभ ढुंढै बरं। लुथ्थि आलुथ्थरं। सेन भग्गं परं। लोहु ले उच्चरं॥६०॥
पंथ ते उत्तरं। भार नंषे सरं। जोग दिष्पै नरं। सिद्ध तारी पुरं॥
बजीयं यों करं। मुत्ति बंधं परं। सूर नांही डरं। स्यार पच्छे परं॥ छं०॥६१॥
दूहा ॥ उनंगे सुरतांन दल। साहुडे चतुरंग॥
दीह दुघड्डी रन मिले। सोभर नीं किं जंग॥ छं०॥ ६२॥

दोनों सेनाओं का मुठभेड़ होना, सलष राज का भी आकर मिलना।

छंद भुजंगप्रयात॥ जुगं जंग लग्गे हलक्के गुमानं। ढलक्के सुने जा चढयौ सू विहानं॥
नियं नद्द नीसांन बज्जे विहानं। परी श्रोल आलंम हुअ जान थानं॥
चढी चक्क चक्की हुअं सोर झोरं। मनों मेघ घोरं कियं सोर मोरं॥
कहैं षांन जादे अबे सू विहानं। चढयौ साहि सद्दैं अरे चाहुआनं॥ ६३॥
भरक्के भराहं उनें हंस नद्दं। भए बंध हीनं घने मेक अद्दं॥
असैारा अछेहं भगे बंध फौजं। मिल्यौ आय फौजं सलष्यंति सौजं॥
उतंगं सु गातं भरं बथ्थ घातं। सनेही सुभट्टं मनों सिंघ वातं॥
अलग्गं सुलग्गं उक्कारंत मेकं। उडी पंति गत्तं बंधे रेस रेसं॥
कला सूर एकं असू रंस चौकी। सचै कौन मारं विसूरं सु सौकी॥
छं०॥ ६४॥

सलष की प्रशंसा।

कवित्त॥ ढंढो रज्जहि ढाल। मुरें गौरी दल अविहर।
अविहर दल विहरंत। परे सिल्ला रति असि झर॥
असि झर भर भिंगई। मलिक दावानल लग्यौ॥

---

(१) को०—वरं।

दावानल प्रज्जल्यौ । पिठ्ठ सु समान विलग्यौ ॥
सूरिमा चाक्र संभरि सचिक्क । त्रिगुन सह लय दल सहुअ ॥
दल प्रलय होल कौ अंग में । पष्षर लष्ष सलष्ष तुअ ॥
छं० ॥ ६५ ॥

त्रिगुन चाह पामार । भिरिग चौक्कीय चक्कारिम ॥
चक्का व्यूह अहिवंन । मनौं जै द्रष्ष सु दाडिम ॥
धरि धारह धारार । धार धारह आवट्टिय ॥
आहुट्टिय मनौं सिंघ । सिंघ ए काम उपट्टिय ॥
जज्जरिय गात आघात उठि । प्रभु अबु अठहह अठिल ॥
घरि एक बार संभरि सुभर । रन त्रिघात नंचिय नठिल ॥
छं० ॥ ६६ ॥

आजानबाहु लोहाना का मारकर भागना ।

लोहांनौ आजांन बाह । बाहन वहि लग्गौ ॥
त्रिगुन चाह त्रिसीय । मार भारी भर भग्गौ ॥
तब जग्यौ सुरतांन । षांन षग्गह षंधारिय ॥
बाह बाह आलंम । अभग आलम कहि सारिय ॥
बिस्तरिय बचसि हिंदू तुरक । किरकि कंक मंजन करिय ॥
संभरिय धरिय संमर तनिय । कब्बि मुष्ष अस्तुति धरिय ॥
छं० ॥ ६७ ॥

दूहा ॥ जहां जहां रन अंकुरिय । तह तह चंपिय राज ॥
मिच्छ सेन एकत करिय । मनौं कुलिंगन बाज ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सलष राज की वीरता का वर्णन ।

कवित्त ॥ ढंढो रिज्जे ढाल । ढाल ढंढोरि ढंढोरै ॥
मुरै ढालंढी चाल । चाल अरि माल बिछोरै ॥
अरि बिछोरि अरि माल । सलष उभ्भो पय पय ग्रसि ॥
षसि नाग गिरि नाग । तेग कढ्ढे बढ्ढे लसि ॥
दन देव दष्ष गंध्रब्ब गन । अजुन जुद्ध दिष्षै अदय ॥
चहुआंन सेन सुरतांन सों । सुजनु अंत लग्गे सदय ॥ छं० ॥ ६९ ॥

बड़ गुज्जर और तातारख़ां का युद्ध वर्णन।

बड गुज्जर रा रांम। उत्त तत्तार मंडि रन॥
सार धार उभ्भरिय। श्रोन झंझरिय गगन तन॥
लोह छड्ड उड्डंत। हंस कुट्टंत और सर॥
फिरत रुंड बिन मुंड। दंत बिन सुंड सार झर॥
अदभुत भयावह समर मच्चिय। रचिय रत्त काली कहर॥
इक लरत गिरत घुंमत घटत। भटकि नह मंडिय बहर॥
छं० ॥ ७० ॥

छंद हनूफाल॥ कहि हनुं फालय छंद। मिलि साहि गोरिय दंद॥
तत्तार षांन मसंद। बड गुज्जर राम नरिंद॥ छं०॥ ७१॥
नट वरह मंडिय ष्याल। पर हत्ति हाल बिहाल॥
झरि रार रत्तह भीर। उठि अंग अगनित बीर॥ छं०॥ ७२॥
कढि लोह कोह दुदीन। बजि तार झार सुभीन॥
कर कंठ कंठिय जां'न। करै देव दुंदुभि गांन॥ छं०॥ ७३॥
नचि चक्क चक्कि गरिट्ठ। अरि भवत इष्ट सु दुष्ट॥
बनि सार धार करक्कि। परि सीस भूमि तरक्कि॥ छं०॥७४॥
उडि छिंछ इच्छ प्रकार। रुधि बहै अंगन धार॥
इन भेष राजत बीर। मधु माध हक्क सरीर॥ छं०॥ ७५॥
सुनि श्रवन समझन बेन। आहत्त घाय प्रचेन॥
परि अंग अंग निनार। बजि दिव्य देवन तार॥ छं०॥ ७६॥
असि बजत सार सरीर। जनुं झिलत सूरत नीर॥
अँग अँग घाइ घनक्कि[1]। जलजात बोलत थक्कि॥ छं०॥ ७७॥
सुरतांन आंन कहंत। सुनि सेन सघ्य गहंत॥
टरि घरिय मध्य मध्यांन। चहुवांन देषिय भांन॥ छं०॥ ७८॥

दोनो सेनाओं का एक घड़ी तक एकमेक हो जाना और घोर युद्ध होना, आकाश न सूझना।

(१) को०--घनक्कि।

कवित्त ॥ भांन द्दिष्षि धुंम्मरौ। रैंन उड्डी वर धूंमर ॥
चक्रित देव गंध्रव। ईस चक्रित गुन अंमर ॥
टोप नेत चक चेत। अग्गि उड्डिवी असि टोपं ॥
मुकर मध्य जनु ईस। नेत देषत चय कोपं ॥
घरी एक एकमिक्क हुअ। मचन रंभ मच्चौ सुविय ॥
इक परत गिरत तुट्टत सुनन। इम क्रिचिय क्रिति पर सुभिय ॥छं०७९॥

कैमास का साथ छोड़ कन्ह चौहान का भी साकंडे में आ जाना।

दूहा ॥ कन्ह छंडि कैमास फुनि। सुधि साकंडां रारि ॥
तनक भनक सो सुनत ही। जांनि कै घप्पी धारि ॥ छं० ॥ ८० ॥

कन्ह का बड़ी वीरता से धावा करना।

कवित्त ॥ धारि धाप धपि कन्ह। आंनि अनचिंत परी रन ॥
वसीह सम संघरन। जांनि द्व दंग सुक्कवन ॥
कै आषाढ उडूर। तोरि तर म्रूल उक्कारिय ॥
कै व्यानी वाघनि सुपत्त। उकति आषेट उक्कारिय ॥
रूठो कि रिच्छ राषिस दलन। समर सेन धक्काह धरिय ॥
नंषत जांनि सरवर सुभर। कढि सरोज मत्तौ करिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दोनो ओर के सरदारों का महा क्रोध कर करके युद्ध करना।

छंद भुजंगी ॥ पच्यौ धाइ सुरतांन सुविहांन गोरी। चंपे चाइ चहुआंन गौ पंच डोरी॥
षिझ्यौ वंक सूरं सलष्षं पवारं। व्रपं साइ टट्टी किसारं किवारं ॥ ८२ ॥
षिझ्यौ कंन्ह कंकं झंडा मड्डि गाढौ। मनों राष्षसी सेन में कप्पि ठाढौ॥
गहे दंत दंतीय भुज्जं उषारै। [1]धरा कड्ढि मूला मनो मार डारै ॥ ८३ ॥
दुवं वीर चक्र महावीर सद्दं। भये रंग रत्तं मनों मल्ल चद्दं ॥
लगै सस्त्र अन संष हथ्थीन टारै। [2]मनों कोपियं भीम प्राहार फारै ॥ ८४॥

(१) को०–इस तुककी जगह यह तुक है "–मनो को पियं भीम पाहार फारै।
(२) को०–इस तुक की जगह यह तुक है "धरा कड्ढि मूला मनो मार डारै।

तुटै टोप टूकं सुउब्भुत दीसैं । मनों चंद तारा नषै षघ्य रीसैं ॥
लगी नाग मुष्षी गजं सीस भारी । मनों हार हथ्थे षिरक्की उघारी ॥८५॥
झुले सेल सालें बरं बीर दीसं । मनों सिद्ध नारी लगी सीस ईसं ॥
परं तेन दीसं बरं बीर कोई । लगें धार धारा रजी रत्त होई ॥८६॥
पर्‍यौ राउ रघुवंस बरसिंघ जोरं । जिनें मुक्ति लभ्भी बरं बीर भोरं ॥
बजें धार धारं गजं सीस तेगं । नचें जांनि बीजं घनं मध्य बेगं ॥८७॥
लगै कुहुक बांनं गजं जोर सीसं । उठे छिंक इच्छं गिरं ऊक दीसं ॥
भरं सुंड रत्तं सहं अंग ढोरं । स्रवें बद्दली मेघ गेरून धारं ॥८८॥
घुमें मुक्कि सीसं भटं लोह छक्के । उभै जांनि भूतं महा मंच चक्के ॥
फिरें रुंड विन मुंड रस रोस राचे । मनों भग्गरं नट्ट विद्या कि नाचे॥८९॥
परै अस्व हुत्तं सिरं जोर सूरं । तुटें षुप्परी षड्ड ह्वै भूर भूरं ॥
लगै गुर्ज सीसं भजी भंति कुड्डुं । मनों मंथनं दद्धि मंथान उड्डुं ॥९०॥
छुभ्रै छीन छीनं करी मार छक्कै । भरं रत्त डोरी महा मल्ल चक्कै ॥
भिरै सस्त्र विन वथ्थ भर भीर भीमं । परें लोथि जूथं बिनं जीव धीमं॥९१॥
सरंतं जदीसै परं तेन कोई । लगे षग्ग षग्गं स्रमे मल्ल होई ॥
तुटें दंत दंती कि रद्दा निनारें । मनों कज्जलं कूट तें चंद झारें ॥९२॥
दोऊ क्रम्न हत्थी चुवै रद्धि भारी । मनों कूट तें उत्तरै भूमि रारी ॥
बहै बांन कंमानं मिटि थांन थांनं । तहां पंति पंषीय पावै न जानं ॥९३॥
उते षांन गोरी इते सिंघ राई । मनों वीय सिंघं पलं काज धाई ॥
चंपे गिद्धि मंसं उडै रुध्धि कुट्टै । मनों रत्त धारा नभं मेघ वुट्टै ॥९४॥
मुर्‍यौ साहि गोरी महाबीर धीरं । तसब्बी तिनष्षी लिए षिझ्झि तीरं ॥
धरी ध्यार ज्यौं चंचरं षग्ग संध्यौ । पक्‍कै साहि गोरी सु चैाहांन रुध्यौ ॥छं०॥९५॥

कवित्त ॥ करिय पार सो भंत । रुधिर जल रजि[1] सज्जिय सर ॥
केस रज्जि सेवाल । मकर कर जंघ मीन नर ॥
षुप्परि कच्छ सुअच्छ । बसें तहां गिद्ध सिद्धवर ॥
रंभ अंभ तहां भरै । फुल्लि पोइन सु मुष्ष नर ॥

(१) को- रज्जि सजिय ।

अब देहिं ताहि तारिन छुटै । मात पित्त गुरु मंनि भुम्म ॥
नन करिय कोइ करिहै न को । करें जु ए सामंत भुम्म ॥ छं० ॥ ९६ ॥

दूहा ॥ पुनित गुनित गुर मंत्र गुर । धुर बहल दल गाजि ॥
सूर अमर संचरि समर । दिषन राम गज बाजि ॥ छं० ॥ ९७ ॥

आकाश में देवांगनाओं का वीरों को वरन करना ।

कवित्त ॥ गजं जागि जनु जगिग । पवन बसि मंत्र बीर बर ॥
धर अंमर धमधमिय । क्रमिय सब सेन चयनि चर ॥
तीर तुबक तरवारि । कुंति किरवांन कटारिय ॥
दुरित[1] ढाल गज माल । जांनु जल जोर अटारिय ॥
छुअ धुंध धरनि सुभिक्ख न नयन । श्रवन बयंन न संभरहि ॥
अछ्छर अकास अनंद मय । बैठि बिमान सुबर बरहि ॥ छं० ॥ ९८ ॥

गुरु राम का एक मंत्र लिखकर म्लेच्छों की सेना पर डालना ।

दूहा ॥ राम मंत्र इक जंत्र लिषि । कग्गद सर मुष रष्षि ॥
षंचि कठिन कम्मांन कर । म्लिच्छ सेन पर नष्षि ॥ छं० ॥ ९९ ॥
छंद बिभूत पढि छप्प धरि । संमुह समर उड़ाइ ॥
अचल चित्त जिन जिन तनह । धीरज तिनहि डिडाइ ॥ छं० ॥१००॥

मंत्र के बल से शाह की सेना का मायां में मोहित हो जाना, इधर से क़ाज़ी ख़ां का मंत्र बल करना और युद्ध होना ।

छंद भुजंगी॥ करी मंत्र विद्या गुरं रांम गांनं । ठगे हेन मिक्कं चरे छेम जांनं ॥
महा मोह मोहे रहे ठान ठांनं। मनों चित्र असवार भ्यंती बिनानं॥छं०॥१०१॥
हने भूत से भीत षीजे षईसं । बंधे सब्द सूरं बिना रोस दीसं ॥
रहे साहि गोरीय तत्तार षानं। तिथै मान काजी महा मंत्र बानं ॥छं०॥१०२॥
कहै साहि गोरी सुनौ मांन काजी। लियं बोलि हज्जूर तहं मीर हाजी॥
करी जोर विद्या सुजंनार दारं। करो क्योंन उपेछ भी क्या विचारं॥छं०॥१०३॥

(१) ह-दुरति । को० दुरहि ।

तबं काजियं दस्त दुम्र मुष्य फेरी । जपै जाप पीरां दुवो सेन हेरी ॥
तबै मेछ सेनं सबं मोह भग्गो । सबैं हिंदु सेनं फनी बद्ध लग्गो॥छं०॥१०४॥
गुरं गरुड आह्वान राम उचार्‍यौ । तबं बंधनं नाग तिन षंडि डार्‍या ॥
भए सेन हुसियार दोऊ करारे । षिझ्झे रोस असमान षिझ्झे डरारे॥छं०॥१०५॥
घिरे षग्ग षुरसान षां जेरद्दूनी । बढी बाग गुर राम जम धार दूनी ॥
तजी मंत्र विद्या सजै सार सारै। बजी षग्ग अग्गीय ओडंन डारै॥छं०॥१०६॥
सरं जाल पै काल उठ्यौ अनुद्दं । बहै बाह जम दाह क्रुद्धं धनुद्धं ।
उडै अंच गोरी नरं नारि धारी। धकें मंत मंते गिरे ज्यु अटारी॥छं०॥१०७॥
उठ्यौ सोर असमान कुहरांम ऐसो । षिझै जानि गंगेव बल बंध जैसो ॥
फिरें रुंड भक रुंड विन सुंड दंती । परें पीलवानं चढे पंषि पंती ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दूहा ॥ सुनि सहाब साहावदीं । चै छंडिव गजि[1] तक्कि ॥
मिले सामि कर भर सुभर॥ दल चहुवांन सु रुक्कि ॥ छं० ॥१०९

मारुफ़ ख़ां का शाह से कहना कि अब बड़ी भीड़ पड़ी जिन क़ाज़ी खां पर ख़ुरासान का दार मदार था उन्हों ने तसबीह छोड़ दी, हिम्मत हार दी ।

कहै मीर मारुफ षां । परी भीर सुरतान ॥
तिन तसवी नंषी करह । जिन कंठन षुरसांन ॥ छं० ॥ ११० ॥

ख़ुरासान ख़ां आदि सरदारों का फिर एकत्र होना और लड़ने को तयार होना ।

कवित्त ॥ षां षुरसांन ततार । षांन हुसेन हिमाची ॥
षान षान रुस्तम । षांन निज बंध समाची ॥
षां जलाल षां लाल । षांन षिलची षां गष्षर ॥
केलरि षां कुंजरी । साहि भग्गी बल इष्षर ॥

(१) क्र० को०--गल ।

जिन भुजनि साहि साहिब तुंग । जिन ढिल्लां चल्यौ सुभर ॥
तिन धीर भीर संमुह परिय । पिष्षि नंषी तसबीहि कर ॥
छं० ॥ १११ ॥

छंद भुजंगी ॥ मिली मंडली फौज गोरी नरिंदं । मिले दीन दोइ कहै चंद दंदं ॥
गहै दंत दंती तजै मोह तुच्छं । दोऊ दीन धावै सुधारै सुमुच्छं ॥ छं० ॥ ११२ ॥
करै संभरी दीन साहिब्ब राई । उनंके उनाई दुदोनं दुहाई ॥
सु पैठंत पीठं गलं बथ्य घल्लै । धकै धीग धक्कै हलाए न हल्लै ॥ छं० ॥ ११३ ॥
कढी बंध अस्सी गजं सीस लस्सी । मनों बीज चंदं किते रस्स सस्सी ॥
तुटी भूमि भारी धुरं तार पायं । बजै षग्ग जंजं झनंके झनायं ॥ छं० ॥ ११४ ॥
तजे बीर अस्वं उपंमान ऐसी । मनो चव्वरी बाल छूड तैसी ॥
करै घाट औघाट निघट घटं । तिनंकी उपंमा कही चंद भट्टं ॥ छं० ॥ ११५ ॥
भरं भूमि भारी पुतारीति बज्ज । गहे षग्ग झोर घनकेति तज्ज ॥
बरं बीर धावंत ओपंम ऐसी । मनों मल्ल धावै हलू तक्कि तैसी ॥ छं० ॥ ११६ ॥
तरंफंत सीसं धरंगं निनारे । मनों मीन तुच्छं जलं में उछारे ॥
नियं नद्द अस्तूति जंपी न जाई । मनों भंगुरं नट्ट विद्या बनाई ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ तोन षान अहमद्द । तीर विय सहस लोकि तव ॥
अंगुर अट्ठ भलक्क । बाइ बंधे नंषे कब ॥
मेघ धार बरषंत । टोप उप्पर चहुआंनी ॥
मनों जैत षंभ परि तत्त । बीर पावस वुट्ठानी ॥
घरी एक मुट्ठी नंषियत बर । पिष्षि किरवांन विचारि नर ॥
पष्षर प्रमान पहम सबर । धर तुट्यौ लग्यौ सुधर ॥ छं० ॥ ११८ ॥
पष्षर लष्ष सलष्ष । भयौ षुरसांन षांन दल ॥
एक एक भुज अमित । हेन हकाए अकल पल ॥
धार धार बज्ज प्रहार । गुरज बज्जै तन रज्जै ॥
मनों घट्ट घरि पार । प्रहर पूरन प्रति बज्जै ॥
यों बज्जि सार आतुर छतिय । ज्यों डंडूरिय बूंद धर ॥
पंम्मार सार धारह धनिय । ईस अनंदिय माल गर ॥ छं० ॥ ११९ ॥

दूहा ॥ गरल धरन गल माल धर। टपकत कुंदन रत्त ॥
भेष भयानक भंति तिहि। कंपति दिषिगिर अत्त ॥ छं० ॥ १२० ॥
कोइक कमल कहि कहि हसत। कोइक हंकत हंक ॥
मार मार कोई कहत। मुदित माल शिव अंक ॥ छं० ॥ १२१ ॥
कवित्त ॥ षुरासांन तत्तार। षांन रुस्तम अधिकारिय ॥
एक स्वामि रन अग्ग। है है दुहु बांह विधारिय ॥
पुट्ठि पवन अक्षोह। साहि रष्षे सुरतानं ॥
मावसि राह नरिंद। आइ चह्या मुष भानं ॥
मध्यांन टरिय निसि मुदित भय। कमल विमल छक्किय विछुरि ॥
सारस सुरंग को तरनि तर। उडि पंषी अंषी निजरि ॥ छं० ॥ १२२ ॥
छंद चोटक ॥ चकचक्कि विचक्कहि थांन बरं। उडि पंष सकोतर चित्त धरं ॥
सपयोनिधि मज्झि पतंत रवी। समनों दिसर्ची दिस दून छवी ॥
सत पच मुदेक मुदै उघरैं। निसि विप्प सुग्यांनह तेज हरैं ॥
मनमथ्थ चढे भुवतीन जनं। सुविषे विरही जन कंप तनं ॥
नन दिष्षिय पंथ निहारि मगं। उलटी वर दिष्ट निहारि मगं ॥
उतरी जनु चंगय डोरि डरी। विरही जन दिष्ट सुधान फिरी ॥ छं० ॥ १२३ ॥
साटक ॥ मोदं मोद हसंत कंमुद कला चक्कीय चक्की चितं।
चंदै चंद वढंत नत्त कलयो भानं कला क्षीनयो ॥
मत्तं मन्मथ जांन बांनति बरं अंगुष्ट तेउच्छदं ॥
सासत पचय तच काइर मुषे बीरा रसं सूरयं ॥ छं० ॥ १२४ ॥

अपनी सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

छंद चोटक ॥ इति चोटक छंद उदंत कलं। रस बीर जगावत बीरवलं ॥
घन नंकि त्रिघोष निसांन बजं। बर बक्किय बंबरि छत्र सजं ॥
बढि गोरिय साहि सयंन मुषं। नन सुम्भय सूर दिसांन चषं ॥
नष भिति निरेष्षिय बीर रसं। जिन कौ जस भ्राय दैव कसं ॥ छं० ॥ १२५ ॥
धनि छच्छ सराहिय दीन दुहं। कवि जीह प्रमांनय सार वहं ॥
प्रथिराज बिराजत सेन मझं। सुमनों बडवानल दह्न दझं ॥

दोय दीन दुखाइय दंद[1] पढै। चढि सार प्रहार पयोनि गढै॥
कटि कंध कमंध गिरै दुसरै। उछरै मनु प्रब्बत बीर हरै॥छं०॥१२६॥
नव हंसन एक न मुक्ति चलै। नव लुद्दि नई मुकतैं न घुलै॥
लगि सस्त्र भए जर अंग हसे। तन बाहन जंगम जांनि जिसे॥
निकरैं नव हंस उमंग मगै। तिन पंजर फेरिन आइ लगै॥छं०॥१२७॥

कबित्त॥ चलत मेर नन चलहि। चलन सब सथ्य हथ्थ चलि॥
चलन भांन नन चलहि। चित्त नन चलै मोह घुलि॥
अस्त्र चलन नन चलहि। चलन रहयौ असु असुमय॥
सो ओपम कवि चंद। कहिय आनंद हथ्थ सय॥
निंधनिय नारि अकुलास चिय। अग्गयानी जी मुहई॥
इम अस्त्र घांव तरवार को। सार धार बर तुहई॥ छं० ॥ १२८॥

मुरिल्ल॥ नागौरै मंची सत मिल्लयौ। भोरा राइ भुअंगम किल्ल्यौ॥
साहंउै संमुह सुरतांनह। चहर षग्ग कियौ चोहानह॥ छं०॥१२९॥

पृथ्वीराज का विजय पाना, शहाबुद्दीन का बांधा जाना॥

छंद मुकुंदडामर॥ चहुआंन उदंडिय चंडिय चंपिय साह सुसद्धिय बंध धरै॥
हाकंत हनंत सुसोम हनं दन बंदन बंदिन दूरि करै॥
भुअ कंपित जंपित संपित गोरिय लुथ्थि अलुथ्थि पलथ्थि परै॥
पल एक सुतीन कियौ तिल मत्तह भारि भयानक भूमि टरै॥
सामंत सितुंग तुरंग तुरावध आवध आवध अग्गि झरै॥छं०॥१३०॥
धरकंत सुमीर गंभीर गई अह अब्ब गुंडावन बीर बरै॥
नर बीर दिवादिह देवस पुब्बह अब्ब गुजाइय तुंग ढरै॥
जय पत्त जपत्त भमंनिय जुग्गिनि स्रोन सुषप्पर चंपि करै॥छं०॥१३१॥
सुरयं तुर तांन प्रमांन कमांनिय सुभिभय भांन जुआंन अरै॥
जुग जीति पथं सुधि अंथन बंथन सथ्यन बंधिय बंधि धरै॥
जितयौ चहुआंन गह्यौ सुरतांन हयौ तुरकांन किसांन जरै॥
छं०॥ १३२॥

(१) को- चंद।

इस युद्ध में सलष राज की वीरता का वर्णन ॥

कवित्त ॥ वय वथ्थिय कननंकि । बज्जि झननं झननं कहि ॥
दंति दंत आहुरहि । षंड षंडेन ठनंकहि ॥
घट घट लग्गिय संग । फौर पत्तिय पतिवानं ॥
मनु षंचे बलराम । हथ्थ हथिनापुर जानं ॥
षंचै कि द्रोन हनवंत कपि । कै कन्ह षंचि गोवरधनह ॥
कर करी दंत सलषह धरन । यौं सुभ्भै हथ्थी रनह ॥ छं० ॥ १३३ ॥
पिभ्भिक राज प्रथिराज । गहिय करिवान चंपि कर ॥
रोस मुबिनि बरीय । दंतवादी सुकुंभ थर ॥
धार मुत्ति आहुरिय । पंति लग्गे सुभि बीरं ॥
मनह रोस गहि षग्ग । टरै धाराधर नीरं ॥
कै दुतिय चंद बद्दल बिचह । पंति लग्गि उडगन रहिय ॥
धर धुक्कत मंत सुदिष्षियहि । मनहुं इन्द्र बज्जह बहिय ॥ छं० ॥ १३४ ॥
दूहा ॥ जिन लग्गे तिन ग्रंन किय । धर धर धुक्किय धार ॥
पष्षर एक पर हथ्थरें । सिर सिर बुझ्यौ सार ॥ छं० ॥ १३५ ॥
सस्त्र अस्त्र सिर सिर परहि । डरहि न जन कुमदंग ॥
भीर स्वांमि संकट लषत । परत कि दीप पतंग ॥ छं० ॥ १३६ ॥
गाथा ॥ पतन पतंग रूपं । भूपं धरा जांनि विषमायं ॥
हरन स्वांमि भय चिंतं । चित त्रियन जन्म मरनाई ॥ छं० ॥ १३७ ॥
दूहा ॥ ठांम ठांम सिंधू बजहि । बजहि सार मुष मार ॥
तन तरवर जहं तहं ढरहि । जे झूझ्झार मुझार ॥ छं० ॥ १३८ ॥

सलषराज का घोर युद्ध करना, उनकी वीरता की बड़ाई ।

स्वामि सलष लषियत लरत । भंजि मीर चहुआंन ॥
इंकाल्यौ ना जाइ मिळ । तो सम को पहुआंन ॥ छं० ॥ १३९ ॥
कवित्त ॥ तूं अब्बू पति धनी । राज रष्षन दिल्ली धर ॥
तूं चालुक्क चंपनौ । भार भंजन गुज्जर धर ॥
षडर अकल आजांन । पान भंजन मेवाइम ॥

अपमुष आयौ साहि। साहि सही इक्कारन ॥
प्रथिराज प्रबोधिय धार धर। हंकि साह उप्पर परिय ॥
जांनै कि अग्गि उद्यांन बन। बंस थूर दव प्रज्जरिय ॥ छं० ॥ १४० ॥

पृथ्वीराज का सलष की सहायता करना ॥

फुनि प्रथिराज नरिंद। करिय ऊपर जैतह रन ॥
भरनि भार भंभरिय। हंकि हुंकरिय सिंघ जनु ॥
मद गज ढवनि कि तरनि। तरनि लुप्पन जनु जलधर ॥
अकह कढ्ढिय करि वार। काल कुप्पिय जीवनि पर ॥
सोमेस सुअन विरचंत रन। चढ पट घट भट्टह लुटिहि ॥
इय अयुत बत्त विष्षत नरह। भुजनि भार अंनक फुटहि ॥ छं० ॥ १४१ ॥

पृथीराज की वीरता की प्रशंसा।

भरनि भीर बल भलन। रेन रल मलति पवन करि ॥
लोथ लोथ पर परनि। अर्क नहिं सकत गवन करि ॥
श्रोन छिंछ उछरंत। सुभट सुभ्भति जनु किंसुव ॥
गजन ढाल कंढुरनि। मार संघर तक मध भुव ॥
विरचंत विफुरि सोमेससुअ। सहस करन वर कर बढिय ॥
घन छंद पियन बडवा नलकि। क्रम जांनि संमुह कढिय ॥ छं० १४२ ॥

दूहा ॥ हाला हल हूह निघ्ध जहं। झाला हल झंकाल ॥
उतरन कुप्पौ सलष लष। काना हल कंकाल ॥ छं० ॥ १४३

सलष राज के युद्ध की घोरता का वर्णन।

छंद मोतीदाम ॥ कुप्पो रन साहस लष्षिय लष्ष। छूपे रन रोह अरोह विपष्ष ॥
करक्कर बज्जिय सारन मार। भरभ्भर हंकत हक्क करार ॥
तरत्तर तेग तरफ्फर अंग। जित्तत्तित होम घनं घट भंग ॥
चढे मुष मेछ ससंद मसंद। जित्तत्तिन टूटत तेक असंध ॥ छं०॥१४४॥
लरथ्थर पथ्थर सथ्थर तोम। मनों जनमेजय चिल्हिय होम ॥
गिरंत उठंत कमंध विसाल। हहंकत मुंष भसुंड विसाल ॥
इसो रन रंग सलष्ष सरूप। मनो मुचकुंद कि अग्गि विरूप॥छं०॥१४५॥

म्लेच्छों की सेना का मुंह मोड़ना, सुलतान का हाथी छोड़ घोड़े पर चढ़कर भागना ।

दूहा ॥ मेछ सेन बहु भरि परिय । केविड रिग्गय डग्ग ॥
फिरी मुष्ष सुरतांन कौ । हथ्यि छंडि हय मंगि ॥ छं० ॥ १४६ ॥

म्लेच्छ सेना और सुलतान की भगेड़ का वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ कुसादे कुसादे कहै षांन जादे । रिंग्यौ साह आलंम सब सेन बादे ॥
सबै सेन दिष्यौ इसौ साह मुष्षं । मनों प्रात चंदं सुकंती अरुष्षं ॥
बरें पारि बेहू समुद्दं न रुक्कै । जबै साह गोरी षुरासांन चुक्कै ॥
फिच्यौ एक लष्षं सलष्षं पषारं । मनो रोहियं रोह बाराह दारं ॥छं० ॥१४७॥
भग्यौ साहि गोरी विलं देहि मथ्थं । तबै हथ्थियं आनि पंम्मार हथ्थं ॥
रषत्तं वषत्तं हयं हथ्थ सथ्थी । भग्यौ साहि गोरी विवांनै न कथ्थी ॥
इकं दीह चौहांन फल है प्रमानं । कुथ्यौ हथ्थि कैमास सुरतांन भानं ॥
छं० ॥ १४८ ॥

इस युद्ध में सलषराज के यश पाने का वर्णन, सुलतान का बांधा जाना ।

कवित्त ॥ चामर छत्त रषत्त । तषत लुट्टै सब कोई ॥
जस लद्धौ पामार । सेन सागर मथि जोई ॥
रतन किति संग्रही । रज्ज आबू तन षोई ॥
हय गय दल बल मथिन । किति फल लभ्भिय सोई ॥
बंध्यौ सुचँपि षुरसांन पति । रतिवाहै चालुक जिनिय ॥
जै जया देव जंपत जसह । नव सुचंद कित्ती सजिय ॥ छं० ॥ १४९ ॥
दूहा ॥ जीति लियौ जय पति रनह । बर चतुरंगी मोरि ॥
पष्षर लष्ष सलष्ष हुअ । गौरी ढाल ढंढोरि ॥ छं० ॥ १५० ॥

सुलतान को जीतकर सलषराज का लूट मचाना ॥

कवित्त ॥ जीत लियौ जैपत्त । षाह चतुरंग सु मोरी ॥
इक लष पषर प्रमांन । ढाल गोरी ढंढोरी ॥

षांन सुरति परि षेत । षेत गोरी उप्पारी ॥
रिन हुल्यौ चहुआंन । साह भोरी करि डारी ॥
बज्जे सुबीर बज्जन न्टपति । बहु लुट्टे सुरतान गै ॥
नीसांन षांन षुरसांन पति । चामर छत्त रषत्त मै ॥ छं० ॥ १५१ ॥

सुलतान की सेना का भागना, चौहान का पीछा करना, पृथ्वीराज की दोहाई फिरना ॥

दूहा ॥ भै भग्गा सुरतांन दल । लै लग्गा चहुआंन ॥
ताप तेज तुंगी तरुनि । प्रथीराज फिरि आंन ॥ छं० ॥ १५२ ॥

पृथ्वीराज के जीत की जय जय कार मचना ॥

कवित्त ॥ कहि जित्यौ चहुआन । गहक्कि गोरी दल भज्यौ ॥
कहि जित्यौ चहुआंन । ईस सीसह धर रंज्यौ ॥
कहि जित्यौ चहुआंन । चंद नागौर सुनंगे ॥
कहि जित्यौ चहुआंन । सत्त सामंत अभंगे ॥
जित्यौ सु सोम नंदन कहिय । सहिय सद्द सुर लोक हुअ ॥
पामार पष्प सलष्ष नह । धरनि काज धर पंक धुअ ॥ छं० ॥ १५३ ॥

पृथ्वीराज के सरदारों की वीरता की प्रशंसा ॥

छच धार सुविहांन । छच धारी लोहांनौ ॥
पच धार जो गिनिय । कुक्क लग्गिय आसानौ ॥
मंच धार पामार । सलष भंज्यौ मेछानौ ॥
जनु गुवाल गो डंड । सेन हंकिय सुरतानौ ॥
जित्यौ जुवांन चहुआंन रिन । मुरिग बैर बलिबंड बर ॥
धर गवरि नाह नंचिय रहसि । गह्यौ जाहि भंजे सुषल ॥ छं० ॥ १५४ ॥

पृथ्वीराज का जीतना, तेरह ख़ां सरदारों का पकड़ा जाना, साइंडे का टूटना ॥

अरिल्ल ॥ जित्यौ वे जित्या चौहानं । भग्गा सेन सज्या सुरतानं ॥
तेरह षांन परे परमानं । साइंडे तोड्यौ तुरकानं ॥ छं० ॥ १५५ ॥

इधर शहाबुद्दीन को दंड देने, उधर कैमास का चालुक्यों को जीतने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ साह डंड डंडयौ । मेच्छ मंड्यौ नागोरिय ॥
भट्टिय रा भटनेर । राव सिंघासन तोरिय ॥
जा रानी जग हथ्थ । मंडि मंडोवर पासह॥
जै जै जै प्रथिराज । देव सद्देति अकासह ॥
आरज्ज लज्ज सुरतांन कहि । फिरि मिलांन दीनौ पुरां ॥
जो सथ कथ कैमास किय । चालुक्कां सोभति धरां ॥ छं० ॥ १५६ ॥

शाह के बांधने, भीमदेव के जीतने और इंछिनी के ब्याहने की प्रशंसा ॥

एक दीह इक घरिय । राज लड्डू बेलड्डा ॥
रत्तिवाह संजित्त । साह गोरी गहि बड्डा ॥
बर भीमंग नरिंद । षेदि कढ्ढौ कैमासं ॥
बर बज्जे नीसांन । राज जित्यौ रन भासं ॥
बर बंधि साहि गोरी गह्यौ । बर इछनि पानी ग्रहन ॥
नव दीह नवंमिय नेह नव । सुबर चंद बत्तां कहन ॥ छं० ॥१५७॥

सं० ११३६ के माघ सुदी में सुलतान को बांधना, माघ ब० ३ को इंछनी का पाणि ग्रहण करना, दंड लेकर सुलतान को छोड़ना और फिर खट्टूबन में शिकार को जाना ॥

ससिर सु मग्गह अंत । तीस षट बीर समंधर ॥
ग्यारह सें परवींन । साहि बंध्यौ गोरिय बर ॥
माह प्रथम बर तीज । बीज रवि सप्तम थानं ॥
बर पांनिग्रह मंडि । सुबर इंछिनि चहुआनं ॥
मुक्कयौ साहि घन डंड लै । बर बाजें नीसांन घन ॥
आषेट फेरि मंडिय न्रपति । बन षट्टू कवि चंद मन ॥ छं० ॥ १५८ ॥

शुकी से शुक ने जो कथा चालुक्यों के जीतने की कही उसे सारूंडे में कविचन्द ने वर्णन किया ॥

दूहा ॥ सुकी सरस सुक उच्चरिय। प्रेम सहित आनंद ॥
चालुक्का सोभाति सथ्यौ। सारूंडँ में चंद ॥ छं० ॥ १५९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सलष जुद्ध पाति साह ग्रहन नाम त्रयोदश प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १३ ॥

अथ इंछिनि व्याह कथा लिष्यते ॥

(चौदहवां समय)

शुकी के प्रश्न पर शुक का चालुक्य के जीतने, शहाबुद्दीन के बांधने और इच्छिनी के व्याह का वर्णन करने लगा ।

दूहा ॥ कहै सुकी सुक संभलौ । नींद न आवै मोहि ॥
रय निरवांनिय चंद करि । कथ इक पूछौं तोहि ॥ छं० ॥ १ ॥
सुकी सरिस सुक उच्चर्‌यौ । धर्‌यौ नारि सिर चत्त[1] ॥
सयन संजोगिय संभरै । मन मैं मंडय चित्त ॥ छं० ॥ २ ॥
धन लद्धौ चालुक संध्यौ । बंध्यौ षेत पुरसांन ॥
इंछनि व्याहा इच्छ करि । कहौं सुनहि दै कांन ॥ छं० ॥ ३ ॥

शाह को दंड देकर छोड़ने पर राजा सलष ने पृथ्वीराज के यहां लग्न भेजा ।

मुक्कि साह पथिराइ करि । दंड दियौ सलषांनि ॥
लगन पठाइय विप्र करि । वर व्याहन चिष्यांन ॥ छं० ॥ ४ ॥
पठयो प्रोहित भौंन कर । कनक पत्र लिखि लग्न ॥
श्रीफल बहुल रतन जरि । पिष्षि होत जिहि मग्न[2] ॥ छं० ॥ ५ ॥
कवित्त ॥ अबू वै अब्बू समप्पि । सीस बंधी दह गुम्मिय ॥
पावारी इंछनिय । व्याह सोधन बर मम्मिय ॥
लच्छि ग्रेह कूबेर । अंत ग्रीषम दिन धारी ॥
परनि राज प्रथिराज । हथ्थ श्रीफल अधिकारी ॥
नर नाग देव गंधर्व गुन । गांन जांन[3] मोहैं सकल ॥
अहै उतंग लच्छन सहज । थांन नंधि बंधी विकल ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) को-सूचित ।
(२) को-लग्न ।
(३) को-गान गान ।

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इंछिनी का रूप नाम आदि पूछना।

दूहा ॥ प्रथु पूछत बंभननि सुनि। कहौ बाल किन बेस ॥
किनक रूप गुन आगरी। सुनत मोहि अंदेस ॥ छं० ॥ ७ ॥

इंछिनी की सुन्दरता का वर्णन।

साटक ॥ बाले तन्वय मुग्ध मध्यत इमं स्वपनाय वै रुध्यं ॥
मुग्धे मध्यम स्यांम बांमति इमं मध्यान्ह छाया पगं ॥
बालप्पन तन मध्य जोवन इमं सरसी अवग्गी जलं ॥
अंगं मद्धि सुनीर जे मल ससी सुभ्भै सुसैसव इमं ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ अति सुरंग वय स्यांम। संधि वय संधि जुरिय बर ॥
ज्यों दंपति रथ लेव। पंथ जोगिंद मिलत गुर ॥
नयन मयन आरुहिन। चल्यौ आरुहन थांन दिन ॥
कछु कज्जल अंकुरिय। करिन आवें पें लज्ज मन ॥
ज्यों करकादि निसा मकरादि दिन। करक आदि सै सब सुगुर ॥
मकरादि बाल जोवन जदिन। काम धुरा लीनी सुधुर ॥ छं० ॥ ९ ॥

दूहा ॥ स्यांम सु वांम अनंग भय। घटी न घट्टि किसोर ॥
बालप्पन बैबैस तन। मनों भरें घन चोर ॥ छं० ॥ १० ॥

कवित्त ॥ पट छप्पी बहु हेम। रतन गुर पाट पटंबर ॥
पीत रत्त गुन सेत। स्यांम नग सुन गति अंबर ॥
सो मंगी चालुक। सोइ[१] दीनी प्रथिराजं ॥
मनु इंद बधू सचीव। कांम बंधी चढि पाजं ॥
बर बरनि राज संभर धनी। सुफल बंधि फल संग्रहिय ॥
इंछनि अवाज आवाज क्रम। अदिन भंजि के दिन सजिय ॥ छं० ॥ ११ ॥

साटक ॥ नां पतनी नल राज राजन बधू दमयंति नो इंद्रयं ॥
नां सचीव सुनाथ नायक धरं लच्छीन धरया धरं ॥
नां रत्ती मनमथ्थ रत्ति कलया मंदोदरी रावनं ॥
सोयं सा प्रथिराज इंछिनि बरं समयौ न लभ्भै कवीं ॥ छं० ॥ १२ ॥

(१) छ०—सोइ।

पृथ्वीराज का व्याहने के लिये यात्रा करना ।

दूहा ॥ निंघि सुंदरि व्याहन न्नपति । रिति ग्रीषम दिन संधि ॥
चल्यौ सूर संभरि धनिय । सुष संचन घल बंधि ॥ छं० ॥ १३ ॥
धर अंबर तर जलध बल । कहुं न सूर तप सीत ।
अगम पंथ नर घरनि सुष । बिलसत दंपति मीत ॥ छं० ॥ १४ ॥

साटक ॥ पंथं दुस्तर वाय मुकुलितसरं[1] ज्वाला द्रूला दुस्सहा ॥
क्रीलार्या धन क्रयन यांइ सुथनं नर्जीव शब्दं धरा ॥
आवर्त्तं घर तत्त मित्त करनी धूमाय विदिसा दिसा ॥
सरनं मरनय पंथ ग्रीषम पथं सुष्यं ग्रहं प्राणिनां ॥ छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ प्रानी पंथ न सुष्य जल । मरन सुनिस्चय मांन ॥
दीह उदय दिसि मुदय भय । सुरनि स्वयंबर ठांनि ॥ छं० ॥ १६ ॥

पृथ्वीराज के साथ सामंतों का वर्णन ।

कवित्त ॥ सथ्थ कन्ह चहुआंन । सथ्थि निड्डुर रषि राजं ॥
सथ्थ सोम सामंत । अल्ह पल्हन प्रति साजं ॥
बलिय गरुअ गहिलौत । बलिय भोंहा बर सिंघ नर ॥
दाहिमो कैमास सथ्थ । सूरौ चावंड गुर ॥
मति भद्र मंति साधन सकल । लोहांनौ स्वामित्त धुर ॥
चतुरंग सूर वय रूप गुन । जिए राज राजान गुर ॥ छं० ॥ १७ ॥

पृथ्वीराज की बारात की शोभा वर्णन ।

छंदपद्धरी ॥ चढि चल्यौ राज प्रथिराज राज । रति भवन गवन मनमथ्थ साज ॥
सिर पहुप पटल बहुसा घवास । अवलंब रचिय अलि सुर सुरास ॥
मुष सोभ जलज कंद्रप किसोर । दीजै सु आज व्रप कोंन जोर ॥
चिति काम बीर रजि अंग औार । संकच्यौ जान मनमथ्थ जोर ॥
जिम जिमति लाज अरु चढत दीह । लज्जा सुजांनि संकलिय सीह ॥

(१) ह० को०—तरं ।

जिम जिम सुनंत न्वप श्रवन बत्त। तिम तिम हुअंत रस काम रत्त॥
मधु मधुर बेन मधुरी कुंआरि। रति रचिय जानि सैसव सवारि॥
॥ छं० ॥ १८॥

श्लोक॥ साय दीपसमो दिष्टे। जैति जैति विजै जितं॥
देवासुर मनुष्यानां। काले कैक न गच्छति॥ छं० ॥ १९॥

कवित्त॥ कोन काल वसि पच्यौ। काल ग्रह कोन न बंध्यौ॥
कोन काल जित्तयौ। काल किच्चि षाइ न रुंध्यौ॥
मठ विहार वापीन। थिरष सुर थावर जंगम॥
सुवर राज राजिंद। कोन दिष्यौ न अभंगम॥
ज्यां बंधयौ साहि गोरी सुवर। मरन तिनं कति नंनदै॥
इंछनिय इच्छ इच्छा सुफल। सुवर बीर बीरह जयौ॥ छं० ॥ २०॥

साटक॥ बीरं जा वर बीर भीमति वरं कामं तनं उप्पया॥
पंथे वानति वान मानति वरं कुरनंद केवं कुहू॥
धाता मानय बीर वामन बलिं पूरोरवा भर्थयं॥
तू पत्ती प्रथिराज कालति रई कालं जसं वर्तते॥ छं० ॥ २१॥

पृथ्वीराज को आते हुए सुनकर सलषराज का धूमधाम से अगवानी करना॥

कवित्त॥ सुनि आवत चहुआंन। करिय अग्गौन सलष वर॥
हय गय लच्छि सुअच्छि। आदि उम्मचिय राज दर॥
पट अंबर हजराव। जेव नंगन जगमग्गिय॥
फुल्लिय मानहु संझि। चित्त चकचौंधिय लग्गिय॥
चहुआंन रत्त तोरन समय। लगन गोधूरक संधयौ॥
जांनै कि अर्क राका दिवस। इक्क थांन उगि रुंधयौ॥ छं० ॥ २२॥

दोनो राजाओं की सेना के मिलने की शोभा का वर्णन।

जिम सावन भाद्रव सिंधु। घुमरि घन घटा मिलत हुअ॥
जनु समुद्र अरु गंग। उमडि मिलि दुहुंन शोभ हुअ॥
जनु सुर अरु सुक्र। सिंमि रिषि गननि गगन मिलि॥
जनु दधि मथि सुर असुर। करन मधुपांन थिभिर ठिलि॥

तिम संभरेस अब्भूवनी। बनी बनी रस बिरस भरि ॥
नग जोति जरकज दीप दुति। नहीं अथन बाजंव करि ॥ छं० ॥ २३ ॥

सलषराज की प्रशंसा।

पंच हस्ति मद वहि गिरंद। गहअ गरजंत मेघ जनु ॥
तुरी बीस औराक। तेज तन अगिन पवन मनु ॥
जर कंमर जंनेउ। हथ्थ संकर नग मंडित ॥
सत्त सुषम पर काज। हेम तं तन तन छंडित ॥
बारोठि विवह वत्तह समभि। सह चक्कत पिष्षत रहिय ॥
विवहार विबुध जोतिग गिनत। सलष किति आनन कहिय ॥ छं० ॥२४॥

तोरन आदि बांधकर, कलस धरकर, मोती के अक्षत छिड़क कर मंगलाचार होना।

दूहा ॥ तोरन कर वर वंद तह। मुत्तिय अच्छित डारि ॥
मनों चंद त्रिय भेष धरि। अच्छित अच्छ उछार ॥ छं० ॥ २५ ॥

साटक ॥ बंदे विंद कलस्स तोरन बरं तुंगे रसं मन्मथं।
सुष्षं साजति सक्र चक्रति कला निग्राह नु ग्राहनी ॥
जां निज्जै त्रैलोक उम्मति पुरे बंदे कवी उप्पमे।
दुअ पासं दुअ नारि दिष्षत बरं मनो नैर वर दिष्षयं ॥ छं० ॥ २६ ॥

नगर में स्त्रियों का बारात की शोभा देखना।

कवित्त ॥ नृपति काज अलि दिषहि। अलिन दिष्षत नर नारिय ॥
जनु मिलनराज प्रथिराज। नयर त्रिय बांह पसारिय ॥
जनु बन्धी गुर देव। सत्ति साहा साहा हुअ ॥
जै जै जै उच्चार। राज रवनी रंजत हुअ ॥
पंमार सलष वंदन बलिय। दिष्षि कला मनमथ्थ पिय ॥
दिष्षै सुषिया दुरि दुरि नयन। मनहु तरंग कि काम तिय ॥ छं० ॥२७॥

छंद पद्धरी चित काम वीर रज्जियं जोर। संकुच्यौ जांनि मनमथ्थ जोर ॥
दुरि दिषें बाल भीनेति वस्त्र। उपमान चंद जंपंत तत्र ॥
जाने कि जार परि मध्य मीन। पुज्जै कि दीप मोतम प्रवीन ॥
इक करन पलटि इक करन संत। घुंघट बदन लज्जा सुभंत ॥ छं० २८॥

धुंमलिय रैंन जनु बद्दल ओट। उभ्भकंत चंद जनु क्रांनि कोट॥
कर उंच बाल अच्छित उछारि। जनु कमल वाइ बसि ओस झार॥
गावंत गान बहु विधि सवारि। कलयंठ कंठ जनु रति धमारि॥
मुसकंत हास दिषियै विसाल। विकसंत कमल जनु चंद नाल॥
मनु ओंठि मैंठि भोंचै कि बाल। झरक्यौ मैन जग वही ष्याल॥२९॥छं०॥

सुहासिनी स्त्रियों का कलश लेकर द्वार पर आरती उतारना।

दूहा॥ कलस बंदि सुभगा सिरह। महुर मछि सय मेलि॥
बहुरि सुहाग सुहागिनी। बई कांम रस बेलि॥ छं०॥ ३०॥
कनक थार आरति उदित। सुभग सुवासिनि लाइ॥
जनु कि जोति तम हर परह। नव ग्रह करन वधाइ॥ छं०॥ ३१॥
महुर पंच सें थार धरि। दुति दूलह जिय जांनि॥
कांम कसाए लोइननि। हन्यौ मदन सर तांनि॥ छं०॥ ३२॥

सलष की रानी का दूलह की शोभा देख प्रसन्न होना।

षषिन ओट सलषह घरह। दूलह दुति हग देषि॥
कोटि काम छवि पिष्षि पिय। जनम सफल करि लेषि॥ छं०॥ ३३॥

स्त्रियों का महल में जाना और बारात का जनवांसे में आना।

मह्ल झुंड महलनि बहुरि। जनवासह जुरि जांनि॥
सोभि साम सामंत सह। जनु विटन शनि भांनि॥ छं०॥ ३४॥

जनवांसे की तयारी का वर्णन।

छंद पद्धरी॥ बहुरी बरात जनवास थांन। छवि सोभ सुवन भुवभंति भांन॥
संग सुभट थाट सामंत सूर। बलवंत मंत दिषियै कहर॥
अँग अंग अंग उल्हास हास। जनु लच्छि लाह सोभा प्रकास॥
सत घन अवास साला सुरंग। सुभथांन जैत आबू दुरंग॥ छं०॥ ३५॥
जालीन गोष सोभा न पार। रवि सोम क्रांति कनन प्रचार॥
पंच रंग ब्रंन चित्रत सुवेस। बहु गरथ रूप मंडित जुदेस॥
रेसंम गिलम दुलीच मंडि। तिन जोति होति दुति चित्र षंडि॥छं०॥३६॥

द्वादसह सेज बिछाय पंचि । तिन ढिग्ग न्नढ गादीय संचि ॥
प्रति सेज सेज फूलन अमार । तिन सोभ गंध रग रंग पार ॥
इक लाष पांन बीरा बनाइ घनसार मद्धि बीरन लगाइ ॥
कुंम कुमन कुंभ जहं तहं छुटंत । बानीन अगर धूपन लुटंत ॥
कर्द्दमन जष्य मषि कीच भूमि । नाना सुरंग रचि गंध धूमि ॥
मस्साल दीप प्रज्जरि फुलेल । केतकी करन वेली गुलेल ॥
ऊड़त कपूर पवनं पषांनि । तिन सरस गंधि सक्कि न बषांन ॥
सूरंत क्रांति सोभा विसाल । सोभंत जुरे तहं अब भुआल ॥ छं० ॥ ३८ ॥
प्रथिराज कुंअर कुअरन नरिंद । धरि भूप रूप अवतार इंद ॥
मनु कांम रूप रति भ्रमन चित्त । अस्विनि कुमार ससि सोभ मित्त ॥
नग कनक मंडि बासन विचित्त । ससि सूर सोभ सुभ सज्जि छत्त ॥
वर विप्प अप्प गज गाइ धारि । जनु सोम उभय आरति उतारि ॥ छं० ॥ ३९ ॥
आसंन अस्स प्रथिराज आइ । तहां पंच सबद बाजे बजाइ ॥
संग एक कुंअर जल पान धार । ड्योढी न रुकि सामंत भार ॥
गुर राम चंद कवि ढिग्ग आई । परधान कन्ह काइथ अताई ॥
पुनि कंन्ह काक गोइंद राइ । परिपुर्न क्रोध जे लगत लाइ ॥ छं० ॥ ४० ॥
पुंडीर धीर पावस्स संग । दाहिंम दूव जम जोर जंग ॥
जैतसी सलष लष्यनह सिंघ । छिति छत्र अंस जे इष्षि रंघ ॥
वलिभद्र सिंघ कूरंभ राइ । अनि नांम सूर किमक्क गिनाइ ॥
प्रथिराज इंद दिकपाल सूर । अँग अंग वहि सब जोति नूर ॥ छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ गवष जाल महलनि महल । फिरे चाह मन सर्वे ॥
सोज सोभ अंतन लही । दिष्षत भग्गत[1] गर्वे ॥ छं० ॥ ४२ ॥
महलनि सालनि महलमंडि । दासी सालनि गांन ॥
मंडप मंडित बेद धुनि । सुभटन सोभ समांन ॥ छं० ॥ ४३ ॥
जहां तहां आनंद उमग । अनँग उछाह अनंत ॥
वंस छत्तीस छत्तीन छत्र । भाट बिरद भनंत ॥ छं० ॥ ४४ ॥

(१) को० कृ०—भग्गे ।

छंद मोतीदाम ॥ गहने नग जोतिन चीरन लाल । पटंमर पूर करप्पिय भाल ॥
मनि मानिक मोतिन चीरनि चार । भगीरथ अंत हिमग्गिरि धार ॥
रितं रित भूषन भांति अनेक । धरे धन पंतिय आनि धनेक ॥
रंग रंग वारनि वारनि वार । धरे नवला नव भूषन भार ॥
तिते सब संचि सवारिस ओप । झलंमल झालन ढालन नोप ॥
सकुंकम कूषन वंदिन पोनि । सुहाग सुमंगल अष्ट न होत ॥ छं०॥४५॥

दूहा ॥ अष्ट मंगलिक अष्ट सिध । नवनिध रत्न अपार ॥
पाटंबर अंमर वसन । दिवस न सुझ्झहि तार ॥ छं० ॥ ४६ ॥

जनवासे में भोजन का नेवता देकर सलषराज का लौटना ॥

फिरिय चार करि फिरिय सब । भोजन कारन बोलि ॥
भाव भगति आदर अमित । देव पूजि सम तोलि ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रुक्मिनी का शृंगार आरंभ होना, शृंगार वर्णन ॥

जनवासें पधराइ बर । करी सिंगार अरंभ ॥
जुरि जुव्वन सुर सुंदरी । जे रस जानत डिंभ ॥ छं० ॥ ४८ ॥

छंद चोटक ॥ बिन बस्तर अंग सुरंग रसी । सुहचै जनु साष मदंन कसी ।
लव लोनइ लोइ उवट्टनकों । कि बद्यौ मनु कांम सुपट्टन कों ॥
द्रिग फुल्लिय कांम विरांमन कें । उघरे मकरंद उदै दिन कें ॥
जिन कंचुकि अंग सुरंग धरी । सुकली जनु चंपक हेम भरी ॥ छं० ॥ ४९ ॥
सुभई लट चंचल नीर भरी । तिनकी उपमा कवि दिव्य धरी ॥
तिन सों लगि कें जल बूंद ढरै । सुकटै मनु तारक राह करै ॥
जु कछू उपमा उपजी दुसरी । मनों माटय स्यांम सुमुत्ति धरी ॥
अति चंचल ह्वै विकुटै मुषतें । मनों राह ससी सिसुता बषतें ॥ छं० ॥ ५० ॥
सुमनों ससि स्वात असुक्त इयं । तिनकी उपमा बरनी नं हियं ॥
कबहूं गहि सुक्क सिषंड बरें । मनों नंषत केसन सिंदु सरैं ॥
जु सितं सित नीर लिलाट धसैं । सुमनों भिदि सोमहि गंग लसैं ॥
जल में भिजि भूंह कला दुसरी । सु लरै मनु बाल अलीन परी ॥
बुधि चित्त उपंम कितीक कहौ । जिन पाट अभै व्रत बेद लहौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ मयनि मन्त अन्हान करि । सुभ दंपति दिन सोधि ॥
चाहुआंन इंछिनि बरन । मयन रीति अवरोधि ॥ छं० ॥ ५२ ॥
करि मंजन अंगोछि तन । धूप बासि बहु अंग ॥
मनो देव जनु नेव फुल्लि । छेम मोज जनु गंग ॥ छं० ॥ ५३ ॥
तन चंपक कुंदन मनों । कै केसर रंग जुत्ति ॥
पीत बास छबि छीन लिय । और छीन सब जुत्ति ॥ छं० ॥ ५४ ॥
अंग अंग आनंद उमगि । उफनत नेंनन मांझ ॥
सषी सोभ सब बसि भई । मनों कि फूली सांझ ॥ छं० ॥ ५५ ॥
निरषत नागिनि बसि भई । किंनर जष्य कितेक ॥
सब सोभा ससि सांनि कौं । सांची इंछिनि एक ॥ छं० ॥ ५६ ॥
प्राग माघ अन्हान किय । गज गंजे घन घाइ ॥
विस्वनाथ सेए सदा । प्रथीराज तो पाइ ॥ छं० ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥ कमल भाल जनु बाल । मकर कर मंडि इंछनिय ॥
निरषि नेंन प्रतिबिंब । करषि निवछार निछिनिंय ॥
प्रमुदित अगनि अनंग । कोक कूकन उच्चारत ॥
एक रमन रस रंग । बात बातन मुच्चारत ॥
गंध अर वस्त्र गहनै करनि । दास भास मंडीर रिय ।
तिन मध्य पधारी पिष्षियै । जनु विधिना अप्पन घरिय ॥ छं० ॥ ५८ ॥
स्रवननि लगत कटाच्छ । जनु पवन दीपक अंदोलित ॥
मुसकनि विकसत फूल । मधुर बरसति मुष बोलति ॥
हठलनि अलसनि लसति । सुरति सागर उद्धारति ॥
रति रंभा गिरजादि । पिष्षि तों तन मन वारति ॥
तिह अंग अंग छबि उक्ति बहु । छंद बंध चंदह कहिय ॥
जीरंन जुग्ग मधि अजर हुत्र । कलू एक कीरति रहिय ॥ छं० ॥ ५९ ॥
कमल विमल लज्जा सुगंध । बाल छिस माल लाल उर ॥
भूषन सोभ सुभंत । मनों सिंगार सुचिर धर ॥
चलप अलप रति मंद । चंद बारुनि कुल मानि ॥

सो इंछिनि पामार। राज छत्रिय अति सारंनि ॥
तन च्यारि बरष बरनि सुंदरिय। सुर बिसाल गावत गरज ॥
चहुआंन सुअन सोमेस कहि। बिधि सगपन साई अरज ॥ छं० ॥ ६० ॥

छंद मोतीदाम ॥ सजे षट दून अभूषन बाल। मनों रमि माल बिसालनि लाल ॥
धस्यौ तन वस्त्र सुकोर कुआर। मंडी जनु लिंभ मनंमथ रारि॥ छं० ॥ ६१॥

छंद कंठाभूषन॥ इक गावही रस सरस रस भरि बिमल सुंदर राजही ॥
मनों ब्रंद उडगन र ति राका सोम पंति बिराजही ॥
इक चित रंगन कांम अंगन अजस लज्ज कि सुंदरी ॥
मनों दीप दीपक माल बालय राज राजन उच्चरी ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सुभ सरल बांनिय मधुर ठांनिय चित्त भंजय जोगयं ॥
द्रिग निरषि निरषि कटाच्छ लग्गहि जुक्त रंभन भोगयं ॥
अलि रूप नयनं मनहु बयनं चलिहि तिष्ष कटाष्ययं ॥
कुहंत निकरहि बार पारह करत नक्कि ननतच्छयं ॥ छं० ॥ ६३ ॥

ब्राह्मण लोग बिवाह की विधि करने लगे।

कवित्त ॥ बिधि बिवाह दुज करिय। करिय तन अंग बाम जन ॥
निरषि नयन मुष कंति। भयौ रोमंच स्वच्छ तन ॥
फुल्लिग नयन मुष वयन। भयौ आरुढ कांम मन ॥
चित बसीकरन समह। भयौ आनंद स्वच्छ तन ॥
अभिलाष मिलन चित चिल्लन मन। कालविंद कविनह करै।
प्रथमह समागम मिलन कों। बहुन अडंबर बिस्तरै ॥ छं० ॥ ६४ ॥

दूहा ॥ सोंधा सुगंध घन डंमरी। सुमन सुदिष्ट पसार ॥
धूप अडंमर धुंधरिय। भाल मल जल समढार ॥ छं० ६५ ॥

पृथ्वीराज के रहने को जो बाग़ सजा गया था उसकी शोभा का वर्णन।

छंद पद्धरी॥ बरबग्ग मग्ग चिहुं दिसा दिष्षि। जहां तहांति सुमन अति वैठि पिष्षि॥
कच मग्ग भूमि चिहुकोद गस्सि। नारिंग सुमन दारिम बिगस्सि ॥

प्रतिबिंब तास दिषिय सरूप। उसंम एम जंपै अनूप॥
नव बधू अंग नवजल प्रवेस। मुसकंत दंत दिष्षिय सुदेस॥ छं०॥६६॥
प्रतिबिंब चंप देषे फुलीन। दीपक्क माल मनमथ्थ दीन॥
उप्पंम और उर एक लगि। संजीव भरि जनु जोति अग्गि॥
चल चलै लता कछु मंद बाय। नव बधू केलि भयकंक पाय॥
उपमा उर कवि कथीय तांम। जुब्बन तुरंग अगि जोगि कांम॥ छं०॥६७॥
पाटीन दिष्षि चकचौंधि होइ। ससिपरष उट्ठि घन घटा दोइ॥
सुभ माग सरल सूधी सुवानि। ससि कस्न चली घन केकि जांनि॥
फुल्ले सुगंध के वरनि फूल। देषंत वग्ग पावस्स भूल॥
घन वर अनंद अग्गें निसच्व। जनु रंक इच्छ पासै सुदव्व॥ छं०॥६८॥
नल नलिनी नीरु चर वचनि उद्धि। धरधार गंग जनु उठिहबुद्धि॥
विट विटनि वेलि झुलि वेल फूलि। जनु काम ग्रह बाग तर छच झूलि॥
कदलीन पच चलि पवन जोर। जनु करत पषा न्टप पिथ्थ और।
कलरव करंत दुजनेक थांन। संगीत कांम चट सार गांन॥
निरतंत केक केकीन संग। पावसह जानि गिर रमत रंग॥ छं०॥६९॥

दूहा॥ नंदन वन वैकुंठ जनु। इंद्र लोग सुर बाग॥
वृंदावन भूलोग जनु। सोभा सुभग सुभाग॥ छं०॥ ७०॥

गाहा॥ तिहि थांनं रजि राजं। उत्तरियं बीर सा साजं॥
सब संबल वियानं। जांनं बुड्डायइं बीजयौ चंदं॥ छं०॥ ७१॥

कवित्त॥ को इंद्रो गुर राज। भांन सत्तम अधिकारी॥
भांन नवम प्रथिराज। राहु दुस्सम अधिकारी॥
वर वज्जी नीसांन। बंदि लीनं न्टप राजं॥
प्रीय पिया चित बंधि। सोइ इंछिनि वर पाजं॥
पियांह तात अरु बाल सह। उचरैं मुष इंछिनि सुनहि॥
धनि धनि गवरि पूजा लब्बौ। सुवर सुवर सुंदरि समहि॥ छं०॥ ७२॥
ब्रह्म वेद सहइय। अग्गि होमय वर राजय॥
स्वाहा अगनि विवाह। रत्ति कामह गुन गाजय॥
दुहिति नाम दुहुरिष्षि। दुहुनि परइं दुहुं गोती॥

राजं गुरु उच्चरै। सलष चतुरान सकोती ॥
अनेक भाव दिष्यहि सुदिव। दिव दिवान दुंदुभि बजइ ॥
प्रथिराज राज राजन सुबर। निरषित लषै रतिपति लजइ ॥ छं० ॥ ७३ ॥

कुंदन ओपति अंग। मंग जनु चंद किरनि थिर ॥
बैनी सुभग भुजंग। फूल मनि सीस मीस थिर ॥
पट्टिय घुंटित मैंन। तिमिर कज्जल छवि छीनिय ॥
भुअजुग गोस धनुष्य। वदन राका रुचि भीनिय ॥
सुक नास नैंन फूले कमल। कंबु कंठ कोकिल कलक ॥
दुल्लह सुचित्त फंदन मनहु। फंद मंडि रष्षिय अलक ॥ छं० ॥ ७४ ॥

ब्राह्मणों का मंडप स्थापन करना।

दूहा ॥ फुनि पंडित मंडप मँडिय। बेद पाठ आधार ॥
षट करमी सरमी अनिघ। गुर संगह गुर भार ॥ छं० ॥ ७५ ॥

दूलह का मंडप में आना।

तिन दूलह मंडप बुलिय। हम सम घमस निसांन ॥
जनु बद्दल ब्रज क्रिस पर। सुरपति बहुरि रिसांन ॥ छं० ॥ ७६ ॥

देषि सोभ प्रथिराज चिय। बारत राई नोंन ॥
हर्ष हास मुष चष उदित। जनु कमल विकस रवि भोंन ॥ छं० ॥ ७७ ॥

कवित्त ॥ देसन देस नरेस। भेस अमरेस अमर भति ॥
सील सत्त गुनवंत। दांन षग कहन कोंन मति ॥
जरकस पसम जराउ। गंध रस सरस अमीवर ॥
तेजवंत उद्दार। बडम विवाहर ग्रंथ भर ॥
मंडप्प जांन दुअ दिसि मिलत। हास नर्क जात न गन्यौ ॥
दीपति नगनि निसि दीह भय। वर दाई दिव वर मन्यौ ॥ छं० ॥ ७८ ॥

स्त्रियों का दूलह की शोभा देख मग्न होना।

दूहा ॥ साल अटा जालिन गवष। रष्यत नव रनिवास ॥
छष छाह छवि करत जिम। भमर मत्त रस वास ॥ छं० ॥ ७९ ॥

नग मोती गहने अगन । गिरत न सुद्धि सम्हार ॥
कांम लहरि छबि छोल उठि । दुनि दरियाव बेपार ॥ छं० ॥ ८० ॥

स्त्रियों का मंगल गीत और गाली गाना ।

मंगल गावत झुंमकनि । कोकिल कंठी नारि ॥
सुघर पुरुष जोवन छके । सुनहि सुहाई गारि ॥ छं० ॥ ८१ ॥

दूलह दुलहिन का पट्टे पर बैठकर गंठ जोड़ा होकर गणेश पूजन करना ।

पटां बैठि पट गंठि गुह । पूजे प्रथम गनेस ।
दुव कुल वारि विचार कर । व्याही बांम नरेस ॥ छं० ॥ ८२ ॥

नवग्रह, कुलदेवता, अग्नि, ब्राह्मण, की पूजा कर शाषोच्चार होना ।

ग्रहन पूजि ग्रहदेव पुजि । पूजि अगनि दुज देव ॥
साषोचार उचार धुनि । प्रसन भए नृप देव ॥ छं० ॥ ८३ ॥
चंद सूर नर्षां साषि दिय । बन्ह बारुन बुध वाइ ॥
प्रोहित गुर उपदेस करि । बांम अंग तब आइ ॥ छं० ॥ ८४ ॥

ब्राह्मणों का आशीर्वाद के मंत्र पढ़ना ।

पढि संकलप विकलप तजि । भजि भगवति भगवंत ॥
नम सु पाइ परसाद करि । चिर जिन्नौ इंछिनि कंत ॥ छं० ॥ ८५ ॥

सलषराज का कन्या दान देकर विनय करना ।

अब्बूपति पट गंठि चिय । विनय जोरि कर कीन ॥
इह कन्या नृप सोम सुत । दासपंन पन दीन ॥ छं० ॥ ८६ ॥

कान्ह चौहान का कहना कि जैसे शिव के साथ गौरी है वैसे ही यह होगी ।

कही कन्ह तब जैत सम । मंडन संभरि ग्रेह ॥
ज्यों गवरी सिव लच्छि प्रभु । त्यों नन बाढौ नेह ॥ छं० ॥ ८७ ॥

लग्न साधकर तब राजा का ज्योनार करना।

लगन साधि आराधि नृप। पुनि ज्यौनारि जिवाइ॥
छ रस अंन अंनन लयौ। क्यों कवि कहै बनाइ॥ छं०॥ ८८॥

ज्योनार के पकवानों का वर्णन।

अगनि पक्क घृत पक्क कर। दूध पक्क बेपार॥
तेल पक्क लषियै नहीं। जहं तहं लूट अमार॥ छं०॥ ८९॥

छंद भुजंगी॥ रचस्सं रचस्सं अनेकंन भंती। घनं जोति मिष्टांन पानं प्रभंती॥
उडंदं पुडंदं गुडंदंति मासं। किते व्रंन प्रंनं किते बीर भासं॥
किते स्वाद स्वादं प्रथी देव वंछै। तहां केवलं व्रंनि आवर्त्त गंछै॥
मरे एक वारं षितं षंड मद्धी। दिषे स्वाद राजं चषै देव बंधी॥छं०॥९०॥
घनं अंमरं डंमरं दिसि प्रमानं। उठै जच तीनो सुगंधं निधानं॥
अँगं अंग अंगं सलष्यन नारी। महा लालचै कांम वसु भो निनारी॥
चथं लेव राजं सुदंपत्ति बंधे। मनों मिस्स अगें गुरं चित्त संधे॥
बधें अंचलं संचलं इन प्रकारं। मनों बंधियै मीन मनमथ्थ धारं॥छं०॥९१॥
लियौ चथ्थ राजं चिया चथ्थ सोहै। मनों पैसि सत पच कुंमोद सोहै॥
जनं अंग अंबं बरं मानधारी। मनों काम अग्गं जु विद्या पसारी॥
क्रितं क्रित्त राजै नरं नाह नारी। मनों जीवनं कांम लज्जी उघारी॥छं०॥९२॥
परं पुब्ब कथ्थं कथी कब्बि चंदं। रची लजि मनों रत्ति फिरि दृष्न चंदं॥
दियै तिलक दद्धि अछि अक्कन सारे। मनों उग्गि अंकूर सुष सेन भारे॥
दियै कंकनं चथ्थ चहुआंन राजै। मनों रत्ति बंध्यौ दई काप क्राजै॥
रचे एक येहं घरी अद्ध भारे। तहां वेद मंषं दुजं जा उचारे॥ छं०॥ ९३॥

कवित्त॥ सुभत बीर तन तांम। बाल राजै दिसि वामं॥
मनहु मुत्ति पषिचांन। रत्ति बंधी कर कामं॥
अति सोभा सोभई। चंद ओपम तहं वर वर॥
मनों मकर मकरेस। आय चंपाइ अप्प घर॥
सज्जे सुरत्ति मनमथ्थ बर। कै इंद्रानी इंद्र परि॥
संप्रति लच्छ लच्छिय सुवर। संपति तन सज्जेउ वर॥ छं०॥ ९४॥

दूहा ॥ बर सोभे बर राजपति । जिय दच्छिन चत बांम ॥
मनों व्याह पूरन करै । सुबिम बीरतम चांम ॥ छं० ॥ ९५ ॥

पृथ्वीराज के विवाह का वर्णन कविचन्द अपनी सामर्थ्य से बाहर बतलाता है ।

परनि बीर प्रथिराज बर । बहुत कवै रस जोइ ॥
कवि चर बरनत नां बनै । बर भूषन तिन गोइ ॥ छं० ॥ ९६ ॥

नव दुलहिन की शोभा का वर्णन ।

छंद पद्धरी ॥ लज्यानि मांन गुन ग्रब कटाछ । अल पचनि जलप सुलपह सुलाछ ॥
भोंर भर अभय भय सील नील । सरसात पिंम रस पिंम चील ॥
गुंजंत ग्रांम सोभिल कुआरि । तिहि चरत चरनि मनमथ्थ रारि ॥
तन सात नितंबनि नई प्रमान । बर चरैं बरनि पिय लटि प्रमान ॥
सित अरुन सुहत कटाछ बाल । स्रृंगार मध्य भूषन रसाल ॥
रस हास मध्य स्रृंगार चोइ । संकर सुभाग उप्पनै लोइ ॥ छं० ॥ ९७ ॥

साटक ॥ कामं जा गढोइ लज्ज गढने भय चत्त भय कोटकं ॥
घू घट्टं पंद वेढि वानति बले ऊधी सुकागरू रसे ॥
जाति जात न ज्ञासि जोगिन बरं भंजे मनं विभ्रमं ॥
नां दीसंत गता गतेस सैनं द्रग्गं चलं निश्चलं ॥ छं० ॥ ९८ ॥

छंदत्रोटक ॥ बरनं गुरु अच्छिर अंति पयौ । इति तोटक छंदय नाग गयौ ॥
स्त्रिय नाग सुबद्दिय बाचनयं । षग पत्ति विपत्ति सुगाचनयं ॥
बरनं बरनं बरनीन कथं । सु चथ्था जनु मेष प्रथंम रथं ॥
द्रग अंचल चंचल बाल ढंके । तिहि कांम बिरामन बांन थके ॥ छं० ९९ ॥
नव बाल सुनूपुर सद्द सुरं । न्रप आगम जाइ बजाइ घरं ॥
गज ज्यौं मनमत्त जंजीर जरी । क्रम निठ्ठुर निठ्ठय पाइ भरी ॥
दस पंच सषी न्रप पास गई । ति मनों सुष श्रीफल हाथ दई ॥
कहनातिमुषी रस भोर लता । अम भौ अभिलाष ह ग्रब्ब जिता छं० ॥ १०० ॥
न्रप पुठ्ठ मुषं अवलोक करै । सु मनो धन रंक विलोकि गुरै ॥

नि कंची न बनै कविचंद कथा । सु लजै रसना अरु बीर जथा ॥
सुकहूक कहीं दिठि कंम क्रमं । सुमनो मनता बरनी न भ्रमं ॥ छं० १०१ ॥

प्रथम समागम का वर्णन ।

दूहा ॥ चौन सैंन रति मैंन सय । प्रथम समागम बाल ॥
नेह देह दुअ एक हुअ । परे प्रेम रस जाल ॥ छं० ॥ १०२ ॥

गाथा ॥ दूत्तं सुष्य गनिज्जै । लज्जीजै जोइयौ कव्वी ॥
ज्यों वारिज विपनं मभ्भं । सुभभ्भै ना यहि गरुआयं ॥ छं० ॥ १०३ ॥
मूलं बर मकरंदं । विजी पुर षाई सुंदरी वीयं ॥
मालवि दंपति वासं । वाहुआनं बीरयौ पत्ती ॥ छं० ॥ १०४ ॥
अंधम भ्रमैनि चित्तं । आवै नठ्ठेय ग्यांनयं चितयं ॥
अंधमि भ्रमि सब रूपं । अवलोकं इकनी करियं ॥ छं० ॥ १०५ ॥
इक्क जगी विस बाले । काम भयंक षयौ ढ्रिगयं ॥
जानिज्जै गम सैसं । नैनायं जोग ब सनायं ॥ छं० ॥ १०६ ॥
उभ्भर उरोजनि सद्दे । बुद्धी बालाय दिठ्ठयौ नैनं ॥
कुच मुक्क अंकुर उट्टे । मनों प्रीतम विश्राव चीयौ चढयं ॥ छं० ॥ १०७ ॥

चौपाई ॥ नैननि प्रथम प्रमानिय पुव्व । सेवालय रोमावलि हव्व ॥
आदानय जोवननि कुंआर । अब आंव्यौ सैसव चलि भार ॥ छं० ॥ १०८ ॥
इहिविधि मत्त गत्त भय रजनी । बाल लता बल्लभ गहि सजनी ॥
यों डग मग सुंदरि विरुझाई । ज्यों बेलिय अवलंब लघाई ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दुलहिन को लेकर दूलह का जनवांसे में आना और हाथी घोड़े धन आदि लुटाना ॥

दूहा ॥ पांवारी प्रथिराज बर । पुनि जनवांसे जाइ ॥
एक सहस हय हथ्थि बर । दीने तुरत लुटाइ ॥ छं० ॥ ११० ॥
होत प्रात जगिय सकल । भंति अनेक निभोग ॥
जुकक्कु देव देवंस मनि । सो लभ्भौ नहिं लोग ॥ छं० ॥ १११ ॥

छंद भुजंगी ॥ सुइंदं सुइंदं सुइंदनि राजं । सुनौ देषियै कोटि कोटेक साजं ॥
लषं लष्य भाई नटं नह रागं । मनो देषियै यंद अग्गग्गेन आगं ॥

झिले तार झंका नचे किनारे। मनों देविये भांत ससि सब्ब तारे ॥
सुभंगं सुतालं मृदंगं बजावे। चवा कूच खुगं सुगंधर्व गावे॥ ११२ ॥
घनं पक्ष पांनं समानंत नेहं। करै प्रथिराजं चप अप्प देहं ॥
करै राज राजं सबै व्याह काजं। मनों दिष्षिये राज सूजग्य साजं ॥
परे अग्ग राजं छिती छत्र जोरी। मनों उन्नयौ मेघ आषाढ कोरी ॥
फिरै दास भारी बुलै राग बैनं। मनो नभ्यसी मास कै बीज गैनं॥ ११३॥
बजै ग्राम नारी कलीसों सुरागं। मनो बोलयं मोर आषाढ गाजं ॥
बजै घुघ्घ नारियं रंग भारी। मनों दादुरं जोति मनमथ्थ सारी ॥
रंगे कासमीरं सबै वस्त्रधारी। किधों बद्दलं रंग कै मघन गारी ॥
किधों इंद्रबद्धू चढ़ी नीर धारा। किधों राज बासंत भूपाळवारा ॥छं० ११४॥

दूहा ॥ गति चिजाम भय प्रातबर। हुव मनुवार प्रमांन ॥
बर दिष्षौ चहुआंन न्रप। रत्ति काम उनमान ॥ छं० ॥ ११५ ॥

गाथा ॥ रत्ति काम दुअ दाहं। कै दु:षंकरी कत्तरी बाले ॥
सो इंछनि पांवारी। लभ्भी नृप मुत्तिका रूपं ॥ छं० ॥ ११६ ॥

छंद चनुफाल ॥ इति मुकति सकति सकोर। जिन लभि न पारस चोर ॥
जिन कांम बांन झकोर। गुन मुदित मुदित सथोर ॥
चित मित्त मित्तह जोर। मनों उदय निषचन चोर ॥
सुष जुगति भुगति उपाय। का करिहि मुक्ति अभाइ ॥ छं०॥ ११७॥
सुष करन दिन प्रति जीह। दिन सुफल धरियनि ग्रीह ॥
प्रति राज राजन जोर। पावार सलषति ओर ॥
मनुहार मंडित थोर। न्रप चलन ग्रेह सजोर ॥
दै गैति रथ बर बाजि। न्रप दए दांन बिराजि ॥ छं० ॥ ११८ ॥

दहेज में सलषराज का बहुत कुछ देकर भी संकुचित होना।

कवित्त ॥ सहस एक रथ साजि। दासि बिय तिपति इक्क मधि ॥
इक्क इक्क करि सथ्थ। किरनि पंचौ प्रति प्रति बधि ॥
सौ षाथी इह भांति। माल मुत्तिय उतंग बर ॥
लछि पटंबर अंग। दए राजिंद राज गुर ॥

इतनौ देत सकुच्यौ न्रपति। है दिनना चरनन गह्यिय ॥
प्रथीराज राजन सुवर। सलष फेरि चल्यौ समिय ॥ छं० ॥ ११९ ॥

पांच दिन तक सब जातियों को भोजन कराया गया।

दूहा ॥ पंच दिवस च्यारौं बरन। भुजत अंन अपार ॥
छरस अंन छह रितिन सुष। अब्बू वे आहार ॥ छं० ॥ १२० ॥
पलकि[1] चार अचार करि। समद करी सब सथ्थ ॥
दै दध्यी जर कस बसन। को कवि बरनै कथ्थ ॥ छं० ॥ १२१ ॥

बारात की विदाई का वर्णन।

छंद पद्धरि ॥ पहिराइ राइ पावार सथ्थ। नह बुद्धि बरन वर विविध कथ्थ ॥
इक करी रुत्त हय सोम राइ। औराक जाति जे पवन पाइ ॥
सिर पाव पंच जरकस पसंम। सूत रुपोत रेसम नरंम ॥
सोइ विदा कीन दूलह बनाइ। जमदार सौंपि संभरि गनाइ ॥ छं० ॥१२२॥
कलधूत कलस दस गढ़ित हथ्थ। इक उंच कुंडि जल न्हांन सथ्थ ॥
दस थार कनक प्रतिबिंब सूर। बाटका बीस बिंभ अभुत नूर ॥
ता सक्क पंच दुव मनह थार। वाजैाठ एक हिम जटित लाल ॥
पालकनि हेम रेसम निवारि। अनि ठांम नंन्ह को लहै सार ॥ छं० ॥१२३॥
कठ लोंनि वीस सोवन मटाइ। पल्लांन ऊच दावन चढ़ाइ ॥
मन बीस पंच इह सोज अब्ब। जिन कोय करौ छिचीस ग्रब्ब ॥
दुअ हथिय साजि भाभी जिंजीर। रुपेन साज सज्जे वजीर ॥
हँडवाइ बीस मन साजु सुद्ध। उज्जल रज रजक्क जनु उफनि दूध ॥छं०॥१२४॥
दस सहस हेम दासीन संग। तिन देषि रंग रँभ होत भंग ॥
सामंत सत्त इक रस्स अग्ग। पहराइ तिनह न्रप नमिय पग्ग ॥
इक तुरी जात औराक थांन। अग्गीय अंग पग पवन मांन ॥
इक इक्क बहु अ माजाति इक्क। मुरकी इक्क इन पुहचि किक्क ॥ छं० ॥१२५॥
सिर पाव उंच सरकस[2] अनूप। तिन दिष्षि होत हैरांन भूप ॥

---

(१) क० को०--पालिका।
(२) क० को०--जरकस।

बंभन बनंक कायथ्थ संग। पसवांन लोग जे रषिक अंग ॥
लघु दिग्घ और असवार पाल। करि सुमन सब्ब अब्बू भुआल ॥
पंच सै सोम रनिवास नांम। रेसंम सुत गनि पंच ठाम ॥ छं० ॥ १२६ ॥
सब चर्ष सहित समदे नरेस। सजि चले सुभट सब अप्प देस ॥
इंछनिय मद्धि पिय बैठ ढाल। गज गाह घुरैं दुहुं अंग भाल ॥ छं० ॥ १२७ ॥

बारात का बिदा होकर अजमेर की ओर चलना।

दूहा ॥ चल्यौ व्याहि संभरि धनी। मंगन भए निहाल ॥
पुह चावन घन संग भए। न्रपगुन चवें रसाल ॥ छं० ॥ १२८ ॥
पंच कोस परथिथ्थ कहु। बिदा मंगि अबु ईस ॥
ओर देन तुम सोभ कह। वांम तुम्हें हम सीस ॥ छं० ॥ १२९ ॥
नवमि मंडि बहुरे घरह। वे सज्जे अप देस ॥
न्रपति व्याह दुअ रस रह्यौ। हिम गिरि जांनि महेस ॥ छं० ॥ १३० ॥
आरिज आरिज सलष तें। इंछनि इछ्छा पूरि ॥
भुअ मंडल मंडित दिनह। सिर दधि अच्छित जूर ॥ छं० ॥ १३१ ॥
चलन राज प्रथिराज बर। बरनि पत्त बर राज ॥
मद्धि अमोलक सुंदरी। डोला सहित साज ॥ छं० ॥ १३२ ॥
यैां आयो न्रप ग्रेह बर। सुनि अवाज पिय कांन ॥
मानों बीर दुहाइयां। कांमहि नंषन बांन ॥ छं० ॥ १३३ ॥

बारात के अजमेर पहुंचने पर मंगलाचार होना।

कबित्त ॥ सोमेसर संभरिय। राज आवत प्रथिराजह ॥
है गै रंभ सुसाज। इंद चढ्यौ लष साजह ॥
कोटि कोटि मनु इंद। इंद दिष्यो इंदासन ॥
एक एक दंपतिय। बरह बंधे विधि साजन ॥
दुज मानं बेद मंगल विधह। मुत्ति अछिम बंदहि सुबर ॥
नृप मैार मुष्ष मुत्तिय लगहि। सो ओपम कविराज भर ॥ छं० ॥ १३४ ॥
अरिल्ल ॥ लगन मुक्ति नृपति सुपतिं मुष बरं। मांनों भानं* उनग्रेह सुतारक ऊबरं ॥
मिलि सो फिरि चलहि ससिंगन भांन कों। मांनहु लषहै जांनि आनै जानकों ॥
छं० ॥ १३५ ॥

हा ॥ बंदि लियौ बरनी सुबर। लिया छेल लजि गांन ॥
मांनौं बैसंध सुंदरी। चलन समप्पन दांन ॥ छं० ॥ १३६ ॥

की के पूछने पर शुक का इच्छिनी के नखशिख का वर्णन करना।

बहुरि सुकी सुक सों कहै। अंग अंग दुति देह ॥
इछनि अंक बषांनि कैं। मोहि सुनावहु एह ॥ छं० ॥ १३७ ॥

द् चनूफाल ॥ घन धवल गावहि बाल। मनमथ्य तिथ्थ विसाल ॥
बहु फुल्लि केवर फूलि। बग बैठि पावस भूलि ॥
घन धवल है मनमथ्य। आनंद अंगनि सथ्य ॥
जनु रंक पाये द्रव्य। नल नलन नीर चहव्व ॥ छं० ॥ १३८ ॥
धर धार गंग कि उट्ठि। फिर नभ्भ परसि अपुट्ठि ॥
बट बिटप बेलिय झुल्लि। ग्रिह बाग तरु छच झुल्लि ॥
नृप परनि पुचि पवार। जनु जुबन सैसुब रारि ॥
इह रूप राजित देव। इन्द्र इन्द्रनी अहमेव ॥ छं० ॥ १३९ ॥
सोइ सलष राज कुंआरि। नृप लसी ब्रह्म सवांरि ॥
लछि लच्छि पूर सहज्ज। व्रत नाथ व्रत करि कज्ज ॥
कविराज ओप प्रकास। आवै न कोटि विचास ॥
सिष नष्य व्रंन सुरत्त। किम करय मंद सुमत्त ॥ छं० ॥ १४० ॥
जगि रंग जोबन जोर। ससि बिलसि बयक्रम थोर ॥
बर उदै गुन बर गौर। बै स्यांम राजन और ॥
बनि केस देस सुबेस। कवि कहत उप्पम तेस ॥
चढि मेर नागिन नंद। रुसि गहत संमुष फंद ॥ छं० ॥ १४१ ॥
उपम्म कवि कहि बाम। जुब्बन तरंग अगि कांम ॥
पाटीय चकचुंधि होइ। सिसि परह उठि घट दोइ ॥
लिलाट आउ प्रकार। मनमथ्य अंगन थार ॥
मिन मद्धि मुत्ति तिलक्क। कवि कहत ओपम थक्क ॥ छं० ॥ १४२ ॥
हरि कठिन गंगय मांन। ससि भेद अध चलि जांन ॥
कविराज ओपम दीय। दहि पुचि ससि मिलि बीय ॥

तिन मध्य लग मद व्यंद । कवि जंपि उप्पम छंद ॥
ससि उड्डन मझि कलंक । बहु भग्ग श्रंकह श्रंक ॥ छं० ॥ १४३ ॥
लच्छिन्न हरि तन ताह । ससि थांन बैठो राह ॥
अति हलत चपलह भौंह । कवि कहत उप्पम सौंह ॥
ससि धरत ञ्रूप सु ऐंन । निहि चलित चक्रित नैंन ॥
मन धरत उप्पम आंन । अभि संधि अलि सुत जांन ॥ छं० ॥ १४४ ॥
बर बाल नैंन झकोर । ग्रह जियन बानह जोर ॥
जिम भए भौंरह चोंर । भै भरै धाम झकोर ॥
इक कही ओपम चाइ । षंजन कि उड़ि फल षाइ ॥
जनु बाग कुहिय ऐंन । तिम होत चक्रित नैंन ॥ छं० ॥ १४५ ॥
सित असित नैंन उचार । मनों राह तारक चार ॥
तिन मझि सोभै रत्त । विधि धरिय मंगल गत्त ॥
रसवास नासिक नीय । तिल पुहप चंपक दीय ॥
मनों लज्जि मंजरि मध्य । कल प्रगटि दीपक सध्य ॥ छं० ॥ १४६ ॥
नव हलत मुत्तिय नास । तसु किंच ओपम भास ॥
रस ग्रहन अंमृत चाइ । तप करै ऊरध पाइ ॥
मुष कीर सोभित जोस । जनु चुनत कनक्रत ओस ॥
जगिनीय पुर मन रज्जि । कवि कही उप्पम सज्जि ॥ छं० ॥ १४७ ॥
अध अधर रत्त सुरंग । ससि बीय रंग तरंग ॥
उत्तंग रंग सुभाल । जनु फुलि कमुद्दिनि नाल ॥
कै पक्क बिंब संभाल । सुक डसिय ग्रसिय न आल ॥
तिन मध्य दंतन कंन जनु बज्र राजत पंत ॥ छं० ॥ १४८ ॥
फुनि कही ओपम साज । सुत स्वाति सीपय राज ॥
सतिं इक्क ओपन अक्क । बत्तीस लच्छन लक्क ॥
इक अलक सुम्मत सुष्य । कवि कहत ओपम सुष्य ॥
हँसि मुक्कि मधुरय अंक । बर भजत विभय कलंक ॥ छं० ॥ १४९ ॥
जनु जनम धारा रेष । कै मिल नगी चलि सेष ॥
कल ग्रीव रेष चिवक्खि । कवि राज ओपम भक्खि ॥

ससि मिलत पुब्बय बैर । गुरदेव सेव सुसैर ॥
गर पोति जोति विचारि । ससि चरन फंदय डारि ॥ छं० ॥ १५० ॥
ससि समर दंद प्रमांन । जिति राहु बैठो थांन ॥
कै संष श्रीधर जांनि । कर अंगुलिं इक थांन ॥
कालंक दिठवन जोर । कवि इक्क उप्पम दौरि ॥
जनु कमल कोर प्रकार । सिसु भंग बैठे वार ॥ छं० ॥ १५१ ॥
रस सरस कुच कवि चंद । उर उकिर आनँद कंद ॥
ससि बदन मदन सु जोर । चित रहै चाहि चकोर ॥
कलि कालि कंज अनूप । उर उदित रवनिय[1] रूप ॥
कथि कलभ कुंभ प्रमांन । कवि स्यांम रंग सुदांन ॥ छं० ॥ १५२ ॥
गुन गँठिय मुत्तिय माल । कुच परस कंत विसाल ॥
विय सिंभ सीस कि चंग । चढि चलिय गंग सुरंग ॥
नव रोम राजिय राजि । कवी कवी ओपम साजि ॥
मनों नाभि कूप प्रमांन । भरि भूरि[2] अमृत थांन ॥ छं० ॥ १५३ ॥
अंमृत्त आवहि जाहि । पप्पील रंगहि चाहि ॥
उर उदित सुभगय बाल । अनंग रस सचि बालु ॥
जनु लक्कि कीडें नाल । हिम फाव लगि रसाल ॥
सुभ निरषि चिवली नेह । कवि चंद ओपम एह ॥ छं० ॥ १५४ ॥
बयसिसु मिलनह बाल । सिढ़ि मंडि कांम विसाल ॥
रिपु उभै सुम्मिय आंनि । कवि लंघि लंक प्रमांन ॥
नितंब उत्तंग रज्जि । मनमथ्थ चक्र विसज्जि ॥
पैरंग पिंडिय ढार । सित सीत उप्प तुसार ॥ छं० ॥ १५५ ॥
नव रंभ गति विपरीत । कवि थंभ देवल जीत ॥
गज सुंड सुरूप सरूप । मनों कुंद कुंदन भूप ॥
किधों करभ कोर प्रकार । तिन मद्धि उतरत ढार ॥
मनों मीन चिषत देह । कवि कहत पिंडुर एह ॥ छं० ॥ १५६ ॥

(१) को०—रवनिय ।
(२) को०—भूमि ।

घन घुंमि घुघघर छेम । कवि कहो ओपम यक ॥
मनो कमल कोरंभ काज । प्रति प्रीत भमर बिराज ॥
कच कहों अंग सुरंग । रति भूलि देषि अनंग ॥
छवि लच्छि पूर रुचज्ज । चित हुत्त मानो रज्ज ॥ छं० ॥ १५७ ॥
सो सलष राज कुंआर । रूप लष्षी ब्रह्म सवार ॥
इन लच्छि इछनिय रूप । कुल बधू लच्छिन भूप ॥
रति रूप रमनिय रज्जि । छबि सरल दुति तन सज्जि ॥
रसि रसित रंगह राज । निह रमन हुअ प्रथिराज ॥ छं० ॥ १५८ ॥

कवित्त ॥ नयन सुकज्जल रेष । नष्षि तिष्षन छबि कारिय ॥
श्रवनन सहज कटाछ । चित्त कर्षन नर नारिय ॥
भुज मृनाल कर कमल । उरज अंबुज कलिय कल ॥
जंघ रंभ कटि सिंघ । गमन दुति हंस करी छल ॥
देव अरु जष्षि नागिनि नरिय । गरहि गर्ब दिष्षत नयन ॥
इंछिनी रूपि लज्जा सहज । कितक सक्ति कव्विय वयन ॥ छं० ॥ १५९ ॥
दर्पन दल नष जोति । सुरग महदी रुचि रूरिय ।
एडी इंगुर रंग । उपम ओपियै सु संचिय ॥
सो तिन सकल सुहाग । भाग जावक तल बंधिय ॥
विकसित अँग अँग अंग । चारु मुसकनि बै संधिय ॥
दिषंत नैंन दंपति कजहि । हर्ष सोभ वर्षंत अकल ॥
रति कांम कांम गहि गछनिय । और उप्पम लुहिय सकल ॥ छं० ॥ १६० ॥
जेहरि नूपुर नद्द । सद्द घघर कोतूहल ॥
बिछिय निसद्द निसाल । सद्द झिंगुर कल कूहल ॥
अगुठनि जटित अनोट । षोट कुंदन नग मंडित ॥
निरषत द्रप्पन नैनं । बदन बीरी रद षंडित ॥
हाव अरु भाव संभ्रम विभ्रम । बड पुन्य करि प्रभु पिथ्थ लहि ॥
इंछनिय इक्क अक्कर अवनि । सुनिय सोभ ससि कव्वि कहि ॥ छं० ॥ १६१ ॥
जरकस घघर घमंड । जांनु रवि किरन कदली ग्रह ॥
कसुँभ लरे नोसार । रंग छबि छंडि छंड घर ॥

पीत कंच की संचि । षंचि कस अंग उपट्टिय ॥
कंकस कर थर थरत । गंध चरदीय उपट्टिय ॥
आलोल नैंन गति वचन वहु । सषिन सोभ मंडिय तनह ॥
फुल्लिय सांझ कवि चंद कहि । मनहु बीज थर की घनह ॥छं०॥ १६२ ॥

शोभा कहते कहते रात बीत गई ।

दूहा ॥ सुनत कथा अछि वत्तरी । गइ रत्तरी विहाइ ॥
दुज्ज कही दुजि संभरिय । जिहि सुष श्रवन सुहाइ ॥ छं० ॥ १६३ ॥
आरिजु आरि जस लषहीं । सो इंछिनि इछ्छा पूर ॥
भुव मंडल मंडित दिनह । सिर दधि अछ्छित जूर ॥ छं० ॥ १६४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इंछिनि ब्याह वर्णनं नाम चतुर्दश प्रस्ताव संपूरणम् ॥ १४ ॥

अथ मुगलजुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पन्द्रहवां समय ।)

इंछनी को ब्याह कर लाने पर मेवात के राजा मुद्गल का पूर्व वैर निकालने का विचार ।

दूहा ॥ प्रथीराज राजन सुवर । परनि लच्छि उनमांन ॥
दिसि मुग्गल संभर धनी । वैर षटक्यौ प्रान ॥ छं० ॥ १ ॥
वैर षटक्यौ पुब्बवर । मति मंची मेवान ॥
बर उहिन संभर धनी । अरत बीर भय गान ॥ छं० ॥ २ ॥

मेवात राज का विचारना कि रास्ते में पृथ्वीराज को मारना चाहिए ।

कवित्त ॥ वैर षटक्यौ पुब्ब । करिय सोमेस सुराजं ॥
सो आने सोमेस । तान मुग्गल भजि काजं ॥
सारंग वैर सारंग । देषि कह्यौ तिन वेरं ॥
सो संभरि प्रथिराज । मत्त वढ्यौ धर वैरं ॥
षम मत्त मत्तं गुरजन कहै । सर्व वेर लज्जी अवन ॥
प्रथिराज राज काटन मतै । निचिंत पंथ कीजै गवन ॥ छं० ॥ ३ ॥

यमुना की एक घाटी में मुगलराज का छिप रहना ।

चित्त मुग्गल चिंतयौ । राज प्रथिराज वैर बर ॥
मद्धि थांन मेवात । रह्यौ चंपे सुढिल्लि धर ॥
ढिल्ली वै बर धाम । सुषल अंगन मेवातं ॥
तत्त मत्त उप्पन्नौ । वीर वीरा रस गातं ॥
मुगल नरिंद मेवात पति । कूच राज चिंत्यौ सुबर ॥
बहर सुथक जमुना विकट । सुघट घट औघट नयर[1] ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए० को०—औघटन पर ।

पृथ्वीराज के डेरे में कैमास को छोड़ सब का सो जाना, कैमास का उल्लू की बोली सुनना ।

माधुर्य ॥ जग जोति जिंगिनि निसि अभिंगिनि रत्त रत्तति अंबरं ॥
सामंत सूर सुथांन निद्रा अमित क्रोध सुउत्तरं ॥
अति चतुर चिंतय समुद मित्तय कित्त चिद्रु चक्क विस्तरी ॥
कैमास जग्य रु सकल निद्रा बीर सर सुअंमगी ॥ छं० ॥ ५ ॥
आरत्त रत्त रुइंग नील रु थान पुब्बय उत्तयौ ॥
संनाह स्वामि नरिंद नामय कलह कित्तिय विस्तर्यौ ॥
बोलि घूघूअ साद दीविय मझमनी[1] सुर उपफस्या ॥
इह सुनि रु सूरं धरि कहरं बीर बीरह उच्चर्यौ ॥ छं० ॥ ६ ॥

कैमास का बाईं ओर देवी को देखना ।

वित्त ॥ बर निड्डुर राठौर । राज सूतौ ढिग बीरं ॥
और सब्ब सामंत । पास कैमास अधीरं ॥
नद वेहड बंकट सु । समन आषेटक आइय ॥
क्रोध सजल उच्चरिय । सद्द सोदें तन चाइय ॥
मत्ते सुसमर पत्ते सुग्रह । पग बंधे निद्रा ग्रच्चिय ॥
जग्गै न कोइ जाग्रत सुम्रित । बाम दिसा देवी लसिय ॥ छं० ॥ ७ ॥

देवी की बोली सुनकर कैमास का गुरुराम पुरोहित से सगुन पूछना, पुरोहित का कहना कि इसका सगुन चंद से पूछिए ।

बोलत देवी सुनिय । जगि निड्डुर नृप पासं ॥
राज गुरू जग्गाय । बोलि मंची कैमासं ॥
राज गुरं दुज राम । बलिय बंभन अधिकारिय ॥
सार सिंध रन द्रोन । तेन भारथ भर भारिय ॥
कवि चंद बोलि चाचिग मच्छर । सगुन संधि सद्दिय लगन ॥
आवै न मंच मंचोय घन । सुबर चिंत अध्धिय अगन ॥ छं० ॥ ८ ॥

---

(१) को०—सनी ।

साटक ॥ जे मत्ताने मत्त कारन बरं पुड्ढं त्रपं प्रानयं ।
जस्या मस्त समस्त भस्त कुंभकं सुयसं समुद्रं बरं ॥
निर्घोषं यमयाय भारन घरे विद्याधरा उद्धरं ।
सायं सो प्रथिराज वैरन बरं सोमेस निय अग्गियं ॥ छं० ॥ ६ ॥

चंद का पृथ्वीराज के वंश की पूर्व कथा वर्णन कर मेवा-तियों के साथ वैर का कारण कहना ।

छंद पद्धरी ॥ न । बस भइग आना नरिंद । दस पुच भय गति न वैर कंद ॥
चहुआंन नाम चहुआंन वैर । बोसल कुलान उप्पने नैर ॥
आहुत्त बीर ढुंढा सुरष्षि । तिहि बंस भइग चहुआंन सष्षि ॥
जैसिंघ देव तिहि बंस वीर । घरि करिय अइर जज्जर सरीर ॥ छं० ॥ १० ॥
दीन्हौ जु बीर संभरि सुथंन । पट्टन प्रवास अरि चढ्यौ कंत ॥
कंडाय सब्ब मेवात भुम्म । आहुत्त जुड्ड मंडयौ हम्म ॥
तिहि वंस भयौ सोमेस सार । जंभए वीर परवत विधार ॥
उत्तस्यौ जाइ जंगल सुदेस । गहिया नरिंद भंजे प्रवेस ॥ छं० ॥ ११ ॥
विष्यान मःग जिम छुन उचीर । साधयौ जुड्ड किय सुद्धि वीर ॥
तिन पाट प्रथि प्रथिराज नष्षि । आबू नरिंद पावार थष्षि ॥
जस जाति भूमि अरु भर सदंद । मुग्गल मयंक तारका चंद ॥
ढंढोरि बैर घल करिय पंग । पारस परिय सादर अनंग ॥ छं० ॥ १२ ॥
तिहि वेर जग्गि मुग्गल नरिंद । जंपयौ बीर कबिचंद छंद ॥
इह कहिरु राज निद्रा असीय । चिंता न राज चिंता बसीय ॥
चहुआन बीर बर सोमनंद । तिन तेज ब्रम्ह मानों रविंद ।
निसि सेन सैन अवनी अनंग । फुनि कील केलिनि सिष्प रंग ॥ छं० ॥ १३ ॥
भै प्रात भान झलमल्यौ अंग । फुल्लेति कमल उडि चले भ्रंग ॥
कुल कैल चोर मन भए पंग । झंभार सब्द गो करि उतंग ॥
द्रुम द्रुमति रोर पंषिय करंत । करैं क्रम सुभ्भ रव सुद्ध संत ॥
चक्कीय चक्क करि मिलिय रंग । भगि रोर चोर भय मन अनंग ॥ छं० ॥ १४ ॥
उघरे पूज देवल कपाट । जग्गेति बिप्र बर क्रम घाट ॥

उच्चरहि वेद वा नीति चंग । न्रंमल प्रवाह जनु जलह गंग ॥
बहु भंति क्रंम आचरन लोइ । बंदैति पुज्ज गुरु देव दोइ ॥
आभंन पुहप अन्नांन दान । मंडै सुजन नर थांन थांन ॥ छं० ॥ १५ ॥

सबेरे उठकर पृथ्वीराज का अपने सामंतों के साथ शिकार को निकलना ।

तब जग्गि नंद सोमह कुमार । अनभंग अंग अरि कुल पयार ॥
कैमास बोलि सामंत सूर । चढि चल्यौ राज आषेट दूर ॥

मुगलराज का आकर रास्ता रोकना ।

इसुनै छोन बज्जी अवाज० । मुग्गल सु आइ करि सकल साज ॥
रुक्कोति पंथ गिरि कंठ ठैर । मग्गयौ आंनि तिन पुब्ब वैर ॥ छं० ॥ १६ ॥
संभरिय वैन सामंत नाथ । ज्यों सुन्यौ वैर लगि सीस माथ ॥ छं० ॥ १७ ॥

पृथ्वीराज का शत्रुओं के बीच में घुसना, मानो बड़वानल समुद्र पीने के लिये धसा हो ।

॥ बढि अवाज गिरि गाज । राज भय अंग न आनिय ॥
ज्यों कमल पांनि जोगीनि । कुंभ चौकट जिम पानिय ॥
ब्रढ मत्त गूंगं सवाद । मांन कल नंन सूर भय.॥
यों सोमेस कुमार । दिषि चिच वट अंग नय ॥
करि खिलह अंग चै तेज करि । कढिह बाग कढ्ढी असिय ॥
जाने कि पियन सागर जलह । बडवानल मध्ये धसिय ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन ।

भो बडवानल राज । समुद सोषन मैवानी ॥
भो बडवानल राज । जांनि रवि अंजुल पानी ॥
भो बडवानल राज । मोह विन रागन सौ सौ ॥
भो बडवानल राज । ज्यों दोस अदोस स दो सौ ॥
प्रथिराजन जांनिय मान नप । मचन रंभ बंछे बलह ॥
ज्यों बंछे अवधि सुंदरि पिया । त्यों कलबंत बंछे कलह ॥ छं० ॥ १९ ॥

दूहा ॥ कलह कूर बढ्ढिय निजरि । भयौ समद अरि सेंन ॥
बा वारौ मंगै न्रपनि । हथ्थ जोरि मति दैन ॥ छं० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ किमक बत्त मेवात । राज मेवात पत्त कह ॥
ता उप्पर चहुआंन । तेग बंधै सु राज इह ॥
मुक्कि बलिय कूरंभ । मुक्कि सारंग चालुक्कह ॥
इक्क इक्क सामंत । रष्षि मारन न हथ्थ कहि ॥
नृप षोइ जुद्ध सुरतांन सों । कैपंग राग संभ्भौ लरै ॥
गामी गवार मैवात पति । राज राज संम्हौ भिरै ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ नृप कुट्टन बर हुकम मुष । दिठ्ठ्यो धावंत ॥
बर मुग्गल सामंत रन । दल दारुन गाहंत ॥ छं० ॥ २२ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला ॥ बोल बुल्ले घनं । स्वामि सद्दे रनं । लग्गियं सग्गरं । धार धारं धरं ॥
रोस लग्गै जदं । सिंघ मद्दे मदं । बीर बीरं बरं । ओघ नचै धरं ॥ छं० ॥ २३ ॥
सार सज्जे इसे । बज्ज बज्जे जिसे । सार अग्गें भिलें । हक हुंडं पिलें ॥
रंग रत्ते रनं । कंक प्रसै मनं । नाग बज्जी जुरं । मेघ गज्जै धुरं ॥ छं० ॥ २४ ॥
टूक तुट्टै षगं । बिज्जु बालं लगं । तीर कुट्टै इसे । रत्ति तारा जिसे ॥
सार उड्डै रनं । भइ ज्यों जिंगनं । तार मत्तो भरं । कव्वि जोई सरं ॥ छं० ॥ २५ ॥
पिथ पंथं बरं । लोह लग्गे लरं । कन्ह एकं अपं । अग्गि पीए षपं ॥
काल जित्ते ननं । मेटि आवा गमं । काल जित्ते निते । ग्रभ्भ योंनी मिते ॥ छं० ॥ २६ ॥
सूर सूरं धरं । ठांम लड्डी नरं । मित्त इत्ती रनं । रिंच कुट्टै तनं ॥
हथ्थ कित्ती कियं । बंघ कुट्टै जियं । क्रंमनासा नदी । अंम कीने सदी ॥ छं० ॥ २७ ॥
धार धारं धरं । बीर भज्जै भरं । कालकूटं करं । जम्म जुद्धं बरं ॥
बीर मत्ते परं । हक कक्के धरं । लोह लग्गे नरं । तार बज्जे षरं ॥
कंक जित्ती जिनं । क्रंम भज्जे भिनं । बाज सिंधू गिरे । बीर बीरं फिरे ॥ छं० ॥ २८ ॥
जोति सद्दी गनं । सिद्ध पुज्जै बनं । मुष्य मुक्षै ननं । धार मुक्की घनं ॥ छं० ॥ ३० ॥

कवित्त ॥ सोलंकी सारंग । जंग जंमिन मुष लग्गिय ॥
हय गय भर उप्पार । आनि मुग्गल मुष पग्गिय ॥

भर षनि जुट्टिय मुष्ष। नेग लंबी उभ्भारिय॥
घम घरियारे घत्ति। लन लोद्दा करि भारिय॥
स्रम रंग सार टिभिझय पष्षर। गद्दन इक्क मच्यौ सद्दन॥
मुग्गल नरिंद चहुआन भर। अंग अंग सध्यौ मयन॥ छं०॥ ३१॥

दूहा॥ कायर मुष ऐसे भए। ज्यौं चित्र पुत्तल पांन॥
सूरन मुष ऐसे भए। ज्यौं नव सुंदरि जांन॥ छं०॥ ३२॥
असित असित दोइ बीर है। ता पट कैंवर अंन॥
ज्यों जानै तन संग्रह्यौ। बर भारथ्थें कंत॥ छं०॥ ३३॥

मुगलराज को चारो ओर से घेर कर बांध लेना।

छंद पद्धरी॥ उतरिय घाट पलेट सुबीर। पत्तेति सूर सामंत नीर॥
घेर्यौ सुराइ मुग्गलय राज। गिरवर कि सिंघ गज्यौ अगाज॥
जानें कि विंट तारक मयंक। संकन निसंक गहि षग्ग बंक॥
इक्कंत सूर सामंत सत्त। बल घत्यौ राज मेवात पत्त॥ छं०॥ ३४॥
उप्परिन हथ्थ हथियार छत्त। बिन नेह पिया मनुहार पत्त॥
अंगन अनंग तन में छिपाइ। रहै ब्रंन मनह तन ज्यौं लुपाइ॥
बंध्यौ सुराज मुग्गल नरिंद। छंडाय सत्त भारथ्थ इंद॥ छं०॥ ३५॥

मुगल को कैद करके इंछिनी को साथ लिये पृथ्वीराज आनंद से घर आए।

कवित्त॥ बंधि राज मुग्गल नरिंद। जिति अप्पथान संपत्तिय॥
देस देस नगेस। कित्ति मुष्ष मुष्षन कत्थिय॥
रिन अड्डौ अरि अंग। षग्ग कोइ बंतिय पावै॥
जस बंध्यौ सिर मौर। व्याह दल दुज्जन आवै॥
आषेट करिव अरि नियह्यौ। इंछिनि रत्तौ हंस सर॥
कलि केलि रमै कामिनि कमल। मनों मनमत्तौ भिंग भर॥ छं०॥ ३६॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथीराज रासके मुगलकथा वर्णनं नाम पंचदशमो प्रस्ताव संपर्णम॥ १५॥

अथ पुंडीर दाहिमी विवाह नांम प्रस्ताव लिष्यते।

(सोलहवां समय।)

राजा सलष की बेटी के व्याह के वर्ष दिन बड़े सुख के साथ बीते।

दूहा॥ बरस व्याह बीते सकल। सुंदरि सलष कुंआरि॥
विधि बिधि भोग संजोग रजि। नवल मुगध सुचियार॥ छं०॥ १॥

गाथा॥ रन जय पत नरिंदं। पुत्तय सुतं च निरमला कित्ती॥
नव नव मुगध सुरत्तं। चैाजुत्तं रज्ज सुष्याइ॥ छं०॥ २॥

चंद पुंडीर की कन्या का रूप गुण सुनकर पृथ्वीराज का उस पर प्रेम होना।

दूहा॥ चंद पुंडीर नरेस घर। सुंदरि अति सुकुमार॥
प्रेम प्रगट राजन भयैा। गुन पुच्छन विस्तार॥ छं०॥ ३॥

चंद पुंडीर की कन्या का रूप वर्णन।

छंद चनूफाल॥ गुन बाल वेस कमांन। सैसव सुपंचन बांन॥
कुटि नष्य क्रमन[1] आंन। सेसव्व वै संधि जांनि॥
लज रत्त जाहि नरंत। सैसव सुतुच्छ बलमंत॥
नष निमल उप्पम नास। अरधंत तो मनि भास॥ छं०॥ ४॥
नव नास उप्पम पुहि। मनु काम मंजरि फुहि॥
सोरंग ओपम पाइ। भ्रम बांन बाल बनाइ॥
बर जंघ ओपम अभ्भ। मनु बाल कदली गभ्भ॥
सोइ बदलि कदली चंद। छबि करन रत्त सुदंद॥ छं०॥ ५॥
जलकुप बिंट बिराज। उर मदन सदन सुपाज॥
सैसव सुवै कचि छंडि। जोबन्न गुन कनि मंडि॥ छं०॥ ६॥

---

(१) क्र०—क्रंमन

पुंडीर का कन्या देना स्वीकार करना।

दूहा ॥ सुनि श्रोमान नरिंद तुम। कह्यिय बत्त पुंडीर।
रूप अनूपम राज वरि। दिय राजन चित धीर ॥ छं० ॥ ७ ॥

शुभ लग्न विचार कर चंद पुंडीर का कन्या विवाह देना।

लगन सुदिन चथलेव करि। चंद सत्त गजराज ॥
एक अग्ग रुक्तरि सुचय। नग मोती बहु साज ॥ छं० ॥ ८ ॥
परनि राज पुंडीरनी। सुम चंदानि कुंआरि ॥
दइ बिधिना करि निमई। ब्रह्मा बिरंचि सँवारि ॥ छं० ॥ ९ ॥

पुंडीर दाहिमी की कन्या के साथ पृथ्वीराज के आनन्द विलास का वर्णन।

नव जोबन जोरी नवल। छंदानिल नवल्ल ॥
बात बिनोद बसंतरै। सुनी दाहिमी गल्ल ॥ छं० ॥ १० ॥
कवित्त ॥ नवल पुहप फल नवल। नवल नारी नव जोवन ॥
द्रव्य देषि छोड़ निजरि। कवन ऐसा सिध साधन ॥
चित्त चलै साधक्क। विषम जोवन वै मांची ॥
कामी कलह विच्छन्न। बहुत पचि चारो कांची ॥
पुंडीर कुंअरि सों रस रमन। दाहिम्मी चित्तह लगी ॥
सुभ लगन जोग दाहिम्म बर। दोहिम्मी राजन मगी ॥ छं० ॥ ११ ॥

विवाह का वर्णन।

द्रुअन ढार उद्दार। भार फन पति भर भग्गे ॥
गढ बयांन सुभ थांन। सोभ कैलासह लग्गे ॥
दोइ सहस दासर दिवांन। पुत्र तीनह परिमानं ॥
दोइ पुत्री सुविसाल। रूप रति अंग सुजानं ॥
दाहिम सुराज कायम्म कहि। पल केवा सेवा करन ॥
प्रचंड वाह महि उप्पियहि। लष्ष एक लष्षन भिरन ॥ छं० ॥ १२ ॥
काल थान कैमास। पलक चामंड पग षट्टिय ॥
सूर नूर सम सथ्थ। सक्क दूजा सुर सिट्टिय।

मेवाती मुग्गल सुमग्ग । पुंचि इक्कह परनाइय ॥
बिय पुत्री सिर ताज । सुनै प्रथिराजह व्याहिय ॥
दोजांन मान चहुआन दल । प्रथम कलस संभर धनिय ॥
उच्छाह बहुत मंगल करहि । गीत गांन अलि सुर बनिय ॥ छं० ॥ १३ ॥

विवाह का फेरा फिरना ।

करि तोरंन प्रकार । सार भारह पन संकिय ॥
चौविदी चौसाल । पिठ्ठ पच्छिम दिसि पंकिय ॥
कमला सन मुष कमल । बेद धुनि दुज किय सज्जिय ॥
चैत सुकल पष तीज । लगन गोधूलक रज्जिय ॥
लता सुजोग जमघंट तजि । लगन सुद्ध मम सुद्ध यति ॥
मंगलाचार फेरा सुफिरि । अचल राज अजमेर पति ॥ छं० १४ ॥

दहेज में आठ सखी, तिरसठ दासी, बहुत से घोड़े हाथी देना ।

सषी अठ्ठ सिर ताज । अंग श्रृंगारि सुरँग बर ।
सठ्ठि तीन दासी सुचंग । बरष सत अठ्ठ सरभ्भर ॥
एक सत्त सुभ तुरँग । दोइ पषें औराकिय ॥
दोहथ्थी दस ढाल । रहे छचरिनि मद छाकिय ॥
सुष पाल रजत सोभा सुधनि । सत पुत्तलि सेवा करै ॥
डाइ चोदिह दाषिम दुचन । भुज भुजंग कीरति करै ॥ छं० ॥ १५ ॥
सात गज्ज सु विसाल । चित्त साहन सुभ्र चंगल ॥
जर जरकस सिर पाव । सहि माला नग न्रिमल ॥
सहस एक सो भ्रंन । हुक्म दीनी चौहानं ॥
जिन मांगी तिन दियौ । करी कीरति सुप्रमानं ॥
उच्छाह कियौ दाहिंम प्रथ । गढ उप्पर थंभह कह्यौ ॥
प्रति पुच्छि चंद दाहिंम बर । परचि वित्त जल घर भह्यौ छं० ॥ १६ ।

दूहा ॥ अति आतुर राजन मिलन । दाहिंमी मुष दिठ्ठ ॥
ज्यों बद्दल में कुमुदिनी । चंद चमत्यौ निठ्ठ ॥ छं० ॥ १७ ॥

पृथ्वीराज और पुंडीरनी की जोड़ी की शोभा का वर्णन ।

॥ वर समुद्र चहुआंन । रतन सों रतन उपज्जै ॥
दाहिम्मी उर अभ्भ । किति आभूषन रज्जै ॥
इह सुबंध बंधनह । जुगति बंधन वर राजिय ॥
इह अमोल मोलंन । वहमोल ग्रह फिरि साजिय ॥
इह परषयौ कविन कित्ती चसम । वह चसम परष्यन परषयौ ॥
इह सोभ राज राजंन मचि । वह घर कंचन थरकयौ ॥ छं० ॥ १८ ॥

श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पुंडीरनी दाहिमी विवाह वर्णनं नाम षष्ठदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १६ ॥

अथ भूमि सुपन प्रस्ताव लिष्यते ॥

(सत्रहवां समय ।)

पृथ्वीराज का कुंअरपन में शिकार खेलना ।

कवित्त ॥ कुंअरप्पन प्रथिराज । राज आषेटक षिल्लषि ॥
जोव्वने मझ्झ रवन । कल पच्छिम दिसि मिल्लषि ॥
भाषि बीर बाराह । चक्क बज्जी चावहिसि ॥
मुक्कि थान पंचांन । मिले सूर संग्रह धसि ॥
लोहांन बीर आजान भुअ । लोहा लंगर धाइया ॥
इह थांन चुक्कि अपथांन मुकि । पंचां नन रव छाइया ॥ छं० ॥ १ ॥

हाथी घोड़े आदि का इतना कोलाहल होना कि शब्द सुनाई नहीं पड़ता ।

दूहा ॥ पंच सबद गुंजन सुगज । हे हींसन सद्द स्वानं ॥
गिर गुंजन परसद्द बहु । सद्द न सुनियै कांन ॥ छं० ॥ २ ॥

सिंह का क्रोधित होना ।

कवित्त ॥ सद्दपति संभरिय । कांन मंडे रव संभलि ॥
ज्यों पल बयन प्रसंन । विप्र षोजै निगंम मिलि ॥
गुन अवगुन कुल बधू । सती पति हना मानि मन ॥
नाग अंग चंपयौ । किमार अग्गै फुल्यौ मन ॥
पिष्षयौ एम पंचाननह । बाय बास सुमंन फुल्लिय ॥
द्रिग षोलि द्रिष्ट सगया सकल । तेज अंग कायर चलिय ॥ छं० ॥ ३ ॥

दूहा ॥ कांनन सद्दन संभरन । कूह कलह आषेट ।
षष सूतो बर जग्गयौ । सिसु दंपति भटि षेट ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ द्रिष्ट राम अंमरिय । सरित संभरिय संपत्ते ।